বৃষভা লতলফল

अनुक्रमणिका

1.	पुस्तक परिचय	7
2.	लेखक परिचय	9
3.	ज्योतिषशास्त्र की उपयोगिता एवं महत्व	10
4.	लग्न प्रशंसा	16
5.	लग्न महत्व	17
6.	जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं	18
7.	लग्न किसे कहते हैं लग्न क्या है और लग्न का महत्व	20
8.	वृषलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण	24
9.	वृषलग्न एक परिचय	27
10.	वृषलग्न की प्रमुख विशेषता एक नजर में	29
11.	वृषलग्न के स्वामी शुक्र का वैदिक स्वरूप	31
12.	शुक्र का खगोलीय स्वरूप	33
13.	वृषलग्न के स्वामी शुक्र का पौराणिक स्वरूप	35
14.	वृषलग्न की चारित्रिक विशेषताएं	43
15.	नक्षत्र चरण, नक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी	54
16.	नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी	60
17.	नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबुल	61
18.	वृषलग्न पर अंशात्मक फलादेश	62
19.	वृषलग्न में आयुष्य योग	83
20.	वृषलग्न और रोग	86
21.	वृषलग्न में धनयोग	89
22.	वृषलग्न में विवाहयोग	94
23.	वृषलग्न में संतानयोग	97
24.	वृषलग्न में राजयोग	100
25.	वृषलग्न में आशीर्वादात्मक कुण्डली का मंगल दर्शन	103
26.	भगवान श्रीकृष्ण एवं भगवान श्रीराम की कुण्डलियों का तुलनात्मक अध्ययन	105

27. वृषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति 107
28. वृषलग्न में सूर्य की स्थिति 121
29. वृषलग्न में मंगल की स्थिति 137
30. वृषलग्न में बुध की स्थिति 154
31. वृषलग्न में गुरु की स्थिति 169
32. वृषलग्न में शुक्र की स्थिति 185
33. वृषलग्न में शनि की स्थिति 198
34. वृषलग्न में राहु की स्थिति 212
35. वृषलग्न में केतु की स्थित 223
36. शुक्रवार की कथा 235
37. शुक्रस्तवराज 237
38. शुक्र मंत्र 239
39. दृष्टांत कुण्डलियां 241

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में 'लग्न' का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को बीज कहा गया है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है कई बाद विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित जी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते है, कतराते है। अतः इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पस्तुकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

सबसे पहले हम **'कर्कलग्न'**, **'मेषलग्न'** की पुस्तक प्रकाशित की। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हुआ। अब यह **'वृषलग्न'** की पुस्तक पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। वृषलग्न में भगवान श्रीकृष्ण, महात्मा कबीर, विश्व कोकिला लता मंगेशकर, बर्नाड शॉ, मायावती, शत्रुघ्न जैसे व्यक्तित्व हुए हैं। वृषलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। वृषलग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार से फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी ज़न्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। आम आदमी तक फलित ज्योतिष का ज्ञान पहुंचाने का यह हमारा विन्रम प्रयास है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है, आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर हम गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर प्रोग्राम 'सृष्टिम' के नाम से भी बना

रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह, अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आएगी। पुस्तक के अन्त में दी गई 'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों' से इस पुस्तक का व्यवहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों में लिखें। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाईप किया हुआ जवाबी लिफाफा पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

डॉ. भोजराज द्विवेदी

लेखक परिचय

ज्योतिषशास्त्र के उन्नयन में लेखक का योगदान—अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसियेशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को "**कर्क लग्न**" के अन्तर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अन्तर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कसीवीं शताब्दी, तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि 'युग पुरुष' के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

पू. रमेश भाई ओझा, सुधांशु जी महाराज, गुरु मैया, हरे राम-हरे कृष्ण जैसे अनेक धर्म गुरुओं का प्रवचन सुनने को मिलता है और उनके प्रवचनों में भी हम देखते हैं कि लाखों की भीड़ उन्हें सुनने के लिए उमड़ी पड़ी है। **यह तथ्य निश्चय ही महत्वपूर्ण और चौंकाने वाला है कि विश्वजनमत का रूझान ज्योतिष और आध्यात्म की ओर जबरदस्त झुकाव लिये हुए है।**

अभी हाल ही में केन्द्रीय सरकार ने यू.जी.सी. द्वारा ज्योतिष शास्त्र, पौरोहित्य (पूजा-पाठ) एवं योग को मान्यता प्रदान कर एक नये विवाद को जन्म दे दिया है। भारतीय अस्मिता के उपासक एवं नास्तिक विचारों वाले विरोधी तत्त्व, दोनों ही नींद में सोये हुए थे। इस घोषणा से चौंक कर जाग उठे। अंग्रेजी समाचार-पत्र एवं विदेशी मीडिया ने ज्योतिष को अन्धशास्त्र का दर्जा देकर उसकी निन्दा करने में ज्यादा रुचि दिखाई। क्या विश्वविद्यालय में ज्योतिष जैसे विषयों को पढ़ाया जाना चाहिए? इस पर चर्चा का नया विषय मीडिया को मिला। अनेक तथाकथित वैज्ञानिकों ने इसकी निन्दा की। फलतः जनमत का सर्वेक्षण हुआ। ''टाइम्स ऑफ इन्डिया'' के दिल्ली संस्करण में विश्व जनमत का सर्वेक्षण प्रकाशित हुआ। उसके हिसाब से 79 प्रतिशत बुद्धिजीवी लोगों ने ज्योतिष पढ़ने में रुचि दिखलाई।

पवित्र विज्ञान

यह मुक्ति प्रदान करने वाला पवित्र विज्ञान है। *ब्रिटिश एसोसिएशन ऑफ एस्ट्रोलॉजी* के अध्यक्ष ऐंड्रू फॉस को इस बात से कोई ऐतराज नहीं कि ज्योतिषशास्त्र भारतीय विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के तौर पर रखा जाना चाहिए। फॉस ने बताया, ''हमने ब्रिटेन में इसे चार विश्वविद्यालयों में रखा है और अमेरिका में भी ज्योतिषशास्त्र पढ़ाने वाले तीन संस्थानों में से दो की साख है।'' 25 साल से वैदिक विज्ञान पढ़ा रहे फॉस यह भी मानते हैं कि ''ज्योतिषशास्त्र और भौतिकशास्त्र में कुछ साझा बातें हैं।''

फटाफट भारत एवं विदेशों में अनेक ऐसी संस्थाएं खुल गईं जो ज्योतिष, वास्तु, हस्तरेखा एवं अध्यात्म के कोर्स, प्रशिक्षण केन्द्र चलाने लगे। अध्यात्म की रुचि का यह आलम है कि तिरूपति बालाजी के मंदिर में आजकल युवक-युवतियों की इतनी भीड़ बढ़ गई है कि पांच सौ, हजार रुपयों के टिकट वाले धर्म प्रेमी दर्शनार्थियों को कई घंटे लाईन में खड़ा रहना पड़ता है। इतना ही क्यों मुम्बई के सिद्धि विनायक में मंगलवार की सुबह मंगल दर्शन के लिए सोमवार की रात से ही लम्बी लाइन लग जाती है। शिरडी वाले सांईबाबा मंदिर, वैष्णों देवी मंदिर में श्रद्धालुओं की बढ़ती हुई भीड़, गिरजाघरों में पोप के संदेश और मुस्लिम मदरसों में धर्मान्ध शिक्षा के प्रति बढ़ती रुचि यह बताती है कि लोगों की आस्था इस सहस्त्राब्दी में धर्म के प्रति बहुत ज्यादा बढ़ गई है।

कुछ समय पहले पूजापाठ, यज्ञ-जप-अनुष्ठान, व्रत-उपवास, ज्योतिष एवं वास्तु को जो लोग पाखण्ड एवं अन्ध श्रद्धा से जोड़ते थे उनकी मानसिकता बदल गई है। आधुनिकता एवं भौतिक सुख-सुविधाओं का नशा काफूर होने लगा है तथा लोगों को ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकारने में अब कोई गुरेज नहीं रहा। आधुनिकता की दौड़ में समय की मारामारी एवं तनाव भरी जिन्दगी इतनी विषैली हो गई है कि लोगों में मन की शांति, सुकुन और आध्यात्मिक अनुभूति की तलाश के लिए धार्मिक-साहित्य, ज्योतिष, वास्तु एवं यंत्र-मंत्र की पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने की ललक बढ़ गई है।

ज्योतिष लोगों को क्या देता है?

❒ काल-गणना (शुभ-अशुभ समय का अनुमान) ❒ सही समय में सही कार्य करने का निर्देश ❒ भूत-भविष्य एवं वर्तमान सम्बन्धित घटनाओं का अनुमान ❒ ईश्वर की सकारात्मक शक्ति के प्रति आस्था भाव ❒ धर्म, दान, परोपकारिता एवं सत्साहित्य, स्त्रोत, मंत्र, जाप, उपवास के प्रति आकर्षण व रूझान पैदा करना। ❒ ज्योतिष व्यक्तिगत समस्या निदान के साथ-साथ समष्टिगत राष्ट्रव्यापी समस्याओं का समाधान भी ढूंढता है। ❒ अशुभ ग्रह प्रभाव से बचाव के उपाय ❒ विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के उपाय। ❒ मनुष्य के मानसिक तनाव को दूर कर, आशावादी विचारों का सम्प्रेषण करना। ❒ मनुष्य को आध्यात्मिक शक्ति एवं उत्तम ज्ञान की ओर उन्मुख करना। ❒ ज्योतिष मनुष्य की सहनशक्ति एवं आत्मविश्वास को बढ़ाता है तथा विपरीत परिस्थितियों में भी हार न मानने का साहस जगाता है।

पारिवारिक घुटन, दैनिक व्यस्तता, आर्थिक चिन्ता, ऑफिस के तनाव से व्यक्ति का तन और मन अस्थिर रहने लगा है। ऐसे में उन्हें एक ही मार्ग दिखाई दिया, ईश्वर की शरण, गुरुजनों की सीख जहां शांति, सुकून और मन का आनन्द सब कुछ है। इस तरह धीरे-धीरे नई पीढ़ी अध्यात्म की ओर झुकने लगी। शिक्षित-अशिक्षित,

गरीब-अमीर, बड़े-बड़े उद्योगपति, फिल्म अभिनेता से लेकर राजनेताओं ने स्वयं को ईश्वरीय शक्ति के प्रति समर्पित कर दिया।

आज हर इन्सान समस्याओं से घिरा हुआ है। रिश्तों की उलझन, बेरोजगारी, ऑफिस के टेन्शन, व्यापार में आर्थिक मन्दी, परिवार में समस्या, बच्चों के कैरियर, मित्रों से धोखा, चारों ओर लूटमार, असुरक्षा, राष्ट्र के कर्णधारों के नैतिक चरित्र में गिरावट की चिन्ता, अखबार के हेड लाईन, नये-नये तरीकों के अपराध व अपराधियों से बढ़ती हुई असुरक्षा की भावना ऐसी अनेक व्यक्तिगत तथा समष्टीगत सार्वजनिक परेशानियां हैं जिनसे आज का मानव घिरा हुआ है। इन परेशानियों को बांटे तो किससे? किसी के पास इन परेशानियों को सुनने का समय नहीं है। इसलिए लोगों ने धर्म, अध्यात्म एवं भक्ति का सहारा लेना शुरू किया। इनमें से कुछ मंदिरों में जाते हैं। कुछ प्रवचनों-सत्संग में जाते हैं कुछ आध्यात्मिक कैसेट लगा कर "मेडीटेशन" करते हैं। कुछ महात्माओं को गुरु मानकर उनसे आध्यात्मिक ज्ञान लेते हैं। कुछ ज्योतिष और वास्तु की पुस्तकें पढ़कर अपना भविष्य सुधारने की कोशिश करते हैं।

औसतन आज लोगों की आयु कम हो रही है। मृत्यु कब आ जाए कुछ कहा नहीं जा सकता। प्राचीन काल में भारतीय लोगों के सौ वर्ष की स्वस्थ आयु मानी जाती थी। अब औसत आयु घटकर पचास वर्ष की रह गई है। उसमें भी तरह-तरह की बढ़ती हुई बीमारियां, तरह-तरह की अपराध प्रवृत्तियां हमारे दैनिक जीवन को असुरक्षित बना रही हैं। कल क्या होगा किसी को पता नहीं यह अज्ञात है। प्रकृति के भीतर क्या छिपा है, उसकी रहस्यमय शक्ति अज्ञात है। अज्ञातता को ज्ञात करने की इच्छा, कल क्या होगा यह जानने की जिज्ञासा, भविष्य जानने की प्रबल ज्ञान पिपासा हमें ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता के पास ले जाती है।

हमें मालूम है कि कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं जिस पर हमारा नियंत्रण नहीं है। हम कोशिश तो बहुत करते हैं पर कई बार हमें परिश्रम का फल नहीं मिलता है। हम ज्योतिषी के पास अपनी समस्या लेकर जाते हैं-शादी कब होगी? नौकरी कब लगेगी? परीक्षा में पास होऊंगा या नहीं? व्यापार कामयाब रहेगा या नहीं? कौन-सा व्यापार करूं? कब करूं? अमुक यात्रा हेतु कब प्रस्थान करूं? मकान शुभ है या अशुभ? संतान का क्या नाम रखें? किसान पूछता है फसलें उत्तम होगी या नहीं? वर्षा कब होगी? नेता पूछते हैं चुनाव जीतूंगा या नहीं? कब नामांकन करें? शपथ कब लें? आज भारत और विदेशों में पार्षद से लेकर प्रधानमंत्री तक ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो नामांकन के पहले और नामांकन के बाद शपथ लेने के लिए ज्योतिषी से मुहूर्त नहीं पूछता हो। प्रत्येक महत्वपूर्ण व्यक्ति के व्यक्तिगत ज्योतिषी हैं। फिर वह चाहे एकता कपूर हों या लालू यादव।

जीवन की कटु सच्चाई तो यह है कि ईश्वर एवं आध्यात्म के प्रति हमारा झुकाव निःस्वार्थ नहीं है। हम किसी न किसी स्वार्थ में बंधे हुए आध्यात्म का चोला

ओढ़कर ज्योतिषी के पास जाते हैं। मंदिर में रखी हुई, बेजान पत्थर की मूर्ति तो कुछ बोलती नहीं अपितु ज्योतिषी के मुख से भगवान् स्वयं बोलता है। इसलिए भारत में ज्योतिषशास्त्र एवं ज्योतिषी को ईश्वर तुल्य आदर मिलता है।

ज्योतिषशास्त्र का महत्व एवं उपयोगिता

"वेदांग-ज्योतिष" में ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया गया है, साथ में यह भी कहा गया है कि जो ज्योतिष को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है। छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान सर्वोपरि महत्त्व को धारण करते हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।

ज्योतिष शास्त्र के द्वारा मनुष्य आकाशीय चमत्कारों से परिचित होता हैं फलतः वह जन साधारण को सूर्योदय, सूर्यास्त, सूर्य चन्द्र-ग्रहण, ग्रहों की युति, ग्रह युद्ध, चन्द्र श्रृंगोन्नति, ऋतु परिवर्तन, अयन एवं मौसम के बारे में सही-सही व महत्वपूर्ण जानकारी दे सकता है।

इसलिए ज्योतिष विद्या का बड़ा महत्त्व है। शास्त्रों के अनुसार ज्योतिष के दुर्गम्य भाग्यचक्र को पहचान पाना बहुत कठिन है, परन्तु जो जान लेते हैं वे इस लोक में सुख सम्पन्नता व प्रसिद्धि को प्राप्त करते हैं तथा मृत्यु के उपरांत स्वर्ग लोक को शोभित करते हैं।

जैसे अंधकार में रखी हुई वस्तु का ज्ञान दीपक से होता है ठीक उसी प्रकार से प्राणी के पूर्व जन्म के लिए शुभाशुभ फल कर्मफल का ज्ञान होना-शास्त्र (ज्योतिष) से होता है। जप, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले एक विद्वान् ज्योतिष को सदैव पास रखें। क्योंकि बिना ज्योतिषी के राजा उस अंधकारमय रात्रि के समान है। जिसमें चंद्रमा (प्रकाश) नहीं है, वह उस कान्तिहीन आकाश के समान है जिसमें सूर्य नहीं है, वह उस अंधे के समान है जो कि भाग्यरूपी घनघोर बीहड़ जंगल में सफलता के मार्ग को ढूंढने का व्यर्थ ही चेष्टा कर रहा है।

ज्योतिषशास्त्र वास्तव में सूचनाओं व सम्भावनाओं का शास्त्र है। सारावली के अनुसार इस शास्त्र का सही ज्ञान मनुष्य के लिए धन अर्जित करने में बड़ा सहायक होता है। अर्थात् ज्योतिषी जब बताता है कि शुभ समय है, उस समय मिट्टी में हाथ डालें तो सोना ही सोना हो जाता है, जब बताता है कि अशुभ समय है तो सोने में हाथ डालने से वह मिट्टी हो जाता है। ज्योतिष विपत्ति रूपी समुद्र में नौका व जहाज का कार्य करता है। यात्रा के समय में उत्तम मंत्री है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्रों व शुभचिन्तकों की श्रृंखला खड़ी कर देता है। इतना ही नहीं, इसके अध्ययन से व्यक्ति को धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। वह विपत्ति रूपी समुद्र में नौका

के समान एवं जीवन के अंधकार पूर्ण अनजान रास्तों में प्रकाश की किरण के समान मार्ग प्रशस्त करता है।

ज्योतिष की उपयोगिता मौसम विज्ञान की तरह स्पष्ट है। ज्योतिष गणना के आधार पर अष्टमी व पूर्णिमा को समुद्र में ज्वारभाटा का समय निश्चित किया जाता है। फलत: बड़े-बड़े जहाज बन्दरगाह पर ही रोक दिये जाते हैं। वैज्ञानिक राष्ट्र चन्द्र तिथियों व नक्षत्र तिथियों का प्रयोग अब कृषि में करने लगे हैं तथा ''नौटिकल पंचांग'' में निर्देश दिये गये हैं कि किस तिथि को मटर की खेती अधिक उपजाऊ होती है व किस तिथि को चने की। ज्योतिषशास्त्र भविष्य में होने वाली दुर्घटनाओं व कठिनाइयों के प्रति मनुष्य को सावधान कर देता है। कई लोग यह तर्क देते हैं कि जो होना है वह तो होगा फिर ज्योतिषी के पास जाने से क्या लाभ? इस तर्क को उदाहरण से स्पष्ट करने की चेष्टा करता हूं कि जैसे ज्योतिषी ने पंचांग देखकर भविष्यवाणी कर दी कि कल वर्षा होगी। फलत: नियति के अनुसार बारिश तो होगी, उसे ज्योतिष नहीं रोक सकता। परन्तु आपको पूर्व सूचना मिलने के कारण आप छाता लगाकर चलेंगे, सारी दुनिया भींगेगी। कई लोग अचानक वर्षा के कारण कई प्रकार के कष्ट व कठिनाइयों में उलझ सकते हैं परन्तु आप बचे रहेंगे। इस प्रकार दैनिक जीवन के अनेक क्रिया-कलाप ज्योतिषशास्त्र की मदद से व्यवस्थित हो सकते हैं। इसी प्रकार रोग निदान में भी ज्योतिष का बड़ा योगदान है। दैनिक जीवन में हम देखते हैं कि जहां बड़े-बड़े चिकित्सक असफल हो जाते हैं, डॉक्टर थककर बीमारी व मरीज से निराश हो जाते हैं, वहां मंत्र, आशीर्वाद, प्रार्थनाएं, टोटके व अनुष्ठान काम कर जाते हैं।

राशि कौन-सी देखें और क्यों?

ज्योतिष प्रेमियों के साथ दूसरी बड़ी समस्या यह है कि वे जन्म राशि देखें या नाम राशि। वैसे व्यक्ति के जीवन का पूरा विवरण एवं जानकारी तो उस ''जन्म पत्रिका'' के द्वारा ही सम्भव है, परन्तु मोटे तौर पर जन्मकालीन चंद्रमा का पता लगने पर ही अमुक व्यक्ति का चरित्र, गुण व गतिविधि के बारे में बहुत कुछ बताया जा सकता है। कई व्यक्ति इस चक्कर में रहते हैं कि राशि कौन-सी प्रधान माने ''जन्मराशि'' अथवा ''चालू नाम'' राशि। इसके लिए ज्योतिष शास्त्र इस प्रकार से निर्देश देता है।

विद्यारम्भे विवाहे च सर्वसंस्कार कर्मषु।
जन्म राशिः प्रधानत्वं, नाम राशि व चिन्तयेत्॥

अर्थात् विद्यारम्भ, विवाह, यज्ञोपवीत इत्यादि मूल संस्कारित कार्यों में जन्म राशि की प्रधानता होती है। नाम राशि पर विचार न करें, परन्तु–

गृहे ग्रामे खले क्षेत्रे, यज्ञे व्यापार कर्मणि।
नाम राशिः प्रधानत्वं, जन्म राशि न चिन्तयेत्॥

घर को आने-जाने पर, गांव प्रस्थान व यात्रादि पर, लाटा-खेत फर्म, फैक्ट्री इत्यादि के उद्घाटन व समापन पर तथा यज्ञ, पार्टी व व्यापार कर्मों तथा दैनिक कार्यों में नाम राशि प्रधान है, जन्म राशि नहीं।

पाश्चात्य देशों में प्रकाण्ड विद्वान ऐलिन लियो ने निष्कर्ष लिया कि जिस नाम के लेने से सोया हुआ व्यक्ति नींद से उठ जाये, जिस नाम से उसके दैनिक क्रिया-कलापों से गहरा सम्बन्ध हो वही अक्षर प्रधान राशि उस व्यक्ति को देखना चाहिए।

डॉ भोजराज द्विवेदी
एम. ए. संस्कृत (दर्शन) पी.एच. डी. (ज्योतिष) वास्तुविशेषज्ञ
प्रथम बी रोड, गोल बिल्डिंग के पीछे सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)
दूरभाष–0291-2637359, 2431883 फैक्स–2431883
ईमेल–agyat@wilnetonline.net.

❑❑❑

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी लग्नं ज्योतिः परं मतम्।
लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परम ज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नेमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चन्द्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है।।5।।

इन्दुः सर्वत्र बीजाअम्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशों अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश, लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनपत्र मिथ्या।।
विना विलग्नं परभावसिद्धिस्तत: प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्।।

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है)। ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधै:।
तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा।।8।।

ज्योतिविवरण में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता हैं। वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं।।8।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती हैं, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अत: समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।।9।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुर्नमध्यफलं विचिंत्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोउयं विदुषामभीष्ट:।।10।।

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।।10।।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, साररूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषलग्न***।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता धनुलग्न।
मकरलग्न मन्द बुदि के, अपने धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बडे अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्म कुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते है। क्योंकि "लग्न" का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

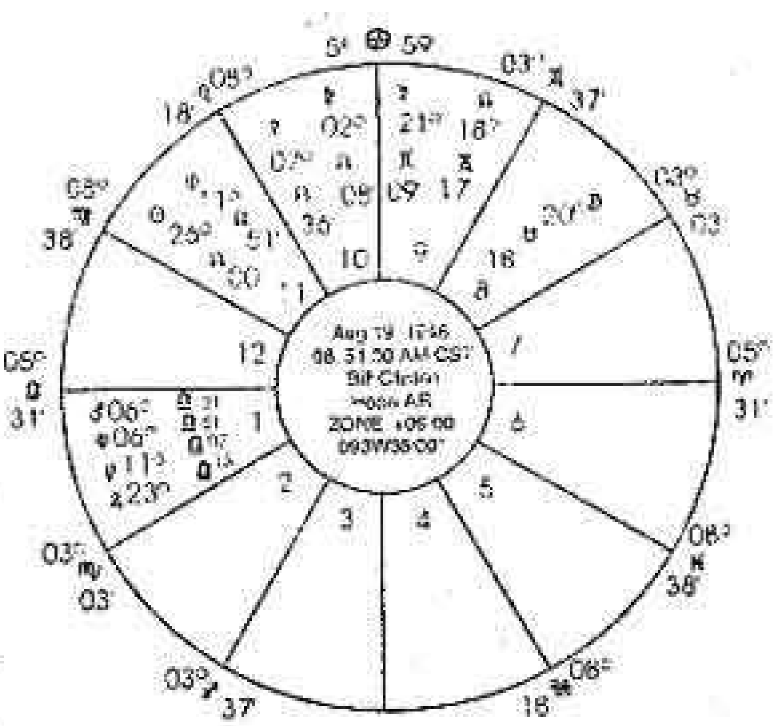

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिषी वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगणय है। वस्तुतः आकाश में दिखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है। 60 घटी में बारह

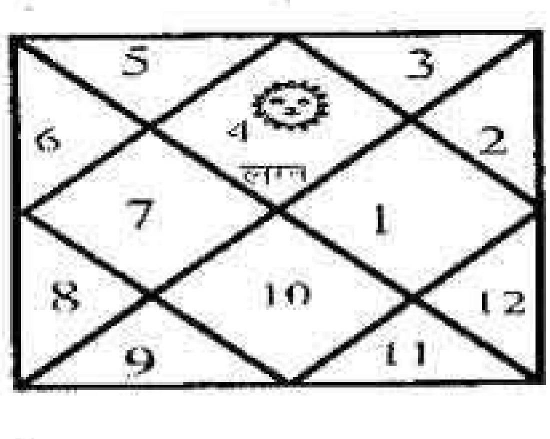

लग्न होते हैं। 60 में बारह का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्म कुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या "बारह भाव" कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्म कुण्डली की सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्म कुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्म कुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्म कुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

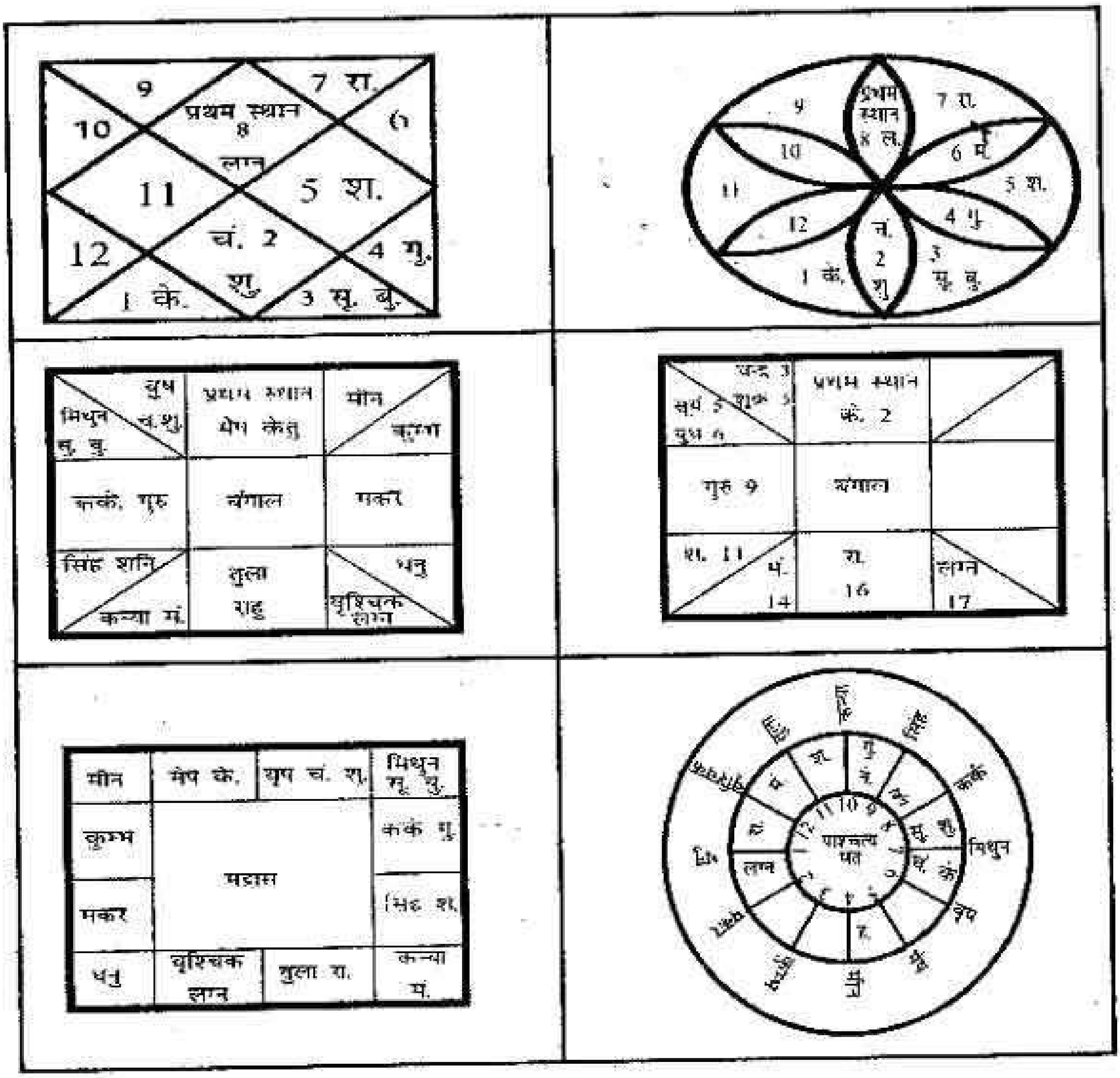

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	सम	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.12	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। **1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।**

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय स्टेण्डर्ड समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्म पत्रिका, निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने "लग्नं देहो वर्ग षट्कोगानि" लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मं पत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्वादनमन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्म पत्रिका निर्माण में "बीज रूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–**"लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्"**

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

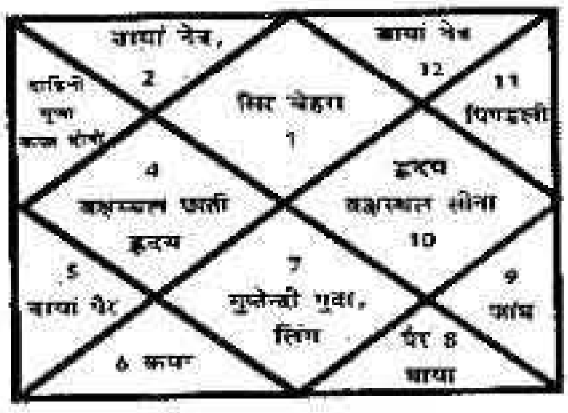

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **"ज्योतिष और आकृति विज्ञान"** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा, सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

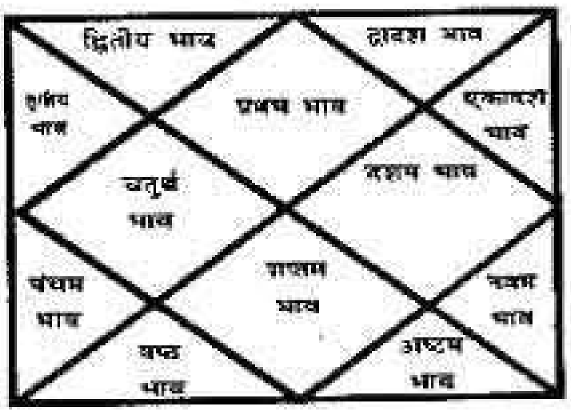

जन्म कुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है।

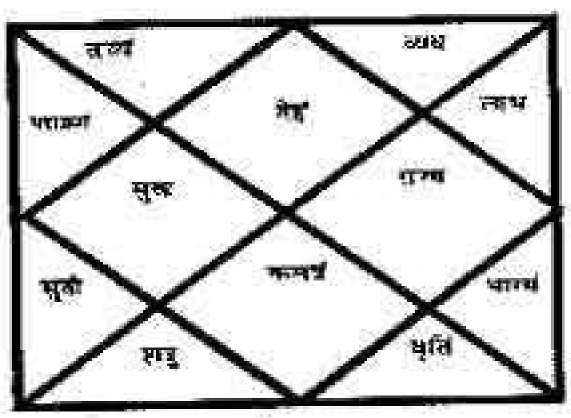

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुख, सुतौ शत्रुकलत्रं वृत्तिः।

भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययै लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नवमें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

□□□□

वृषलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

वृषलग्न में जन्म हो तो इस प्रकार फल जानना चाहिए–

गुरु, शुक्र और चंद्रमा ये वृषलग्न के लिये अशुभ हैं। इलिए उनको मारक लक्षण प्राप्त होता है तो अर्थात् मारक स्थानों से उनका जिस प्रकार का और जब संबंध आएगा इस प्रमाण से वे मारक बनते हैं।

(दिवाकरौ)

जीवशुक्रादयः पापाः शुभौ शनिशशीसुतौ।
राजयोगकरः साक्षादेक एवं रवेः सुतः ॥4॥
जीवादयो ग्रहाः पापाः संति मारकलक्षणाः।
बुधस्तत्र फलान्येवं ज्ञेयानि वृषजन्मनः॥5॥

वृषलग्न के लिये गुरु और चंद्रमा अशुभ फल देते हैं। शनि और रवि (चन्द्र) ये शुभ फल देते हैं। शनि अकेला ही राजयोग कारक है। वृषलग्न के लिए शनि भाग्य और दशम स्थानों का त्रिकोणाधिपति है इसलिए दोनों शुभ हुए। नवम और दशम स्थान के स्वामियों का राजयोग होता है, ऐसा इस श्लोक पर से सिद्ध होता है। इस पर से गुरु शनि का योग मेषलग्न के लिये शुभ फल दायक होना चाहिए था परन्तु ये ग्रह 11/12 स्थानों के स्वामी होते हैं इसलिए नियमों के अनुसार गुरु शनि का योग यहां पर शुभ नहीं होता। (परन्तु कुछ ग्रंथों में गुरु तथा शनि का योग मेष लग्न के लिए राजयोग माना है।) गुरु शनि योग शुभ नहीं होता। ऐसा जो उपरोक्त श्लोक में कहा गया है, इतना ही नहीं तो गुरु शनि योग होने से गुरु प्रत्यक्ष रुप से अशुभ होता है कारण गुरु के दोनों स्थानों में से नवम शुभ और द्वादश अशुभ और शनि के दोनों स्थानों में से दशम स्थान शुभ और एकादश स्थान अशुभ होते हैं। परन्तु गुरु निसर्गतः शुभ ग्रह होने के कारण से उसे शनि इस पाप ग्रह का योग अधिक बाधक होता है। और शनि नैसर्गिक पाप ग्रह (क्रूर ग्रह) होने से उसको गुरु इस शुभ ग्रह का योग अधिक बनाता है। और इस प्रकार शनि का अशुभत्व कम हो जाता

है इसलिए गुरु शुभ नहीं है। शुक्र 2/7 स्थानों का स्वामी होता है। अर्थात् मारक स्थानों का स्वामी होता है परन्तु वह नैसर्गिक शुभ ग्रह होने से स्वयं मारक नहीं बनता। उसके साथ दूसरा पाप ग्रह हो तो शुक्र उसे मारकत्व का काम सौंप देता है।

(इस प्रकार 11/12 स्थानाधिपतियों को बहुत गौणत्व प्रदान किया गया है यह दिखाई पड़ता है।) उसी प्रकार श्लोक 9 में कहे अनुसार मंगल अष्टम स्थान का स्वामी भी होता है। परन्तु अष्टम स्थान का स्वामी लग्नेश भी होने के कारण से वह अशुभ नहीं होता। इसके सिवाय अष्टमस्थ या लग्नस्थ हुआ तो शुभ होता है। चंद्रमा यदि क्षीण हो तो वह पापी होता है और पापी ग्रह केन्द्र का स्वामी होने से अशुभ फल नहीं देता। श्लोक के अनुसार मंगल और चंद्रमा ये सम होते हैं। सूर्य गुरु का योग इस लग्न को शुभ होता है, कारण सूर्य पंचमेश और गुरु नवमेश-द्वादशेश है परन्तु श्लोक के अनुसार गुरु स्वयं दोष युक्त (द्वादश का स्वामी होने से) होने पर भी सूर्य से युक्त होने के कारण गुरु का दोष नष्ट होता है और वह राजयोग होता है।

वृषलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग**–शनि नवम् (त्रिकोण) और दशम (केन्द्र) स्थानों का स्वामी होने से श्लोक 7 के अनुसार स्वयं अकेला ही राजयोग कारक है और उसमें यदि उसका योग शुभ ग्रहों से होता हो तो अतिश्रेष्ठ राजयोग के फल प्राप्त होते है। ''भावार्थ रत्नाकर'' नामक ग्रंथ में वृषलग्न को शनि अकेला राजयोग नहीं करता ऐसा कहा हुआ है।
2. **शुभ योग**–बुध द्वितीय स्थान का (मारक स्थान का) स्वामी होकर पंचम (त्रिकोण) स्थान का अधिपति होने से श्लोक के अनुसार शुभ है। यह मध्यम योग है। ''शनिशशीसुतौ'' और ''शनिदिवाकरौ'' पाठान्तर बराबर दिखाई पड़ता है। बुध के बारे में ऊपर कह चुके हैं। रवि चतुर्थ केन्द्र का स्वामी होने से श्लोक के अनुसार शुभ होकर शुभ फल करने वाला है। रवि शनि का शत्रु है और इनका योग उत्कृष्ट राजयोग नहीं कर सकेगा। इसकी जगह बुध-शनि यह उत्कृष्ट राजयोग बन सकता है।

वृषलग्न के लिए अशुभयोग

1. **अशुभयोग**–गुरु अष्टम स्थान का स्वामी तथा एकादश स्थान का स्वामी होने से श्लोक 9 और 6 के अनुसार अशुभ होता है और मृत्युकारक अशुभ फल देने वाला होता है।

2 **अशुभ योग**–शुक्र षष्ठ का अधिपति होने से श्लोक 7 और 10 के अनुसार अशुभ होकर अशुभ फल देने वाला (मृत्यु कारक) होकर अशुभ फल देने वाला होता है।

3 **अशुभ योग**–चंद्रमा तृतीय स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ (मृत्यु कारक) होकर अशुभ फल देने वाला होता है।

4 **अशुभ योग**–मंगल सप्तम स्थान (केन्द्र स्थान) का स्वामी है, और श्लोक 7 के अनुसार शुभों में उसकी गणना की गयी है, परन्तु वह मारक स्थान का स्वामी और द्वादश स्थान का स्वामी होने से अशुभ माना गया है और वह अशुभ फलदायक होता है।

वृषलग्न के लिए निष्फल योग

1. शुक्र-बुध, 2. मंगल-बुध

वृषलग्न के लिए सफल योग

1. शुक्र-शनि, 2. सूर्य-बुध, 3. सूर्य-शनि, 4. मंगल-शनि (निकृष्ट और सदोष) कारण मंगल द्वादश स्थान का स्वामी होने से दूषित है और सप्तम स्थान का स्वामी होने से कष्टदायक है। 5. शनि स्वयं अकेला राजयोग कारक है और श्रेष्ठ फल दायक योग करता है। 6. शनि-बुध यह श्रेष्ठ योग है। शनि नवम और बुध पंचम स्थान का स्वामी है। ये दोनों त्रिकोण के स्वामी हैं और शनि दशम बलवान केन्द्र का स्वामी भी होने से इनका योग श्लोक 20 के अनुसार श्रेष्ठ राजयोग होता है।

वृषलग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, षष्ठेश	–	शुक्र
2.	धनेश, पंचमेश	–	बुध
3.	पराक्रमेश	–	चंद्र
4.	सुखेश	–	सूर्य
5.	सप्तमेश, खर्चेश	–	मंगल
6.	अष्टमेश, लाभेश	–	गुरु
7.	राज्येश, भाग्येश	–	शनि
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5-बुध, 9-शुक्र
9.	दु:स्थान के स्वामी	–	6-शुक्र, 8-गुरु 12-मंगल
10.	केन्द्राधिपति	–	1-शुक्र, 4-सूर्य, 7-मंगल, 10-शनि
11.	पणकर के स्वामी	–	2,5-बुध, 8, 11-गुरु
12.	आपोक्लिम	–	3-चन्द्र, 6-शुक्र, 9-शनि, 12-मंगल
13	त्रिकेश	–	6-शुक्र, 8-गुरु, 12-मंगल
14.	उपचय के स्वामी	–	3-चंद्र, 6-शुक्र, 10-शनि, 11-गुरु
15.	शुभ योग	–	1. शनि, शनि के साथ शुभ ग्रह हो तो अति उत्तम 2. बुध (मध्यम) (बुध+शनि)
16.	अशुभ योग	–	1. गुरु, 2. शुक्र, 3. चंद्र, 4. मंगल
17.	निष्फल योग	–	1. शुक्र+बुध, 2. मंगल+बुध
18.	सफल योग	–	1. शुक्र+शनि, 2. सूर्य+बुध 3. सूर्य+शनि

19.	राजयोगकारक	–	सूर्य, बुध, शनि
20.	मारकेश	–	गुरु, गुरु अष्टमेश होने से मारकेश का फल देता है। मंगल द्वितीय मारकेश है।
21.	पापफलद	–	गुरु, शुक्र और चंद्रमा परम पापी-गुरु+चंद्र
22.	शुभयुति	–	शनि+बुध
23.	अशुभयुति	–	1. मंगल+शनि

❑❑❑

वृषलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	– वृष
2.	लग्न चिह्न	– वृषभ (बैल)
3.	लग्न स्वामी	– शुक्र
4.	लग्न तत्त्व	– पृथ्वी तत्त्व
6.	लग्न स्वरूप	– स्थिर
8.	लग्न दिशा	– दक्षिण
9.	लग्न लिंग व गुण	– स्त्री, रजोगुणी
10.	लग्न जाति	– वैश्य
11.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	– सौम्य स्वभाव, वात प्रकृति
12.	लग्न का अंग	– मुख
13.	जीवन रत्न	– हीरा
14.	अनुकूल रंग	– श्वेत
15.	शुभ दिवस	– शुक्रवार, शनिवार
16.	अनुकूल देवता	– श्री लक्ष्मी, संतोषी माता
17.	व्रत, उपवास	– शुक्रवार
18.	अनुकूल अंक	– छः
19.	अनुकूल तारीखें	– 6/15/24
20.	मित्र लग्न	– मकर, कुम्भ
21.	शत्रु लग्न	– सिंह, धनु व मीन
22.	व्यक्तित्व	– गुरुभक्त, कृतज्ञ, दयालु

23.	**सकारात्मक तथ्य**	– आकर्षक पहनावे, वस्त्र-आभूषण में रुचि
24.	**नकारात्मक तथ्य**	– दुराग्रही, कानों का कच्चा, आलसी

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी का वैदिक स्वरूप

वैदिक मंत्रों में अनेक जगह शुक्र का उल्लेख मिलता है।[1] तिलक के अनुसार शुक्र शब्द से आकाशीय ग्रह अभिप्रेत है।[2]

असौ वा आदित्या शुक्रः –शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/21

एष वै शुक्रो य एष तपति –शतपथ ब्राह्मण 4/3/1/26

अस्य (अग्नेः) एवैतानि नामानि (छत्री अक्रः शुक्रः ज्योतिः सूर्यः) –शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/25

अत्तैव शुक्र आद्यो मन्थी –शतपथ ब्राह्मण 4/2/1/13

ज्योतिर्वैशुक्रं हिरण्यम् –ऐतरेय ब्राह्मण 7/12

सत्यं वै शुक्रम् –शतपथ ब्राह्मण 3/9/3/25

शतपथ ब्राह्मण में शुक्र की चर्चा इस प्रकार से है–शुक्र और मंथी उसकी दो आंखें हैं। शुक्र वहीं है जो चमकता है। यह चमकता है इसलिए इसको शुक्र कहा गया है। चंद्रमा मंथी है।[3]

शुक्र के लिये **'अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायु रजसोविमाने'**[4] मंत्र बड़ा प्रसिद्धि है, जिसमें शुक्र के उदय का वर्णन मिलता है। कुछ लोग इसे देवतात्मक सूत्र मानते हैं। लेटिन भाषा में शुक्र का नाम 'वीनस' है। बालगंगाधर तिलक ने वेन और शुक्र से सादृश्य स्थापित किया।[5]

---

1. चक्षुषी हवा अस्य शुक्रामंथिनौ। तद्वा एष एवं शुक्रो य तष तपति तद्य देष एत्तपत्ति तेपैषशुक्रश्चंद्रमा एवं मंथी।।–शतपथ ब्राह्मण 4/2/1 मन्थिन शब्द से शनि ग्रह का ग्रहण भी किया गया है। भारतीय ज्योतिष–श. बा. दीक्षित पृ. 87
2. ऋग्वेद 10/12/3, स्वाध्याय मण्डली पारडी (बलसाड) गुजरात
3. भारतीय ज्योतिष–शंकर बालकृष्ण दीक्षित पृ. 87
4. श नो ग्रहाश्चान्द्रमामाः शमादित्यश्च राहुणा।
   शं नो मृत्युर्धूमकेतुः रुद्रातिग्मतेजसः।। –अथर्ववेद 19/9/10
5. यं वै सूर्य स्वर्भानुतमसा विद्याध्यदासुखः। ऋग्वेद 5/40/9

आचार्य शुक्र

शुक्राचार्य दानवों के पुरोहित हैं (तै. सं. 2/5/8/5, तां. ब्रा. 7/5/20)। ये योग के आचार्य हैं। अपने शिष्य दानवों पर इनकी कृपा बरसती रहती है। मृतसंजीवनी विद्या के बल पर ये मरे हुए दानवों को जिला देते हैं (महाभा., आदि. 76/8)। असुरों के कल्याण के लिये इन्होंने एक ऐसे कठोर व्रत का अनुष्ठान किया, जिसे आज तक कोई कर नहीं सका था। इस व्रत से इन्होंने देवाधिदेव शंकर को प्रसन्न कर लिया। औढरदानी ने वरदान दिया कि तुम देवताओं को पराजित कर दोगे और तुम्हें कोई मार नहीं सकेगा (मत्स्य पु., अ. 47)। अन्य वरदान देकर भगवान ने इन्हें धनों का अध्यक्ष और प्रजापति भी बना दिया।

इसी वरदान के आधार पर शुक्राचार्य इस लोक और परलोक में जितनी सम्पत्तियां है, सबके स्वामी बन गए (महाभा., आदि 78/39)। सम्पत्ति ही नहीं, शुक्राचार्य तो समग्र औषधियों, मंत्रों और रसों के भी स्वामी हैं (मत्स्य पु. 47/64)। इन्होंने अपनी समस्त सम्पत्तियों को अपने शिष्य असुरों को प्रदान कर दिया था (मत्स्यपु. 67/65)। दैत्य गुरु शुक्राचार्य का सामर्थ्य अद्‌भुत है।

ब्रह्मा की प्रेरणा से शुक्राचार्य ग्रह बनकर तीनों लोकों के प्राण का परित्राण करने लगे। कभी वृष्टि, अभी अवृष्टि, कभी भय और कभी अभय उत्पन्न कर ये प्राणियों के योग-क्षेम का कार्य पूरा करते हैं (महाभा., आदि. 66/42-44)। ग्रह के रूप में ये ब्रह्मा की सभा में भी उपस्थित होते हैं (महाभा., सभा. 11/29)। लोकों के लिये ये अनुकूल ग्रह हैं। ये वर्षा रोकने वाले ग्रहों को शान्त कर देते हैं (श्रीमद्‌भा. 5/21/12)। इनके आधिदेवता इन्द्र और प्रत्याधिदेवता इन्द्राणी हैं।

वर्ण–शुक्राचार्य का वर्ण श्वेत है (मत्स्य पु. 94/5)।

वाहन–इनके वाहन रथ में अग्नि के समान वर्ण वाले आठ घोड़े जुते रहते हैं। रथपर ध्वजाएं फहराती रहती है (मत्स्य पु. 127/7)।

आयुध–दण्ड इनका आयुध है (मत्स्य पु. 94/5)।

परिवार–शुक्राचार्य की दो पत्नियां है। एक का नाम 'गो' है जो पितरों की कन्या है, दूसरी पत्नी का नाम जयन्ती है, जो देवराज इन्द्र की पुत्री है। गो से इनके चार पुत्र हुए–त्वष्ठा, वरुत्री, शंड और अमर्क। जयन्ती से देवयानी का जन्म हुआ।

❑❑❑

शुक्र का खगोलीय स्वरूप

सौर मण्डल में बुध के बाद दूसरा स्थान शुक्र का है। शुक्र ग्रह सूर्य से 10,80,00,000 किमी. की दूरी पर स्थित है और अपने परिभ्रमण मार्ग पर 225 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। इसका व्यास 12,600 किमी. है तथा गुरुत्व लगभग पृथ्वी के समान है। सूर्य तथा चंद्रमा के बाद शुक्र ही आकाश में सबसे अधिक तेजस्वी ग्रह है। इसके संबंध में सबसे विचित्र बात यह है कि चंद्रमा की भांति इसकी भी कलायें हैं, जो किसी भी दूरदर्शी यंत्र द्वारा सुगमता से देखी जा सकती हैं। शुक्र सूर्योदय के समय पूर्व में अथवा सूर्यास्त के समय पश्चिम में देखा जाता है। इसे "संध्या" तथा "प्रभात का तारा" भी कहते हैं। शुक्र ग्रह पूर्व में अस्त होने के 75 दिन बाद उदय होता है। उदय के 240 दिन बाद वक्री होता है। वक्री के 23 दिन बाद पश्चिम में अस्त होता है। पश्चिम में अस्त होने के 6 दिन बाद पूर्व में उदित होता है। पूर्वोदय में 23 दिन बाद मार्गी तथा मार्गी के 240 दिन बाद पुन: पूर्व में अस्त होता है। शुक्र ग्रह सूर्यास्त के एक-दो घण्टे तक सूर्योदय से एक-दो घण्टे पूर्व ही दिखाई देने लगता है। अर्थात् सूर्य को छोड़कर 45 अंश अधिक दूर कभी नहीं जाता।

शुक्र को भृगु, कवि, सीत, आच्छा, ऊशना, कारक, आस्फुजित, दानवेज्य, दैत्यगुरु आदि विभिन्न नाम दिये गये हैं।

शुक्र की गति–यह अपनी धुरी पर 23 घण्टा 21 मिनट में पूरा घूम लेता है तथा सूर्य की परिक्रमा 224 दिन 42 घटी 2 पल में पूरी कर लेता है। इसकी गति एक सैकेण्ड में 22 मील है। स्थूल मान से यह एक राशि पर एक मास, एक नक्षत्र पर 11 दिन रहता है।

यह एक वर्ष वक्री और एक वर्ष मार्गी रहता है। वक्री अवस्था में यह पूर्व में उदय और पश्चिम में अस्त होता है। यह मार्गी अवस्था में सूर्य से 9 डिग्री अंश पर और वक्री अवस्था में 8 डिग्री अंशों पर अस्त रहता है। इसी प्रकार मार्गी अवस्था में 250 और वक्री अवस्था में 248 दिन उदय रहता है। इस-ग्रह की मार्गी अवस्था

510 दिन और वक्री अवस्था 45 दिन तक रहती है। यह सूर्य से दूसरी राशि पर वक्री, बारहवीं पर शीघ्रगामी, तीसरी और ग्यारहवीं पर समचारी रहता है। जब इसकी गति 75.42 होती है तब यह परम शीघ्रगामी हो जाती है। अविचारी अवस्था में यह 10 दिन तक ही रह पाता है। वक्री होने के दो दिन आगे या पीछे यह स्थिर भी प्रतिभासित होता है।

शुक्र कई बार सूर्योदय के कुछ समय पहले तेजी से चमकता हुआ पूर्व दिशा में दिखलाई पड़ता है। फलत: लोग इसे प्रभात या भोर का तारा भी कहते हैं। कई बार यह सूर्यास्त के समय पश्चिम दिशा में भी चमकता हुआ दिखलाई देता है। ऐसी वेला में इसे "संध्या" का तारा भी कहते हैं। किन्तु शुक्र ग्रह जब भी पूर्व दिशा में अस्त होता है तो 15 दिन बाद ही उदय हो पाता है। यह उदय के प्राय: 250 दिन बाद वक्री होता है। वक्री के 23 दिन बाद पश्चिम दिशा में अस्त हो जाता है। पश्चिम में अस्त होने के 9 दिन बाद पूर्व में पुन: उदित होता है। पूर्वोदय के 23 दिन बाद मार्गी तथा मार्गी के 250 दिन बाद पुन: पूर्व में अस्त हो जाता है यह क्रम चलता ही रहता है।

❑❑❑

वृषलग्न के स्वामी शुक्र का पौराणिक स्वरूप

दैत्यों के गुरु शुक्र का वर्ण श्वेत है। उनके सिर पर सुन्दर मुकुट तथा गले में माला है। वे श्वेत कमल के आसन पर विराजमान हैं। उनके चार हाथों में क्रमशः दण्ड, रुद्राक्ष की माला, पात्र तथा वर मुद्रा सुशोभित रहती है। शुक्राचार्य की दो पत्नियां हैं। एक का नाम 'गो' है जो पितरों की कन्या है, दूसरी पत्नी का नाम जयन्ती है, जो देवराज इन्द्र की पुत्री है। गो से इनको चार पुत्र हुए–त्वष्टा, वरूत्री, शंड और अमर्क। जयन्ती से देवयानी का जन्म हुआ।

शुक्राचार्य दानवों के पुरोहित हैं। ये योग के आचार्य हैं। अपने शिष्य दानवों पर इनकी कृपा सर्वदा बरसती है। इन्होंने भगवान शिव की कठोर तपस्या करके उनसे मृतसंजीवनी विद्या प्राप्त की थी। उसके बल से ये युद्ध में मरे हुए दानवों को जिन्दा करते थे (महाभारत आदि. 73/8)

मत्स्य पुराण के अनुसार शुक्राचार्य ने असुरों के कल्याण के लिए ऐसे कठोर व्रत का अनुष्ठान किया जैसा आज तक कोई नहीं कर सका। इस व्रत से इन्होंने देवाधिदेव शंकर को प्रसन्न कर लिया। शिव ने इन्हें वरदान दिया कि तुम युद्ध में देवताओं को पराजित कर दोगे और तुम्हें कोई नहीं मार सकेगा। भगवान शिव ने इन्हें धन का भी अध्यक्ष बना दिया। इसी वरदान के आधार पर शुक्राचार्य इस लोक और परलोक की सारी सम्पत्तियों के स्वामी बन गये।

महाभारत आदिपर्व (78/39) के अनुसार सम्पत्ति ही नहीं, शुक्राचार्य औषधियों, मंत्रों तथा रसों के भी स्वामी हैं। इनकी सामर्थ्य अद्‌भुत है। इन्होंने अपनी समस्त सम्पत्ति अपने शिष्य असुरों को दे दी और स्वयं तपस्वी जीवन ही स्वीकार किया।

ब्रह्मा की प्रेरणा से शुक्राचार्य ग्रह बनकर तीनों लोगों के प्राण का परित्राण करने लगे। कभी वृष्टि, कभी अवृष्टि, कभी भय, कभी अभय उत्पन्न कर ये प्राणियों के योग-क्षेम का कार्य पूरा करते हैं। ये ग्रह के रूप में ब्रह्मा की सभा में भी उपस्थित

होते हैं। लोकों के लिये ये अनुकूल ग्रह हैं तथा वर्षा रोकने वाले ग्रहों को शान्त कर देते हैं। इनके अधिदेवता इन्द्राणी तथा प्रत्यधिदेवता इन्द्र हैं। मत्स्य पुराण (14/4) के अनुसार इनका वाहन रथ है, उसमें अग्नि के सामन आठ घोड़े जुते रहते हैं। इनके रथ पर ध्वजाएं फहराती रहती हैं। इनका आयुध दण्ड है। शुक्र वृष और तुला राशि के स्वामी हैं। तथा इनकी महादशा 20 वर्ष की होती है।

शुक्र ग्रह की शान्ति के लिए गोपूजा करनी चाहिए तथा हीरा धारण करना चाहिए। चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, हीरा, सफेद अश्व, दही, चीनी, गौ और भूमि ब्राह्मणों को दान देनी चाहिए।

नवग्रह मण्डल में शुक्र का प्रतीक पूर्व में श्वेत पंचकोण है। शुक्र की प्रतिकूल दशा में इनकी अनुकूलता और प्रसन्नता हेतु वैदिक मंत्र–'ओइम् अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सतयमिन्द्रियं विपानँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।' पौराणिक मंत्र–'हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारम् भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।' बीज मंत्र–'ओइम द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः', तथा सामान्य मंत्र 'ओइम शुं शुक्राय नमः' है। इनमें से किसी एक का नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। कुल जप संख्या 16000 तथा जप का समय सूर्योदयकाल है। विशेष अवस्था में विद्वान ब्राह्मण का सहयोग लेना चाहिए।

ज्योतिषीय स्वरूप–हमारे शास्त्रों में लक्ष्मी की उत्पत्ति की तीन गाथाएं चल रहीं हैं। 1. समुद्र मंथन, 2, ज्वाला से उत्पत्ति, 3 भृगु कन्या के रूप में श्रीमाल पुराण में। ये तीनों कथायें रहस्यवाद व छायावाद से ओतप्रोत होकर प्रतीकात्मक रही हैं। कथन का तात्पर्य है। 1. विचार मन्थन से सृजनात्मक शक्ति द्वारा श्री प्राप्ति 2. संगठनात्मक के तेज से को प्रकट करना। 3. भृगु की तपस्या से, तप से व ब्रह्मचर्य द्वारा लक्ष्मी प्राप्त करना। इन कथाओं में दो तत्त्व जल प्रकट होते हैं। इन दोनों का संबंध शुक्र से है। भृगु से लक्ष्मी के जन्म की कथा ने ही भृगु-शुक्र से लक्ष्मी का संबंध जोड़ा है।

ज्योषित शास्त्र में देव गुरु बृहस्पति को धन दायक ग्रह नहीं माना है। नैसर्गिक कुण्डली में भी भाग्य भवन खर्च के अधिपति गुरु हैं, अतः यह विद्यादायक हैं धन दायक नहीं हैं। जबकि शुक्र नैसर्गिक कुण्डली में धनेश बनता है। दोनों ही स्थान ऐश्वर्य और व्यापार से संबंधित हैं। "व्यापारो वर्धते लक्ष्मीः" व्यापार से लक्ष्मी बढ़ती है। ऐश्वर्य से शोभा बढ़ती है। अतः हमारे भृगु शुक्र का श्री से सम्पूर्ण संबंध है।

शुक्र का एक पर्यायवाचक नाम वन्त है। मदन है और कवि है। यह ऐश्वर्य का उपभोक्ता ग्रह है संजीवनी विद्या का सर्जक है, दैत्य गुरु है, दैत्य ही धन का

संग्रह करते थे। यह कर्म है। अतः मदन है। ऋतु बसन्त मदन उद्दीपक है। वीर्य ही संजीवनी है, वीर्य रक्षण ही प्रधान तत्त्व है। धर्मशास्त्रों की प्रत्येक क्रिया पुण्याहवाचन से प्रारम्भ होती है। उसमें ग्रहों के क्रम में "शुक्रोंगरको बृहस्पति शनैश्चर राहु केतु सोम संहिता आदित्याद्या सर्वेग्रहा+प्रीयन्ताम" का उद्घोष क्रम, क्रमशः शुक्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि, राहु, केतु, सोम और सूर्य का चयन करता है। इसका मुख्य कारण वीर्य प्रधानता है। जब आपका वीर्य ही बलवान नहीं तो आप के जीवन में क्या रहेगा? न सुख का उपयोग कर सकेंगे न काम की प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे। गुरु वसा प्रधान ग्रह है जबकि शुक्र वीर्य प्रधान ग्रह है। अतः वीर्यवान् व्यक्ति ही धन प्राप्त करने में समर्थ होता है। वीर्यवान बनने के लिए 25 वर्षों तक ब्रह्मचर्य आवश्यक है। अतः शुक्र से संबंधित भाग्योदय की आयु का 25वां वर्ष है। "नाय आत्मा बलहीनेन लभ्य" आत्मा साक्षात्कार भी बलहीन नहीं कर सकता अतः इस लोक में परलोक दोनों की प्राप्ति शुक्र की बलवन्ता से संभव मानी गई है। यही कारण रहा है कि धर्मशास्त्रों ने भी शुक्र को ही प्रमुख स्थान दिया है।

शुक्र का विवेचन–शुक्र की दो राशियां उनकी अपनी हैं–1. वृषभ और तुला। वृषभ राशि मे बैल का स्वरूप है तो तुला में तराजू हाथ में तौलते हुए मनुष्य का स्वरूप है।

अतः वृषलग्न चाहे राशि हो उसके जातक दृढ़ स्कंध वाले पाये जायेंगे। प्रायः गौर वर्ण से संबंधित होंगे। अपनी धुन के पक्के व कामी होंगे, ऐश्वर्यशाली बनेंगे। हठ पर दृढ़ रहेंगे। उनमें शासन क्षमता होगी भावुक होंगे और अनुचित कार्य पर पछतावा भी करेंगे। इनकी हंसी लुभावनी होगी। स्वार्थी तो होंगे पर अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का कम नुकसान करेंगे। इनमें कुछ कला झगड़ने की भी पाई जाएगी।

जबकि तुला राशि शुक्र की मूलत्रिकोणीय राशि है। तुलालग्न व राशि वाले अगर किसी के लिए 10 रुपये खर्च करेंगे तो 100 का लाभ उठाना चाहेंगे। अपने स्वार्थ को साधने में दूसरों को भरपूर नुकसान कर देंगे। ये भी विलासी व व्यसनी होंगे पर व्यापारी क्रिया में दक्ष होने से मीठा बोल कर अपना काम निकालेंगे। इन्साफ पसंद, धीरज वाले धार्मिक भी होंगे। वे न्यायाधीश भी होंगे।

शुक्र की उच्च राशि मीन जो जलग्रह है और नीच राशि कन्या अतः शुक्र प्रधान, जलविहार व घूमना पसंद करेंगे और स्त्रियों के प्रति उनका आकर्षण गहरा होगा। वे चरित्र भ्रष्ट भी बन सकते हैं। शुक्र पंच कोण का सितारा है। " पंच कोणेतु भार्गवे" ऐसा वर्णन है। यह दूर्वादल श्याम वर्ण का है न अधिक गोरा और न काला। गेहूंआ वर्ण कह सकते हैं।

लग्नस्थ शुक्र पर जब चंद्र व गुरु की दृष्टि हो तो वह गौर वर्ण का जातक होगा। अन्यथा कुछ कालापन लिए गेहुंआ रंग का होगा। लग्नस्थ शुक्र के पति-पत्नी में एक सा रंग कुछ कालापन का होगा। इसे चित्रभानु भी कहा गया है। अत: यह स्त्रियों जैसा आचरण करने वाला जातक होता है। स्त्रियो चित्त विभिन्न कपड़े पहनती रहती है। इसके ऋतु बसंत है। बसंत ऋतु में ही प्राय: प्रकृति पुष्पित, सुरभित होती है और काम उद्दीप्त होती है। इसकी देवी इंद्राणी व लक्ष्मी है। यह इंद्रिय है और ऐश्वर्यशाली है। वैभवन सम्पन्न लोग ही भोग विलास का आनन्द उठाते हैं। इसकी दिशा पूर्व और दक्षिण है परन्तु अग्निकोण मुख्य स्थान है। क्योंकि यह आर्द्र भी है। और आग भी है। इसमें जल व तेज का समन्वय है। इसकी जाति ब्राह्मण है। क्योंकि यह तपस्वी 25 वर्ष का ब्रह्मचर्य भी धारण से वीर्य परिपक्व होता है। यह रजोगुणी है, क्योंकि यह ग्रह भोग प्रधान ग्रह है। यह सदैव शुभ रहता है क्योंकि यह शुभ वर्ण का है गौरता इसमें प्रमुख पाई जाती है।

यह हमेशा मनोरंजन में आसन्न रहता है क्योंकि इसका जातक दर्शनीय शरीर वाला, सुन्दर नेत्र वाला, लहरीले केशों वाला, कफवान प्रधान प्रकृति वाला होता है जिस पर स्त्रियां आसक्त रहती है। यह कवि है, क्योंकि प्राकृतिक सौन्दर्य पर इसका अधिकार है प्रात: वेला में ही कवि व संगीतकार अपने काव्य व संगीत की साधना करते हैं।

शुक्र की बलवत्ता—प्राकृतिक कुण्डली में चतुर्थ स्थान चंद्र का है पर शुक्र 4थे भाव में बैठकर बली होता है। पुरुषों की कुण्डली का स्त्री राशियों में बैठा शुक्र जातक की कुण्डलियों में पुरुष राशि में बैठा शुक्र बलवान होता है।

चौथे भाव में शुक्र दिग्बली और 5वें भाव में हर्षबली होता है। शुक्र सप्तम भाव का कारक है। अत: सप्तमस्थ-शुक्र शुभ नहीं देता है। "कारको भावनाशाय" ऐसा प्रसद्धि है। सप्तम का शुक्र कामेच्छा बलवान करता है। शुक्र राशि के मध्य भाग में अपनी उच्च राशि में द्रेष्कोण में और नवांश कुण्डली में स्वगृह में दिन में तीसरे चौथे षष्ठ तथा व्यय स्थान में, तीसरे पहर में ग्रह मुहूर्त में चंद्र के साथ तथा वक्री ग्रह के साथ सूर्य के आगे गया हुआ बलवान होता है। परन्तु वक्री बुध के साथ शुक्र कर्म होता है। शुक्र का बल चंद्र तोड़ देता है। यह षष्ट स्थान में विफल रहता है। इसमें विवाद भी है।

शुक्र का उदयास्त—पूर्व का शुक्र, द्वितीय भाव लग्न और व्यय स्थान में होता है। पश्चिम का शुक्र छठवें, सातवें और आठवें स्थान में होता है।

द्वितीय भाव षष्ठ और सप्तम में यह नजर नहीं आता और लग्न, व्यय और अष्टम में दिखाई देता है। शुक्र पश्चिम की ओर उदय होता है तब यह सूर्य के पीछे

रहता है उस समय यह सांवला दिखाई देता है। जब शुक्र पूर्व की ओर हो तो सूर्य के आगे होता है इस समय यह अति शुभकार्य तेजस्वी होता है। सूर्य के साथ बैठा शुक्र अस्त हो जाता है। शुक्र हमेशा सूर्य के आगे या पीछे घर में रहता है।

शुक्र के रत्न–शुक्र से रत्नों में मोती, हीरा व स्फटिक हैं। इसकी धातु सफेद सोना (प्लेटिनम) और चांदी है। निर्बल शुक्र को रत्न पहना कर बलवान किया जा सकता है।

शुक्र के फल

1. कन्या लग्न में नीच का शुक्र उत्तम वैभव देता है।
2. चतुर्थ स्थान में बैठ शुक्र किसी भी राशि में हो उसकी उम्र सुख से गुजार देता है।
3. शुक्र धनदाता ग्रह है। शुक्र प्रधान व्यक्ति सुखी रहता है। शुक्र की दशा विंशोतरी में 20 वर्ष की होती है।
4. धन स्थान में शुक्र धनवान बनाता है।
5. तीनों लग्नों में 12वें गया शुक्र राजा के तुल्य धन देता है।
6. शनि+शुक्र का संबंध एक दूसरे का पूरक है।
7. शुक्र की महादशा में शनि की अर्न्तदशा शनि की महादशा में शुक्र की अंतदर्शा धनु और मीन राशि व लग्न के जातकों को छोड़कर सभी को योग हीन बना देती है।
8. जिस भाव में शनि+शुक्र की युति होती है उस भाव के फल में प्रायः वृद्धि होती है। परन्तु 7वें भाव में यह व्यक्ति का चरित्र गिरा देती है।
9. चौथे भाव में शनि+शुक्र की युति अनेक स्त्रियों से धन प्राप्ति और दशम में हो तो राजा तुल्य वैभव होगी।
10. मकर व कुम्भलग्न में शुक्र योगकारक है वहां शुक्र+शनि की युति ज्यादा लाभप्रद है।
11. तुला व वृषलग्नों में शनि+शुक्र युति विशेष फल प्रदान नहीं करेगी। केवल शनि अकेला योग कारक होगा।
12. शुक्र से 4-8वें 12वें श., मं. या पाप ग्रह हो तो दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद रहेगा, अगर शुभ दृष्ट हो तो और बात है।
13. मं.+शु समसप्तक हो तो कामी विशेष बना देगा।

14. वक्री ग्रह स. के साथ या अन्य वक्री ग्रह बुध को छोड़ कर बैठा शुक्र वैभव से पूर्ण करेगा।

15. शुक्र की एक पाद, द्विपाद, त्रिपाद या सम्पूर्ण दृष्टि से शून्य मंगल होगा तो संतान का अभाव रहेगा।

निर्बल शुक्र को शांत करने व बलवान करने के उपाय

1. श्री यंत्र का पूजन नित्य करें।
2. श्री सूक्त या लक्ष्मी स्रोत व कनक धारा स्रोत का पाठ करें।
3. ब्राह्मणों द्वारा शुक्र व बाधक ग्रह के जाप करवायें।
4. नित्य 1 मुट्ठी ताजे चावल सूर्योदय से पहले बनवाकर घी शक्कर डालकर सूर्योदय से पहले गौ को दें/ गौ पालतू न हो। सफेद व काली हो तो श्रेष्ठ। ऐसा 28 रोज करें।
5. हर शुक्रवार को मछलियों को चुग्गा दें।
6. बीमारी हो तो हर शुक्रवार मोरों को चने चुगायें।
7. हर शुक्र, मंगल को कुत्तों को दूध और डबल रोटी देते रहें।
8. लेख में प्रदर्शित शुक्र के रत्न धारण करें।
9. मंदिर में हर शुक्र को सफेद वस्तु, दूध, दही, चावल या शक्कर का दान करें।
10. शुक्र की अनिष्टता के परिहारार्थ दूध, जवारी का दान सतत् करते रहें। भोजन के पूर्व थाली में परोसी सभी चीजें थोड़ी-थोड़ी निकालकर सफेद गाय या सफेद बैल को खिलाएं।
11. लग्न में स्थित शुक्र अनिष्ट हो एवं सप्तम तथा दशम स्थान में कोई ग्रह न हो तो ऐसे जातक का विवाह 25वें साल में होता है। विवाह के बाद वह कंगाल बनता है। उसकी पत्नी उसे छोड़ देती है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए घास (जवस) की चटनी बनाकर नित्य भोजन में लें। गोमूत्र का रोज सेवन करें। सप्तधान्य इकट्ठा करके पंछियों को खिलाएं।
12. अनिष्ट शुक्र द्वितीय स्थान में और बृहस्पति 8, 9 या 10 में से किसी स्थान में हो तो जातक का वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण रहता है। पत्नी नौकरी करती हो तो उसका चरित्र भ्रष्ट होता है। जातक जीवनभर दु:खी रहता है। जातक को गुप्त रोग एवं शीघ्र वीर्य पतन के विकार होते हैं। यह अनिष्टता दूर करने के लिए प्रवाल भस्म का सेवन करें।

13. अनिष्ट शुक्र पंचम स्थान में हो एवं राहु लग्न में या सप्तम स्थान में हो तो जातक कामातुर रहता है। उसकी संतान आज्ञाकारी नहीं रहती है। चोरी का डर रहता है। इस अनिष्टता के निवारण के लिए गाय की सेवा करें। स्वयं का चरित्र शुद्ध रखें। जातक स्त्री या पुरुष दोनों ही दही-दूध से अपने गुप्तांग स्वच्छ करें। इससे आय में बढ़ोत्तरी होकर जीवन सौभाग्यशाली बनेगा।

14. शुक्र अष्टम स्थान में हो तो अनिष्ट फल देता है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए सफेद सिक्का, चवन्नी, अठन्नी या रुपया सफेद पुष्प के साथ गंदे पानी में प्रवाहित करें। देवी के मंदिर में जाकर नित्य प्रार्थना करें।

15. नवम् स्थान में शुक्र होने पर जातक धनी तथा उद्योगपति बनता है। उसकी बुद्धि की कुशाग्रता को बढ़ावा मिलता है। यदि नवमस्थ शुक्र अनिष्ट हो तो उसके शुभ फल न मिलकर अशुभ फल ही प्राप्त होंगे। इन अशुभ फलों की निवृत्ति के लिए चांदी के चौकोर टुकड़े कड़वे नीम के पेड़ के नीचे गाड़ दें। नवम स्थान में शुक्र के साथ चंद्र व मंगल हों तो गृह निर्माण के समय एक छोटे-से मिट्टी के पात्र में शहद भरकर यह मधुघट मकान की नींव में गाड़ दें।

16. बारहवें स्थान में शुक्र पत्नी के लिए अनिष्टकर होता है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए नीले या बैंगनी रंग के कुछ फूल संध्या समय जंगल में गाड़ दें।

17. बारहवें स्थान में शुक्र एवं 2, 6, 7, 12 में से किसी एक स्थान में राहु होने पर जातक की उम्र के 25वें साल तक स्थिति कष्टकारक रहती है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए काली गाय या भैंस पालें।

18. चांदी, चावल, चित्र-विचित्र रंग के वस्त्र, बछड़े सहित गाय, हीरा, रूपा, इसमें से जो संभव हो उसका दान करें।

19. वाघाटी की जड़ तावीज में धारण करें।

20. हर शुक्रवार को सफेद सीसा पानी में डालकर स्नान करें।

शनि अनिष्ट से बचने हेतु टोटके

21. कुण्डली में शनि शुभ हो तो उसे और शुभ बनाने के लिए मकान में लोहे के फर्नीचर का इस्तेमाल करें। भोजन में काला नमक और काली मिर्च का प्रयोग करें। आंखों में काजल या काला सुरमा लगाएं।

22. शनि की अनिष्टता साढ़ेसाती या ढैय्या में होने वाले कष्ट कम करने के लिए भोजन के थाली में परोसे सभी पदार्थ थोड़े-थोड़े अलग निकालकर रखें। ये पदार्थ कौओं को खिलाएं।

23. संतति प्राप्ति में शनि रोड़े अटकाता हो या अनिष्ट शनि के कारण गर्भपात होता हो तो ऐसी स्त्री भोजन पूर्व थाली में परोसे सभी पदार्थ से थोड़ा-थोड़ा अलग निकालकर काले कुत्ते को खिलाएं।

24. अनिष्ट शनि की अनिष्टता निवारण के लिए सरसों या तिल का एवं शनि तेल का दान करें।

25. अनिष्ट शनि होने पर उस जातक के मकान का प्रवेश द्वारा पश्चिम दिशा में होता है। जातक की आयु के 36, 42, 45, 48वें साल क्लेशदायक बीतते हैं। शिक्षा पूर्ण नहीं होती। अपच की शिकायत रहती है। ऐसे जातक सुरमा खरीदकर जमीन में गाड़ दें। सुरमा एवं बड़ की जड़ दूध में उबालकर उसका तिलक स्वयं के माथे पर करें। इससे शरीर की मानसिक एवं आर्थिक अड़चनें दूर होती हैं।

26. चतुर्थ स्थान में शनि हो, ऐसे जातक रात को दूध न पीएं। क्योंकि दूध जहरीला बनकर शनि की अनिष्टता को बढ़ाता है।

27. चतुर्थ स्थान में शनि हो तो ऐसे जातक काले सांप को दूध पिलाएं, भैंस को घास खिलाएं, मजदूरों को भोजन दें। हमेशा आर्थिक तंगी रहती हो तो कुएं में कच्चा दूध डालें।

❑❑❑

वृषलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

वृषलग्न का स्वरूप

श्वेतः शुक्राधिपो दीर्घश्चतुष्पाच्छर्वरीवली।
याम्येट् ग्राम्यो वणिग्भूमिरजपृष्ठोदयो वृषः ।।8।।

–बृहत्पाराशरहोराशास्त्र/अ. 4/श्लो. 8

वृषलग्न श्वेतवर्ण, लम्बा शरीर, चतुष्पद, रात्रिबली, दक्षिण दिशावासी, ग्रामचारी, वैश्य जाति, भूमि तत्त्व, रजोगुणी, पृष्ठोदय है, इसका स्वामी शुक्र है।।8।।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपाश्कवेंऽङ्कित
स्त्यागी क्लेशसहः प्रभुः ककुदवान् कन्याप्रजः श्लेष्मलः।
पूवैर्धन्धुभिरात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी,
दीप्ताग्निः प्रमदाप्रियः स्थिरसहृन्मध्यात्यसौख्यो गवि।।2।।

बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 2

वृषलग्न राशि में चंद्रमा रहने पर उत्पन्न व्यक्ति सुन्दर व दर्शनीय व्यक्तित्व वाला, विशिष्ट प्रभावोत्पादक गमन वाला, बड़े व भरे हुए मुखमंडल वाला, भारी जांघों वाला, पीठ, मुख एवं पार्श्व (पेट का किनारा) में चिन्ह से युक्त, त्यागशील, क्लेश सहने की प्रवृत्ति, समर्थ, ऊंचे कन्धों वाला, कन्या सन्तति की अधिकता वाला कफ प्रधान प्रकृति, बड़े भाई व पुत्रों से रहित, अर्थात् छोटे भाइयों वाला, सौभाग्यशाली, क्षमाभावना से युक्त, तीव्र भूख का अनुभव करने वाला, स्त्रियों से विशेष अनुराग रखने वाला या स्त्रियों का प्रिय, पक्की मित्रता रखने वाला, मध्यावस्था व वृद्धावस्था में विशेष सुख पाने वाला होता है।

वृषे विलग्ने तु नरः प्रसूतो मित्रं क्षमी हास्यरतः सुवाक्यः।
विज्ञानयुक्तो गुरुलोकभातः शूरः प्रधानः सुतालसश्च।।2।।

वृद्धयवनजातक अ. 24/श्लो. 2/पृ. 286

यदि वृषलग्न में जन्म हो तो मनुष्य मित्रता निभाने वाला, क्षमावान हास्य में रत रहने वाला, सुन्दर वाक्य बोलने वाला, विशिष्ट ज्ञान से युक्त, पूर्वजों व अग्रजों का सत्कार करने वाला, शूरवीर, प्रधानता पाने वाला एवं बेटे की इच्छा करने वाला होता है।

गोमान् देवगुरुद्विजार्च्चनरतः स्वल्पात्मजः शांतधी
विद्यावादरतोऽटनश्च सुभगो गोलग्नजः कामुकः ॥2॥

—जातक पारिजात श्लो. 2/पृ. 678

वृष गौ आदि पशुओं से युक्त, देवता, गुरु और ब्राह्मणों की पूजा (सत्कार) में रत, थोड़े पुत्र वाला, शांत बुद्धि, विद्यावाद (शास्त्रार्थ) में संलग्न, घूमने फिरने या यात्रा करने वाला, देखने में सुंदर, कामुक (कामवासना प्रधान)।

प्रियपानभोज्यनारीवियोगतप्तो वृषभ पूर्वांशे।
वस्त्रालङ्कारयुतो युवतिप्रकृतानुसारी स्यात्॥

—सारावली पृ. 466/श्लो. 10

यदि जन्म लग्न में वृषलग्न में वृष राशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो जातक खाने पीने का शौकीन, नारी (स्त्री) के वियोग से पीड़ित, वस्त्र व भूषणों से युक्त तथा स्त्री की प्रकृति स्वभाव के अनुरूप कार्य करने वाला होता है।

वृषलग्ननोभवो बाल्ये गुरुभक्तः प्रियंवदः।
गुणीकृती धनी लुब्धः शूरः सर्वजनप्रियः॥

—मानसागरी

वृषलग्न वाले जीव मानव धर्म आस्थाशील, गुणी जनों का प्रेमी, प्रियवादी गुणशील, बुद्धिमान, धनवान, लोभी, पराक्रमी तथा जनसमाज का स्नेहभाजन एवं स्वकार्य कुशल होता है।

भोज संहिता

वृषलग्न का स्वामी शुक्र है। शुक्र ऐश्वर्यशाली व विलासपूर्ण ग्रह है। इस राशि वाले जातक प्रायः गौरवर्ण के, दिखने में सुन्दर व आकर्षक व्यक्ति होते हैं। इस राशि का चिन्ह वृषभ (बिना जोता हुआ बैल) होने से पुष्ट शरीर, मस्त चाल, मजबूत जंघाएं, बैल के समान नेत्र, स्वाभिमान एवं स्वच्छंद विचरण एवं शीतल स्वभाव इनकी प्रमुख विशेषता कही जा सकती हैं।

सामान्यतया वृषलग्न में उत्पन्न जातक सुंदर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी

आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। तथा उनको मानसिक संतुष्टि भी बनी रहती है। ये अत्यधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्राय: सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अत: इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने वाकचातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुंदर व आकर्षक होगा। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी पुरुष होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंगे साथ ही अपने सद्गुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को संतुष्ट करने में सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा विभिन्न विषयों कला, साहित्य एवं संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमत्ता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु रहेंगे तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी संस्था से संबंधित हो सकते हैं तथा इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा भी प्राप्त हो सकती है।

आपमें उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगे आपकी प्रवृत्ति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा, जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होती रहेगी। इस प्रकार आप स्वस्थ सुंदर आकर्षक व्यक्तित्त्व वाले विद्वान एवं साहसी पुरुष होंगे तथा आपका जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

वृष राशि भूमि तत्त्व प्रधान है। इसलिए ऐसे जातक मशीनरी व भूमि संबंधी कारोबार में विशेष रुचि लेते देखे गये हैं। इनकी इच्छा शक्ति बड़ी प्रबल होती है। ये बड़े धैर्यवान होते हैं। इनकी उन्नति प्राय: धीमी गति से होती है। यदि आपका जन्म 'रोहिणी नक्षत्र' में है तो केवल एक ही प्रकार का कार्य करने से आपको सफलता कम मिलेगी। आप अपनी बहुमुखी प्रतिभा को बढ़ायें। आपकी उन्नति तभी संभव है जब आप एक से अधिक कार्य हाथ में लें।

नक्षत्रानुसार फलादेश

ई-उ-ए	ओ-वा-वी-वू	वे-वो
कृतिका-2	रोहिणी-4	मृगशिरा-3

रोहिणी नक्षत्र

चरण	अंश से तक	चरण के नवमांश स्वामी	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उपनक्षत्र स्वामी अंश से तक
प्रथम	10.0.0 से 13.20.0	मं. मं.	शु. शु.	चं. चं.	चं 10.0.0 से 11.6.40 मं 11.6.40 से 11.53.20
द्वितीय	13.20.0 से 16.40.0	शु. शु.	शु. शु.	चं. चं.	रा. 11.53.20 से 13.53.20 गु. 13.53.20 से 15.40.0
तृतीय	16.40.0 से 20.0.0	बु. बु.	शु. शु.	चं. चं.	शु. 15.40.0 से 17.46.40 बु. 17.46.40 से 19.40.00
चतुर्थ	20.0.0 से 23.20.0	चं चं च	शु. शु. शु.	चं. च. चं.	के. 19.40.0 से 20.26.40 शु. 20.26.40 से 22.40.00 शु. 22.40.00 से 23.20.0

चरणानुसार रोहिणी नक्षत्र के फल

प्रजापते भें प्रियवाक् सुरूपः
शुचि सदा सत्यवचोः शशांके।

रोहिणी चंद्र को अतिप्रिय है। अतः इस नक्षत्र में जन्मी जातिका मीठा बोलने वाली होगी। चंद्र तो स्वयं सौन्दर्य है अतः वृष राशि में चंद्र नक्षत्र के अंशों में जन्मी जातिका सुन्दर तो होगी ही साथ ही अपने तरीके से व्यवस्थित रहना पसंद करेगी, सफाई पसंद व सत्य पक्षपातिनी होगी। कोमल स्वभाव की होगी।

रोहिणी नक्षत्र वृष राशि के अंतर्गत आता है। शुक्र और चंद्र में शत्रुता तो प्रसिद्ध है। परन्तु दोनों सौन्दर्शाली ग्रह हैं। इसको विधि विरंचि भी कहते हैं। यह ब्रह्मा का ही एक नाम है। ब्रह्मा द्वारा वेद ज्ञान विस्तृत हुआ अतः इस नक्षत्र का ज्ञान से भी घनिष्ठ सम्बन्ध है।

चंद्र की रोहिणी नक्षत्र स्थिति में स्थिति पर जातक परिजात अध्याय 6 में लिखा है-रोहिण्यां पर रन्ध्रवित्कृशतनु बोधी परस्त्रीरत:।

खासकर स्त्रियों के स्वभाव में जन्मजात पर छिद्रान्वेषण होता है। अत: रोहिणी में जन्मी स्त्री पर छिद्र जरुर दिखेंगे, ज्ञानी भी होगी। यदि पुरुष जातक हो तो परस्त्री पर रति होती है। रोहिणी का देवता ब्रह्मा है और स्वामी चंद्र होता है।

इसलिए स्त्री ग्रह चंद्र का अपने ही नक्षत्रों में होना स्त्री प्रेम को प्रकट करता है और जहां तक होता है स्त्री दुबले पतले शरीर की बनी रहती है। जिसमें आकर्षण रहता है। यद्यपि जलीय ग्रह से धीरे-धीरे मोटापा भी संभव है।

सौभाग्य च तथा पीड़ा भीरूत्व सत्यवादिता।
रोहिणी संभवस्यैव फलं पाद चतुष्टये॥

रोहिणी का प्रथम चरण–इसमें जन्मी जातिका सौभाग्यशालिनी होगी। इस चरण का स्वामी मंगल है व चंद्र का मित्र है। अत: धन व ख्याति योग भी देगा।

रोहिणी का द्वितीय चरण–इसमें चरण स्वामी शुक्र होने से चंद्र शुक्र के कारण जातिका को कुछ न कुछ पीड़ा बनी ही रहेगी।

रोहिणी का तृतीय चरण–इस चरण का स्वामी बुध एक नपुंसक ग्रह है। अत: जातिका डरपोक रहेगी। स्त्री की भीरूता भी उसका एक गुण है पर भावुक और डरपोक भाव दोनों का समावेश रहेगा क्योंकि चंद्र+बुध भी शत्रु ही हैं।

रोहिणी का चतुर्थ चरण–इस चरण का स्वामी चंद्र है। अत: राशि स्वामी शुक्र के गुणों को सत्यवादिता एवं सौन्दर्य दोनों को अपनायेगा। जातिका यथार्थ को जानेगी व सत्यप्रिय भी होगी।

आप स्त्री सूचक लग्न वाले हैं तथा वृष राशि अर्द्धजल लग्न भी कहलाता है। इसलिए गायन, नृत्यकला, सिनेमा तथा अभिनेता व अभिनेत्रियों के प्रति आपका झुकाव कुछ विशेष रहेगा। यदि आपका जन्म ''कृतिका'' नक्षत्र में है तो आप खूबसूरत व्यक्ति हैं। विपरीत लिंगी के प्रति आप शीघ्र आकर्षित हो जायेंगे और आप पायेंगे कि लड़कियां भी आपकी और सहज में आकर्षित हो जाएंगी। सेक्स के मामले में आप बहुत लचीले स्वभाव के हैं तथा मन पर आपका नियंत्रण संभव नहीं है। फिर भी सेक्स के मामले में आपको काफी हद तक सफलताएं मिलेगी।

कृतिका नक्षत्र

''*कृतिकाया: त्रय: पादा रोहिणी मृगशिरोर्द्ध, वृषभ:॥* इसमें कृतिका-सूर्य, रोहिणी-चंद्र, मृगशिर्ष-मंगल इन तीन ग्रहों की प्रधानता विद्यमान है। कृतिका नक्षत्र-स्वामी सूर्य/राशि वृष, राशि स्वामी शुक्र।''

चरणानुसार कृत्तिका नक्षत्र के फल

चरण	चरणों के अंश	नवांश चरण स्वामी	अंशों के उपस्वामी व अंश
द्वितीय	0/0/9 से 3/20/0	शु.	शु/सू./रा. 0/0/0 से 1.13.20 शु/सू/गु. 1/1320 से 3.0.0
तृतीय	3/21/0 से 6/40/0	श.	शु/सू./गु. 3/0/0 से 5.6.40 शु/सू./बु. 5/6/40 से 7.0.0
चतुर्थ	6/41/0 से 10/0/0	गु.	शु/सू./के. 7/0/0 से 7.46.40

''तेजस्वी बहुलोद् भव: प्रभुसमो अमरवेश्च विद्याधनो'' चंद्र कृतिका के नक्षत्र में हो व लग्न-कृत्तिका के नक्षत्र में हो एक ही बात है ऐसा जातक तेजस्वी जरूर होगा। क्योंकि कृतिका का स्वामी सूर्य है। देवताओं के सेनापति स्कंद की माताएं छ: कृतिकाएं थीं जिन्होंने तेजस्वी संतान को पुष्ट किया। यह जातिका पढ़ाई में चतुर होगी। यह सूर्य का विशेष गुण तेज है। परन्तु शुक्र व सूर्य में शत्रुता भी है। अत: सुंदर भी हो तेजस्वी भी हो पर स्थिर विचार न रहेंगे।

सूर्य के इस नक्षत्र में चंद्र (राशि) भी रहेगा तो सूर्य चंद्र मेल होगा। चंद्र अर्थात् मन पर तथा शरीर पर तेज की अनुभूति होगी।

अत: जब चंद्रमा रूपी व्यक्तित्व कृतिका से प्रभावित होगा तो उसमें प्रभुत्व होगा। अर्थात् उच्च स्तरीय स्थिति आयेंगी, राजकीय गुण आयेंगे। वृष में चंद्रमा उच्च का होता है प्रथम 3 अंश तक परमोच्च बनता है। चंद्र इस नक्षत्र में धन भी देता है, कारण दो लग्न द्योतक ग्रहों से युति है। वैसे सूर्य का बल भी बढ़ जाता है। अत: हो सकता है कि यह गुण सूर्य के नक्षत्र को चंद्रमा द्वारा लाभ पहुंचाना हो। चंद्र भी कृतिका नक्षत्र में हो-

स्यात् कृतिका स्वन्यकलभगमयी, प्रभूत रूकः ख्याति युतः सुतेज॥

कृतिका नक्षत्र का चंद्र जातक या जातिकाओं में एक दूसरे के प्रति आकर्षण देता है। अन्योन्य आकर्षण का स्वभाव बनता है। रोग भी शीघ्र प्रभावी होते हैं। सौन्दर्य के तेज के कारण प्रसिद्धि भी खूब मिलती है। बहुभोगी होना व रोगी होना, दो अवगुण निहित हैं। कारण सैक्स की उत्तेजना हो सकती है या भोजन की असावधानी से रोग संभव है।

कृत्तिका का दूसरा चरण–(0/0/0/0 से 1/3/20/0) स्वामी सूर्य, चरण स्वामी शनि का समन्वय है। अतः विज्ञान शास्त्र की जानकार हो सकती है, डॉक्टर हो सकती है। यह शनि का चरण तो है पर नक्षत्र स्वामी सूर्य है। अतः ज्ञान अनुभव दोनों का समावेश है।

कृत्तिका का तीसरा चरण–(1/3/20/0 से 2/6/40/0) इसमें राशि स्वामी शुक्र, नक्षत्र स्वामी सूर्य और चरण स्वामी शनि का समावेश है। उप नक्षत्र स्वामी शनि, बुध का भी समावेश होने से फल में कुछ अंतर है, अतः शूरवीरता तो आएगी। इस पाद का स्वामी भी शनि है परन्तु यहां शनि मकर राशि का न बनकर कुंभ राशि का बनेगा। अतः शूरवीर सूर्य के नक्षत्र में शनि का धीरज पाकर अधिक शौर्य का परिचय देगा।

कृत्तिका का चौथा चरण–(1/6/40/0 से /1/10/0/0) राशि स्वामी शुक्र, नक्षत्र स्वामी सूर्य, चरण स्वामी गुरु होगा, उप नक्षत्र स्वामी केतु या शुक्र होंगे। अतः जातक दीर्घायु होगा, संतान वाला होगा। कारण गुरु अपने शुभ प्रभाव से चंद्र द्वारा प्रदर्शित आयु को बढ़ा देगा। (क्योंकि चंद्र स्वयं लग्न होता है।) पुत्रोत्पत्ति में गुरु सहायक होगा।

चरणानुसार मृगशीर्ष नक्षत्र के फल

चरण	अंश से तक	चरण के नवमांश स्वामी	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उपनक्षत्र अंश से तक
प्रथम	23.21.0 से 26.40.0	सू. सू.	शु. शु.	मं. मं.	मं. 23.20.0 से 24.6.40 रा. 24.6.40 से 26.6.4
द्वितीय	26.40.0 से 30.0.0	बु. बु.	शु. शु.	मं. मं.	गु. 26.6.40 से 27.53.2 श. 27.53.20 से 30.00.0

वृष में 3-20-0 से 30-0-0 तक यह मंगल का नक्षत्र है। प्रथम 2 चरण वृषभ के अर्थात् शुक्र के अंतर्गत शेष 2 चरण बुध के अंतर्गत होंगे।

प्रथम 2 चरणों में मंगल+शुक्र+चरण स्वामी सूर्य व बुध का भाग रहेगा। अतः जातक उत्साही और भोगी दोनों ही बनेगा।

यहां वृष राशि सम्पूर्ण होती है।

1-26-40-0 से 1-30-0-0 तक।

उत्साह भोगार्थ युतो मृगांके,
भीरू पटुस्यात् चतुरः चलश्च॥

व्यक्ति धनी, चतुर, कुशल पर अंदर से डरा हुआ व चंचल स्वभाव वाला होगी।

प्रथम चरण–प्रथम चरण में व्यक्ति राजातुल्य बनता है। इसका स्वामी सूर्य राजा है। चंद्र अपने मित्र के द्वारा प्रभावित होकर राजसी ठाठ-बाट देता है।

द्वितीय चरण–द्वितीय चरण का स्वामी बुध है अतः बुध+मंगल में शत्रुता है। इनके चरण में चंद्र का होना स्वभाव में चौर्यवृत्ति लायेगा क्योंकि मंगल स्वयं सुन्दर है। स्वर्ण चोर ही स्वर्णकार बनते हैं। अतः कुछ छिपाने की, चोरी की आदत भी स्वभाव में होती है।

इसमें प्रधान ग्रह शनि है, सम ग्रह शुक्र है, शुभ शनि, बुध, सूर्य (मंगल) है। पाप ग्रह गुरु, चंद्र (शुक्र) मारक बुध, मंगल, गुरु, शुक्र, चंद्र राजयोग कर्त्ता शनि अकेला अल्प सुखद। बुध वृष राशि के जातक के गला व मुख को प्रभावित करती है। यह काल पुरुष का दूसरा भाव है। द्वितीय भाव भावेश वृष राशि एवं शुक्र पाप पीड़ित हो तो गले व मुख में रोग देंगे।

- ❑ यहां केवल बुध+सूर्य से कोई योग नहीं बनता चाहे यह युति कहीं भी हो।
- ❑ केवल शनि जब तक बुध व सूर्य से सम्बन्ध नहीं करता योगप्रद नहीं होता।
- ❑ वृषलग्न स्थिर लग्न है अतः नवम भाव व उसका स्वामी बाधक बनता है। यदि खर ग्रह व मांदि इसमें हो तो पूर्ण बाधक होता है। उसकी दशा आधी अच्छी और आधी खराब रहेगी।
- ❑ शनि अकेला शुभ दृष्ट हो व त्रिकोणेश और केन्द्रेश बुध व सूर्य से सम्बन्ध करे तो योगप्रद होगा।

वृषलग्न की जातिका का संपूर्ण प्रभाव

सत्य बोलने वाली, मन की बात जानने वाली, रहस्यवेत्ता अच्छे और विनम्र ढंग से काम करने वाली, पति को प्यारी और सभी कलाओं में चतुर तथा अपने परिवार का हित चाहने वाली तथा ब्राह्मण व गुरु देव की पूजक होती है। सभी का आदर भी करती है, खरीद फरोख्त में होशियार होती है।

वृष राशि के स्वभाव के कारण शुक्र+सूर्य+चंद्र+मंगल के मिश्रित प्रभाव से इसकी जितनी सुंदर आकृति होती है उतना ही अच्छा पति भी प्राप्त होता है। वृष का चंद्र 3 अंशों तक परमोच्च हाता है। आगे भी उच्च का तो रहता ही है। यह परस्पर बहुत प्रेम दर्शाती है। इसके स्थूल होंठ और नाक होते हैं। कफ प्रकृति बनती है।

धनवती और बहुत खर्च वाली होती है। यह दूसरे धर्मों का बहुत आदर करती है। और उन्हें मानती भी है। वृषलग्न में वृष के चंद्र को भी संघर्षप्रद माना गया है। इसके फल अच्छे कम हैं। अत: यह सब प्रकार के काम करने में कुशल होती है। लेकिन अपने परिवार वालों की कोई चिन्ता नहीं करती है। इसके सीमित संतान होती है। अपने समान स्त्री से सदा बैर भाव रखती है इनके नेत्र पांव और गर्दन में पीड़ा रहती है। कार्तिक का मास इसके लिए विशेष शुभ रहता है। अपने सभी महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में करें तो श्रेष्ठ फल प्राप्त होगा। इनको जीवन में 3 बार विशेष खतरा उठाना होता है। 7 वें वर्ष में जल भय रहता है। दसवें वर्ष में अग्नि से, 16 वें वर्ष में वात, कफ रोग का भय रहता है। अपघात व मृत्यु भूख, परिश्रम या जल तथा शूल रोग से बनती है। अगर काई अन्य मारक योग न बने तो आयु 78 वर्ष तक होती है।

वृष राशि व लग्न में स्थित ग्रहों के योग

- ❑ यदि लग्न में मंगल है तो शरीर पुष्ट होगा, परन्तु मांगलिक दोष बनेगा। व्यक्ति महान कंजूस होगा। चोट भी लग सकती है।
- ❑ लग्न में चंद्र विशेष धन योग नहीं करता। संसार में कम सुख मिलेगा। विवाह में बाधा आएगी।
- ❑ लग्न में शुक्र 'मालव्य योग' करेगा, श्रेष्ठ फल होगा। शुक्र पाप प्रभावी होगा तो गले में कष्ट रहेगा।
- ❑ लग्नेश शुक्र शरीर से सुंदर होगा। रंग यदि गोरा हो तो गैर से संपर्क भी कर सकता है। यदि रंग कुछ काला भी हो तो पति गौर वर्ण का मिलेगा, विलासनी होगी।
- ❑ लग्न में गुरु शुभ फल नहीं करेगा, वह शत्रुक्षेत्री होकर निर्बल रहेगा।
- ❑ लग्न के चंद्र पर सूर्य या बुध की दृष्टि हो तो उत्तम विद्यायोग बनेंगे।
- ❑ लग्नेश शुक्र की दशा भी अशुभ फल प्रदान करेगी।
- ❑ लग्न में गुरु+चंद्र दोनों हों, चुनाव में विजय होगी।
- ❑ पृथ्वी तत्त्व शनि लग्न में घमंडी बनायेगा, नीच व दुष्ट स्वभाव देगा। शनि से भी मांगलिक तुल्य बनेगी। विचार शून्य हो, नौकारी में सुख मिलेगा।
- ❑ लग्न में राहु+चंद्र हो तो विवाह तो जल्दी हो पर विधवा शीघ्र हो या विवाह के तीसरे दिन ही पति का एक्सीडेंट हो और धन हानि खूब होगी।
- ❑ लग्न में केतु हो तो पति पत्नी में झगड़ा बन रहेगा। यह भी मांगलिक तुल्य योग है।

- लग्न में शुक्र पाप पीड़ित हो तो शरीर प्रायः अस्वस्थ रहेगा।
- लग्न में सूर्य हो तो यह भी मांगलिक तुल्य दोष देता है। विवाह में देरी होती है या बाधा आती है। शरीर के किसी अंग में पीड़ा रहती है। सूर्य और शुक्र शत्रु हैं। अतः पेट या गले में विकार भी संभव हैं। पृथ्वी तत्त्व है और उसी तत्त्व का सूर्य होने से जातिक अति विश्वासी होगी। दृढ़ निश्चयवाली हो, उद्धार हो। ऊंचे विचारों के होने पर स्वाभिमानी हो। हल्के काम का तिरस्कार करने वाली, कुछ कठोर व न्याय चाहने वाली प्रमाणिक हो।
- सूर्य+मंगल+शनि+राहु या केतु ये 5 ग्रह भौम पंचक दोष वाले हैं। इनमें से चार ग्रह साथ रह सकते हैं तब प्रबल मांगलिक बनेगी। गुरु दृष्ट हो तो ठीक हैं वरना गृहस्थ सुख का प्रायः अभाव रहेगा। ऐसी कन्या का विष्णु से घट विवाह करके विवाह करना उत्तम फलदायक होगा।
- क्रूर ग्रह लग्न में हो तो दुष्ट कर्म करेगी यदि शुभ दृष्टि हो तो स्थिर बुद्धि होगी।
- चंद्र+मंगल लग्न में हो वह अंधी बनेगी। हठीली होगी और दुबली-पतली रहेगी।
- वृषलग्न चंद्र रोहिणी नक्षत्र के तीसरे चरण 16-40 से 20-0 मध्य स्वग्रही पर मिथुन नवांश में जाने से प्रेम विवाह देकर तलाक बनायेगा। मृगशिरा में 2 चरण 26-40 से 30-0 में शुक्र कन्या नवांश में जाकर विलम्ब से विवाह योग देगा, इतर यौन सम्बन्ध भी करेगा।
- सूर्य+चंद्र व पाप ग्रह लग्न में हो तो जातिक का चरित्र दूषित हो सकता है।
- लग्नेश शुक्र, बुध, गुरु और सूर्य 4 ग्रह लग्न में हो तो सुखी रहेगी।
- लग्न में गुरु+शनि युति हो तो भी ठीक योग नहीं होता। शनि के साथ अष्टमेश का योग है। घरेलू जीवन ठीक नहीं रहेगा।

यदि आपका जन्म 13 मई व 14 जून के बीच में हुआ है तो निश्चय ही आपका भाग्योदय 24 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो जाता है। बचपन बड़े ही आराम से व्यतीत होता है। यौवन काल में आपको भविष्य संवारने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

आपकी प्रकृति स्वार्थी है। अर्थात् आप अपने कार्य के प्रति पूर्णरूपेण, सजग व सचेत रहेंगे। आप कोरी भावनाओं में बह जाने वाले व्यक्ति नहीं हैं। खाली ख्याली पुलाव व कल्पना लोक में विचरण करने वाले व्यक्तियों में आपका नाम नहीं। आप कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं स्पष्टवादी हैं राजनीतिक, सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय भाग लेने

से आपको बहुमूल्य जायदाद प्राप्त हो सकती है। मित्र व संबधियों के स्नेह से आपकी आर्थिक उन्नति भी संभव है।

प्राय: वृषलग्न वाले जातक को व्यापार में रुचि रहती है, ऐसे जातक कुशल व्यापारी होते देखे गये हैं। नित नई, वेशभूषा पहनने व सुंदर ढंग से अलंकृत रहने का शौक इनको कुछ विशेष ही होता है। ये श्रृंगार प्रिय तथा कला मे रुचि लेने वाले व्यक्ति होते हैं। उत्तम व मिष्ठान भोजन के शौकीन होते हुए भी खुशबूदार वस्तुओं के बड़े रसिक होते हैं, कला की कद्र करना तथा किसी भी व्यक्ति के गुण अवगुण को परखने की कला इनमें खूब होती है। कुल मिलाकर ये शौकीन मिजाज तो होते ही हैं, इसके साथ वस्तु की बारीकी को पकड़ना व कार्य की गहराई में उतरना इनकी मौलिक विशेषता कही जा सकती है।

शुक्र एक विलासी, शीतल व सौम्य ग्रह है। यह रात्रि को हल्की श्वेत झलकदार किरणें बिखेरता है। अत: श्वेत रंग व साफ-सुथरी एवं ऐश्वर्य प्रधान वस्तुओं का व्यापार आपके अनुकूल कहा जा सकता है। आपका अनुकूल रत्न ''हीरा'' है।

❑❑❑

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि

1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु.	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	आ	0/30/0/0	1	गु.
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
ला	0/13/20/4/	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

वृष राशि

3. कृतिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चन्द्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं.	वे	0/26/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	मं.	वू	1/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

मिथुन राशि

5. **मृगशिरा** (मंगल)				6. **आर्द्रा** (राहु)				7. **पुनर्वसु** (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.	कु	2/10/0/0	1	गु.	के	2/23/20/0	1	मं.
की	2/6/40/0	4	मं.	घ	2/13/20/0	2	श.	को	2/26/40/0	2	शु.
				ङ	2/16/40/0	3	श.	हा	2/30/0/0	3	बु.
				छ	2/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

कर्क राशि

7. **पुनर्वसु** (गुरु)				8. **पुष्य** (शनि)				9. **आश्लेषा** (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.	हू	3/6/40/0	1	सू.	डी	3/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	हे	3/10/0/0	2	बु.	डू	3/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	हो	3/13/20/0	3	शु.	डे	3/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	डा	3/16/40/0	4	मं.	डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. मघा (केतु)				11. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)				12. उत्तरफाल्गुनी (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.	मो	4/16/40/0	1	सू.	टे	4/30/0/0	1	गु.
मी	4/6/40/0	2	शु.	टा	4/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
मू	4/10/0/0	3	बु.	टी	4/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
मे	4/13/20/0	4	चं.	टू	4/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)				13. हस्त (चन्द्र)				14. चित्रा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.	पू	5/13/20/0	1	मं.	पे	5/26/40/0	1	सू.
पा	5/6/40/0	3	श.	ष	5/16/40/0	2	शु.	पे	5/30/0/0	2	बु.
पी.	5/10/0/0	4	गु.	ण	5/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	ठ	5/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)				15. स्वाति (राहु)				16. विशाखा (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.	रू	6/10/0/0	1	गु.	ती	6/23/20/0	1	मं.
री	6/6/40/0	4	मं.	रे	6/13/20/0	2	श.	तू	6/26/40/0	2	शु.
–	–	–	–	रो	6/16/40/0	3	श.	ते	6/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	ता	6/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (गुरु)				17. अनुराधा (शनि)				18. ज्येष्ठा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.	ना	7/6/40/0	1	सू.	नो	7/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	नी	7/10/0/0	2	बु.	या	7/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	नू	7/13/20/0	3	शु.	यी	7/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ने	7/16/40/0	4	मं.	यू	7/30/0/0	4	शु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)				18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)				21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8/6/40/0	2	शु.	धा	8/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
या	8/10/0/0	3	बु.	फा	8/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
यी	8/13/20/0	4	चं.	ढा	8/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)				22. श्रावण (चन्द्र)				23. धनिष्ठा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.	खी	9/13/20/0	1	मं.	गा	9/26/40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9/16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु.
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	खो	9/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मंगल)				24. शतभिषा (राहु)				26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.	गो	10/10/0/0	1	गु.	ते	10/23/20/0	1	मं.
गे	10/6/40/0	4	मं.	ता	10/13/20/0	2	श.	तो	10/26/40/0	2	श.
–	–	–	–	ती	10/16/40/0	3	श.	दा	10/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	तू	10/19/0/04	4	गु.	–	–	–	–

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)				27. उत्तराभाद्रपद (शनि)				28. रेवती (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.	दू	11/6/40/4	1	सू.	दे	11/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	थ	11/10/0/0	2	बु.	दो	11/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	झ	11/13/20/0	3	शु.	चा	11/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ञ	11/16/40/0	4	गु.	ची	11/30/0/0	4	गु.

नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

क्र.	नक्षत्र	चरण अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृत्तिका	अ	मेष	मंगल	मेंढ़ा	राक्षस	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3.	कृत्तिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मेंढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वु	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाव	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 सिं.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि.2 मे. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मेंढ़ा	गुरु	16
8.	पुष्य	हु,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मेंढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मे. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मे	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मे. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मे. 1 मं. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	व्याघ्र	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2 मूषा 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 पू 1 स 1 मूर कु	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जा,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3 हि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाव	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाव	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू,गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाव	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 हि. 3 मे	राहु	18
26.	पूर्व भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मे. 2 सर्प	गुरु	16
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबुल

क्र.	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
1	अश्विनी	अश्विन	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व	सम	मित्र	मित्र
3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	स्व	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	स्व	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	स्व	मित्र
7.	पुनर्वसु	अदिति	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व	शत्रु	सम	सम	सम
8.	पुष्य	बृहस्पति	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	स्व	मित्र	मित्र
9.	आश्लेषा	सर्प	बुध	मित्र	शत्रु	सम	स्व	सम	मित्र	सम	सम	सम
10.	मघा	पितारस	केतु	शत्रु	महाशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
11.	पूर्व फा.	भग	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व	स्म	मित्र	मित्र
12	उ. फा.	अर्यमण	सूर्य	स्व	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
13.	हस्त	आदित्य	चन्द्रमा	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
14.	चित्रा	त्वसत्व	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	बृहस्पति	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	सम	सम	सम
17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	मित्र	शत्रु	सम	स्व.	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम
19.	मूल	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.
20.	पूर्वाषाढ़ा	जल	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व.	सम	मित्र	मित्र
21.	उ. षा.	विश्वदेव	सूर्य	स्व	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
23.	धनिष्ठा	अष्टवसु	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	स्व	मित्र
25.	पूर्वा भा.	अनेकपाद	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	सम	सम	सम
26.	उ. भा.	अहिर बुध्न	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
27.	रेवती	पूषा	बुध	मित्र	शत्रु	सम	स्व.	सम	मित्र	सम	सम	सम

वृषलग्न पर अंशात्मक फलादेश

वृषलग्न, चरण-1, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका
2. पद–2
3. नक्षत्र अंश–रा0/अ.30/क.0 से रा.1/अ. 3/क.20
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि– मीढा
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि
10. वर्णाक्षर–ई
11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रुता
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–द्वितीय शास्त्र विज्ञानम्

कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है, पर कृतिका नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। सूर्य ज्ञान का स्वामी है और शनि अनुभव का दोनों मिलाकर 'विज्ञान' होता है। इस नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति विविध शास्त्रों का ज्ञाता एवं अपने क्षेत्र का विशिष्ट विद्वान होता है।

लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था में है। कमजोर है। जातक लग्न बली नहीं होने से विकास रुका हुआ रहेगा। सूर्य, शनि व शुक्र की दशाएं अनिष्टफल देगी।

वृषलग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका
2. पद–2
3. नक्षत्र अंश–रा0/अ.30/क.0 से रा.1/अ. 3/क.20
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि– मीढा
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि
10. वर्णाक्षर–ई
11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रुता
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–द्वितीय शास्त्र विज्ञानम्

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं अन्य स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है पर कृतिका नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। सूर्य तेज व ज्ञान का कारक है और शनि अनुभव का, दोनों मिलकर 'विज्ञान' होता है। इस नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति शास्त्रों का ज्ञाता एवं अपने क्षेत्र का तेजस्वी विद्वान् होता है।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जातक लग्नबली एवं चेष्टावान् होगा। सूर्य व शनि की दशाएं अशुभ परन्तु लग्नेश शुक्र की दशा शुभ फल देगी।

वृषलग्न, अंश 2 से 3

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका
2. पद–2
3. नक्षत्र अंश–रा0/अ.30/क.0 से रा.1/अ. 3/क.20
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि– मीढा
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि
10. वर्णाक्षर–ई
11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रुता **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–द्वितीय शास्त्र विज्ञानम्

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है सूर्य तेज व ज्ञान का कारक है और शनि अनुभव का, दोनों मिलकर 'विज्ञान' होता है। इस नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति शास्त्रों का ज्ञाता एवं अपने क्षेत्र का तेजस्वी विद्वान् होता है।

लग्न दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी सूर्य, लग्न स्वामी शुक्र के प्रतिस्पर्धी होने के जातक को सूर्य व शुक्र दोनों की दशा संघर्ष पूर्ण होगी।

वृषलग्न, अंश 3 से 4

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका

2. पद–3

3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.3/क.20 से रा.1/अ. 6/क.40

4. वर्ण–वैश्य

5. वश्य–चतुष्पद

6. योनि– मीढा

7. गण–राक्षस

8. नाड़ी–अन्त्य

9. नक्षत्र देवता–अग्नि

10. वर्णाक्षर–ऊ

11. वर्ग–गरुड़

12. लग्न स्वामी–शुक्र

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रुता

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–तृतीये शौर्यभाग्यवेत्।

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है। सूर्य तेज का प्रतीक है और शनि अनुभव का, फलत: जातक शौर्यवान होगा, तेजस्वी होगा एवं भाग्यशाली होगा।

लग्न तीन से चार अंशों के भीतर होने से उदित अंशों वाला है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी सूर्य एवं लग्नेश शुक्र परस्पर प्रतिस्पर्धी हैं इससे जातक की सूर्य व शुक्र दोनों की दशा संघर्ष पूर्ण होगी।

वृषलग्न, अंश 4 से 5

1. **लग्न नक्षत्र**–कृतिका
2. **पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.3/क.20 से रा.1/अ. 6/क.40
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**– मीढा
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–अग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ऊ
11. **वर्ग**–गरुड़
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रुता
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–तृतीये शौर्यभाग्यवेत्।

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई स्त्रियों में आसक्त रहता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है जबकि कृतिका नक्षत्र के तीसरे चरण का स्वामी शनि है। ऐसा जातक शूरवीर होगा। भाग्यशाली होगा।

लग्न चार से पांच अंशों के भीतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जातक निश्चय ही पराक्रमी होगा।

वृषलग्न, अंश 5 से 6

1. **लग्न नक्षत्र**–कृतिका
2. **पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.3/क.20 से रा.1/अ. 6/क.40
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**– मीढा
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–अग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ऊ
11. **वर्ग**–गरुड़
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रुता
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–तृतीये शौर्यभाग्यवेत्।

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई

स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है जबकि कृतिका नक्षत्र के तीसरे चरण का स्वामी शनि है। ऐसा जातक शूरवीर होगा। भाग्यशाली होगा।

लग्न पांच से छ: अंशों के भीतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जातक निश्चय ही पराक्रमी होगा।

वृषलग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–कृतिका
2. **पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.6/क.40 से रा.1/अ. 10/क.0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**– मीढा
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–अग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ए
11. **वर्ग**–गरुड़
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–दीर्घायु बहुपुत्रश्च चतुर्थे चरणे भवेत्

कृतिका नक्षत्र में जंन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है जबकि कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। फलत: ऐसा जातक दीर्घायु एवं बहुत पुत्रों वाला होगा।

लग्न छ: से सात अंशों के भींतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी सूर्य, नक्षत्र चरण स्वामी बृहस्पति का मित्र है। फलत: जातक की सूर्य व बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में उन्नति होगी। जातक का विशेष भाग्योदय सूर्य, बृहस्पति एवं लग्नेश शुक्र की दशा में होगा।

वृषलग्न, अंश 7 से 8

1. **लग्न नक्षत्र**–कृतिका
2. **पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.6/क.40 से रा.1/अ. 10/क.0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**– मीढा
7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–अग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ए
11. **वर्ग**–गरुड़
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–दीर्घायु बहुपुत्रश्च चतुर्थे चरणे भवेत्

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है जबकि कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति दीर्घायु कर्त्ता एवं पुत्र सन्तति प्रदायक है। फलत: ऐसा जातक दीर्घायु एवं बहुत पुत्रों वाला होगा।

लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से उदित अंशों व बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी सूर्य, नक्षत्र चरण स्वामी बृहस्पति का मित्र है। फलत: जातक की सूर्य व बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में उन्नति होगी। जातक का विशेष भाग्योदय सूर्य, बृहस्पति एवं लग्नेश शुक्र की दशा में होगा।

वृषलग्न, अंश 8 से 9

1. **लग्न नक्षत्र**–कृतिका
2. **पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.6/क.40 से रा.1/अ. 10/क.0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**– मीढा
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–अग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ए
11. **वर्ग**–गरुड़
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–दीर्घायु बहुपुत्रश्च चतुर्थे चरणे भवेत्

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है जबकि कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति दीर्घायु कर्त्ता एवं पुत्र सन्तति प्रदायक है। फलत: ऐसा जातक दीर्घायु एवं बहुत पुत्रों वाला होगा।

लग्न आठ से नौ अंशों के भीतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी सूर्य, नक्षत्र चरण स्वामी बृहस्पति का मित्र है। फलतः जातक की सूर्य व बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में उन्नति होगी। जातक का विशेष भाग्योदय सूर्य, बृहस्पति एवं लग्नेश शुक्र की दशा में होगा।

वृषलग्न, अंश 9 से 10

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका
2. पद–4
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.6/क.40 से रा.1/अ. 10/क.0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि– मीढा
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि
10. वर्णाक्षर–ए
11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–दीर्घायु बहुपुत्रश्च चतुर्थे चरणे भवेत्

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य व देवता अग्नि है। कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति दीर्घायु कर्त्ता एवं पुत्र सन्तति प्रदायक है। फलतः ऐसा जातक दीर्घायु एवं बहुत पुत्रों वाला होगा।

वृषलग्न नौ से दस अंशों के भीतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी सूर्य, नक्षत्र चरण स्वामी बृहस्पति का मित्र है। फलतः जातक की सूर्य व बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में उन्नति होगी। जातक का विशेष भाग्योदय सूर्य, बृहस्पति एवं लग्नेश शुक्र की दशा में होगा।

वृषलग्न, अंश 10 से 11

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी
2. पद–1
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.10/क.40 से रा.1/अ. 13/क.20
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प
7. गण–मनुष्य

8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–ब्रह्मा
10. **वर्णाक्षर**–ओ
11. **वर्ग**–गरुड़
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चन्द्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–सौभाग्यं

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। जो चंद्रमा का मित्र है। फलत: ऐसा जातक सौभाग्यशाली व धनवान होगा।

वृषलग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था वाला है, बलवान है। लग्न नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरण स्वामी मंगल का मित्र है। फलत: चंद्रमा व मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी। लग्नेश शुक्र की दशा उन्नति में विशेष सहायक होगी।

वृषलग्न, अंश 11 से 12

1. **लग्न नक्षत्र**–रोहिणी
2. **पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.10/क.40 से रा.1/अ. 13/क.20
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–ब्रह्मा
10. **वर्णाक्षर**–ओ
11. **वर्ग**–गरुड़
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चन्द्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–सौभाग्यं

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा हैं। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। जो चंद्रमा का मित्र है। फलत: ऐसा जातक सौभाग्यशाली व धनवान होगा।

यहां वृषलग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था वाला है, बलवान है। लग्न नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरणस्वामी मंगल का मित्र है। फलत: चंद्रमा व मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी। लग्नेश शुक्र की दशा उन्नति में विशेष सहायक होगी।

वृषलग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी | **2. पद**–1

3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.10/क.0 से रा.1/अ. 13/क.20

4. वर्ण–वैश्य | **5. वश्य**–चतुष्पद

6. योनि–सर्प | **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–अन्त्य | **9. नक्षत्र देवता**–ब्रह्मा

10. वर्णाक्षर–ओ | **11. वर्ग**–गरुड़

12. लग्न स्वामी–शुक्र | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–चन्द्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. प्रधान विशेषता–सौभाग्यं

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। जो चंद्रमा का मित्र है। फलत: ऐसा जातक सौभाग्यशाली व धनवान होगा।

यहां वृषलग्न बारह से तेरह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था वाला है, बलवान है। लग्न नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरणस्वामी मंगल का मित्र है। फलत: चंद्रमा व मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी। लग्नेश शुक्र की दशा उन्नति में विशेष सहायक होगी।

वृषलग्न, अंश 13 से 14

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी | **2. पद**–2

3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.13/क.10 से रा.1/अ. 16/क.40

4. वर्ण–वैश्य | **5. वश्य**–चतुष्पद

6. **योनि**–सर्प

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–अन्त्य

9. **नक्षत्र देवता**–ब्रह्मा

10. **वर्णाक्षर**–वा

11. **वर्ग**–हरिण

12. **लग्न स्वामी**–शुक्र

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चन्द्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–पीड़ा

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है जो कि स्वयं लग्नेश है। नक्षत्र स्वामी चंद्रमा यहां शुक्र से शत्रु भाव रखता है। फलतः जातक को शारीरिक व मानसिक पीड़ा की अनुभूति होती रहेगी।

यहां वृषलग्न तेरह से चौदह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था वाला है, बलवान है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र, नक्षत्र चरणस्वामी शुक्र होने से एवं लग्न बनवान अंशों में होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 14 से 15

1. **लग्न नक्षत्र**–रोहिणी

2. **पद**–2

3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.13/क.10 से रा.1/अ. 16/क.40

4. **वर्ण**–वैश्य

5. **वश्य**–चतुष्पद

6. **योनि**–सर्प

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–अन्त्य

9. **नक्षत्र देवता**–ब्रह्मा

10. **वर्णाक्षर**–वा

11. **वर्ग**–हरिण

12. **लग्न स्वामी**–शुक्र

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चन्द्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–पीड़ा

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र

है जो कि स्वयं लग्नेश है। नक्षत्र स्वामी चंद्रमा यहां शुक्र से शत्रु भाव रखता है। फलत: जातक को शारीरिक व मानसिक पीड़ा की अनुभूति होती रहेगी।

यहां वृषलग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था वाला है, बलवान है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र, नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र होने से एवं लग्न बलवान अंशों में होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी

2. पद–2

3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.13/क.10 से रा.1/अ. 16/क.40

4. वर्ण–वैश्य

5. वश्य–चतुष्पद

6. योनि–सर्प

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–अन्त्य

9. नक्षत्र देवता–ब्रह्मा

10. वर्णाक्षर–वा

11. वर्ग–हरिण

12. लग्न स्वामी–शुक्र

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चन्द्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–पीड़ा

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है जो कि स्वयं लग्नेश है। नक्षत्र स्वामी चंद्रमा यहां शुक्र से शत्रु भाव रखता है। फलत: जातक को शारीरिक व मानसिक पीड़ा की अनुभूति होती रहेगी।

यहां वृषलग्न पन्द्रह से सोलह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है, बलवान है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र, नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र होने से एवं लग्न बलवान अंशों में होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी

2. पद–3

3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.16/क.40 से रा.1/अ. 20/क.0

4. वर्ण–वैश्य

5. वश्य–चतुष्पद

6. योनि–सर्प

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–अन्त्य

9. नक्षत्र देवता–ब्रह्मा

10. वर्णाक्षर–वी

11. वर्ग–हरिण

12. लग्न स्वामी–शुक्र

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चन्द्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–भीरुत्व

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। यह लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता रखता है। ऐसा जातक भीरु होता है। डरपोक स्वभाव का होता है।

यहां वृषलग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर होने से मध्यबली होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता है। फलत: चन्द्र व बुध की दशा नेष्ट परन्तु लग्न पूर्ण बली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी

2. पद–3

3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.16/क.40 से रा.1/अ. 20/क.0

4. वर्ण–वैश्य

5. वश्य–चतुष्पद

6. योनि–सर्प

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–अन्त्य

9. नक्षत्र देवता–ब्रह्मा

10. वर्णाक्षर–वी

11. वर्ग–हरिण

12. लग्न स्वामी–शुक्र

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चन्द्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–भीरुत्व

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। यह लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता रखता है। ऐसा जातक भीरु होता है। डरपोक स्वभाव का होता है।

यहां वृषलग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर होने से मध्यबली होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता है। फलत: चन्द्र व बुध की दशा नेष्ट परन्तु लग्न पूर्ण बली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नतिं होगी।

वृषलग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी 2. **पद**–3

3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.16/क.40 से रा.1/अ. 20/क.0

4. वर्ण–वैश्य 5. **वश्य**–चतुष्पद

6. योनि–सर्प 7. **गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–अन्त्य 9. **नक्षत्र देवता**–ब्रह्मा

10. वर्णाक्षर–वी 11. **वर्ग**–हरिण

12. लग्न स्वामी–शुक्र 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चन्द्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–भीरुत्व

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। यह लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता रखता है। ऐसा जातक भीरु होता है। डरपोक स्वभाव का होता है।

यहां वृषलग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से मध्यबली होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता है। फलत: चन्द्र व बुध की दशा नेष्ट परन्तु लग्न अंशों में बली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 19 से 20

1. **लग्न नक्षत्र**–रोहिणी
2. **पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.16/क.40 से रा.1/अ. 20/क.0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–ब्रह्मा
10. **वर्णाक्षर**–वी
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चन्द्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–भीरुत्व

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र होता है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। यह लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता रखता है। ऐसा जातक भीरु होता है। डरपोक स्वभाव का होता है।

यहां वृषलग्न उन्नीस से बीस अंशों के भीतर मध्यबली होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता है। फलतः चन्द्र व बुध की दशा नेष्ट परन्तु लग्न अंशों में बली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 20 से 21

1. **लग्न नक्षत्र**–रोहिणी
2. **पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.20/क.0 से रा.1/अ. 23/क.20
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–ब्रह्मा
10. **वर्णाक्षर**–वू
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चन्द्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चन्द्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व
18. **प्रधान विशेषता**–सत्यवादिता

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र और देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चन्द्र है। लग्न नक्षत्र स्वामी और नक्षत्र चरण स्वामी दोनों चन्द्र होने से व्यक्ति सत्यवादी होगा। सत्य की रक्षा के लिए सब कुछ करेगा।

यहां वृषलग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से मध्यबली होने से पूर्ण बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरण स्वामी भी चन्द्र होने से चंद्रमा की दशा शुभ फल देगी, परन्तु लग्न मध्यबली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 21 से 22

1. **लग्न नक्षत्र**–रोहिणी
2. **पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.20/क.0 से रा.1/अ. 23/क.20
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–ब्रह्मा
10. **वर्णाक्षर**–वू
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चन्द्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चन्द्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व
18. **प्रधान विशेषता**–सत्यवादिता

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र और देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चन्द्र है। लग्न नक्षत्र स्वामी और नक्षत्र चरण स्वामी दोनों चन्द्र होने से व्यक्ति सत्यवादी होगा। सत्य की रक्षा के लिए सब कुछ करेगा।

यहां वृषलग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर अवरोह अवस्था में होने से

थोड़ा उतार में है, फिर भी बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी चन्द्र होने से चंद्रमा की दशा शुभ फल देगी परन्तु लग्न मध्यबली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 22 से 23

1. **लग्न नक्षत्र**–रोहिणी
2. **पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.20/क.0 से रा.1/अ. 23/क.20 तक
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–ब्रह्मा
10. **वर्णाक्षर**–वू
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चन्द्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चन्द्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व
18. **प्रधान विशेषता**–सत्यवादिता

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चंद्रमा और देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चन्द्र है। लग्न नक्षत्र स्वामी और नक्षत्र चरण स्वामी दोनों चन्द्र होने से व्यक्ति सत्यवादी होगा। सत्य की रक्षा के लिए सब कुछ करेगा।

यहां वृषलग्न बाईस से तेईस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है, बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी चन्द्र होने से चंद्रमा की दशा शुभफल देगी, परन्तु लग्न मध्यबली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 23 से 24

1. **लग्न नक्षत्र**–मृगशिरा
2. **पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.23/क.20 से रा.1/अ. 26/क.40 तक
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–देव

8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–वे
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–नृपति

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। इन दोनों ग्रहों का संयोग राजयोग देता है। जातक नृपति, राजा होता है किंवा राजा के समान ऐश्वर्यवान होता है।

यहां वृषलग्न तेईस से चौबीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी मंगल और नक्षत्र चरण स्वामी सूर्य में मित्रता होने से सूर्य और मंगल दोनों की दशाएं शुभफल देंगी परन्तु लग्न मध्यबली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 24 से 25

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. पद–1
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.23/क.20 से रा.1/अ. 26/क.40 तक
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–वे
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–नृपति

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। इन दोनों ग्रहों का संयोग राजयोग देता है। जातक नृपति, राजा होता है किंवा राजा के समान ऐश्वर्यवान होता है।

यहां वृषलग्न चोबीस से पच्चीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी मंगल और नक्षत्र चरण स्वामी सूर्य में मित्रता होने से सूर्य और मंगल दोनों की दशाएं शुभफल देगी, परन्तु लग्न अंशों में बलवान होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 25 से 26

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. पद–1
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.23/क.20 से रा.1/अ. 26/क.40
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–वे
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–नृपति

मृगशिर नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटी दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। इन दोनों ग्रहों का संयोग राजयोग देता है। जातक नृपति, राजा होता है किंवा राजा के समान ऐश्वर्यवान होता है।

यहां वृषलग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी मंगल और नक्षत्र चरण स्वामी सूर्य में मित्रता होने से सूर्य और मंगल दोनों की दशाएं शुभफल देगी, परन्तु लग्न अंशों में बलवान होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 26 से 27

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. पद–2
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.20/क.40 से रा.1/अ. 26/क.40
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव

8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–चन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–वा
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–तस्करो

मृगशिर नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। मृगशिरा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी स्वामी से, नक्षत्र देवता से बुध की शत्रुता है। ऐसा जातक झूठ बोलने एवं चौर्य कार्य में रुचि लेगा।

यहां वृषलग्न छब्बीस से सताईस अंशों में अवरोह अवस्था में है, हीन बली है। नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी में परस्पर शत्रुता होने से मंगल और बुध की दशाएं नेष्ट फल देगी। लग्न यहां अवरोह होकर वृद्धावस्था में है। फलतः शुक्र की दशा-अन्तर्दशा जातक की उन्नति तो करायी पर विशेष भाग्योदय करने में सहायक न हो सकेगी।

वृषलग्न, अंश 27 से 28

1. **लग्न नक्षत्र**–मृगशिरा
2. **पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.20/क.40 से रा.1/अ. 26/क.40
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–चन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–वा
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–तस्करो

मृगशिर नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। मृगशिरा

नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी स्वामी से, नक्षत्र देवता से बुध की शत्रुता है। ऐसा जातक झूठ बोलने एवं चौर्य कार्य में रुचि लेगा।

यहां वृषलग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अंशों के मध्य अवरोह अवस्था में है, परन्तु वृषलग्न में अंशों की यह स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। यह विशिष्ट अवस्था है। लग्नेश शुक्र मीन राशि के 27 अंशों में परम उच्च का एवं कन्या राशि के 27 अंशों में परम नीच का होता है। अत: यहां 27 अंशों का बड़ा महत्त्व है। नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र चरा स्वामी में परस्पर शत्रुता है। फलतः मंगल व बुध की दशाएं नेष्ट है, परन्तु लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में अमूलचूक परिवर्तन का संकेत है। यह परिवर्तन शुभ भी हो सकता है। और अशुभ भी। शुक्र ग्रह की लग्न में स्थित एवं शुक्र के स्वयं का अंशों में बलाबल की अवस्था ही इस निर्णय में सहायक होगी।

वृषलग्न, अंश 28 से 29

1. लग्न नक्षत्र—मृगशिरा
2. पद—2
3. नक्षत्र अंश—रा1/अ.20/क.40 से रा.1/अ. 26/क.40
4. वर्ण—वैश्य
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—सर्प
7. गण—देव
8. नाड़ी—मध्य
9. नक्षत्र देवता—चन्द्र
10. वर्णाक्षर—वा
11. वर्ग—हरिण
12. लग्न स्वामी—शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी—बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—तस्करो

मृगशिर नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। मृगशिरा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी स्वामी से, नक्षत्र देवता से बुध की शत्रुता है। ऐसा जातक झूठ बोलने एवं चौर्य कार्य में रुचि लेगा।

यहां वृषलग्न अठ्ठाईस से उन्नतीा अंशों में होने से अवरोह अवस्था में हीनबली है, सारा तेज समाप्ति की ओर है। नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में शत्रुभाव है। लग्नेश शुक्र अंशों में मृत हो चुका है। फलतः मंगल, बुध एवं शुक्र की दशाएं नेष्ट फल देगी। यह तथ्य फलादेश करते समय ध्यान में रखना चाहिए।

वृषलग्न, अंश 29 से 30

1. लग्न नक्षत्र—मृगशिरा
2. पद—2
3. नक्षत्र अंश—रा1/अ.20/क.40 से रा.1/अ. 26/क.40
4. वर्ण—वैश्य
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—सर्प
7. गण—देव
8. नाड़ी—मध्य
9. नक्षत्र देवता—चन्द्र
10. वर्णाक्षर—वा
11. वर्ग—हरिण
12. लग्न स्वामी—शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी—बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—तस्करो

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। मृगशिरा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी स्वामी से, नक्षत्र देवता से बुध की शत्रुता है। ऐसा जातक झूठ बोलने एवं चौर्य कार्य में रुचि लेगा।

यहां वृषलग्न उन्नतीस से तीस अंशों में होने से अवरोह अवस्था में मतावस्था (Combust) है। निस्तेज है। नक्षत्र स्वमी मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुभाव है। लग्नेश शुक्र अंशों में मृत हो चुका है। फलतः मंगल, बुध एवं शुक्र की दशाएं नेष्ट फल देगी। यह तथ्य फलादेश करते समय विशेष रुप से ध्यान में रखना चाहिए।

❑❑❑

वृषलग्न और आयुष्य योग

1. वृषलग्न के लिये यद्यपि बुध मारकेश पर अष्टमेश गुरु मारकेश का कार्य करेगा। चंद्रमा परमपापी है और शुक्र कभी-कभी अशुभ फलदायक भी होगा। आयुष्य प्रदाता ग्रह शुक्र है।
2. वृषलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु गुप्त एवं गुदारोग से, सर्प, कीट, पशु या अपने ही जन्म स्थान के निवासी द्वारा होना सम्भव है।
3. वृषलग्न वाले व्यक्तियों की औसत आयु 85 वर्ष मानी गई है। जन्म के उपरान्त 3, 5, 6, 8, 13, 17, 20, 21, 28, 33, 42, 52, 62, 63, 71 और 78 वर्ष में अल्पभय या शारीरिक रोगों के प्रकोप का भय रहता है।
4. वृषलग्न में चंद्रमा, बुध, शुक्र एवं गुरु के साथ लग्न में हो तो और बचे हुये सभी ग्रह द्वितीय भाव में हों तो जातक इन्द्र के समान चिरंजीवी एवं यशस्वी होता है।
5. यदि वृषलग्न में शुक्र एवं बृहस्पति केन्द्र में हो और अन्य सारे ग्रह तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें भाव में हों तो ऐसा जातक चिरंजीवी होता है।
6. वृषलग्न में वृष का नवमांश हो, शुक्र गोपुरांश से होकर तीसरे या ग्यारहवें स्थान में हो तो जातक ब्रह्मा के समान यशस्वी एवं चिरंजीवी होता है।
7. वृषलग्न में मंगल हो, गुरु एवं बुध केन्द्रवर्ती हो, चंद्रमा गोपुरांश में हो तो जातक यशस्वी एवं चिरंजीवी होता है।
8. वृषलग्न में सूर्य एवं मंगल आठवें तथा सिंह का बृहस्पति केन्द्र में हो तो व्यक्ति सौ वर्ष की स्वस्थ शतायु को भोगता है।
9. वृषलग्न में शनि उच्च का छठे भाव में जातक को दीर्घायु देता है।
10. वृषलग्न में बृहस्पति बैठा हो तथा शुक्र उसे देखता हो तो जातक सौ वर्ष की दीर्घायु को प्राप्त करता है।
11. वृषलग्न में चंद्रमा छठे तुला का हो, अष्टम स्थान में कोई पापग्रह न हो तथा सभी शुभग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

12. वृषलग्न में लग्नेश शुक्र लग्न को देखता हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो व्यक्ति 85 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

13. वृषलग्न में वृश्चिक का मंगल यदि दशम भाव को देखे तथा बुध एवं शुक्र की युति केन्द्र-त्रिकोण में हो तो जातक 85 वर्ष की आयु को भोगता है।

14. वृषलग्न में शनि मेष का बारहवें, मंगल कन्या का पांचवे एवं सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु प्राप्त करता है।

15. वृषलग्न में कुम्भ का बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ केन्द्र में हो तो ऐसा जातक ख्याति प्राप्त विद्वान होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

16. वृषलग्न में शुक्र हो, तथा बुध और शनि केन्द्र में हो, तीसरे भाव में उच्च का गुरु, एकादश में कोई भी शुभ ग्रह हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

17. शनि यदि लग्न में, सिंह का चंद्रमा चौथे, मंगल वृश्चिक का सातवें, सूर्य दसवें स्थान में किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

18. वृषलग्न में अष्टमेश गुरु सातवें हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

19. वृषलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें या द्वादश भाव में हो तो जातक सैद्धान्तिक विद्वान होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. वृषलग्न में लग्नेश शुक्र अष्टम भाव मे पाप ग्रहों के साथ हो, अष्टमेश गुरु पाप ग्रहों के साथ छठे भाव में, शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा व्यक्ति मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

21. वृषलग्न मे शनि+मंगल हो, चंद्रमा आठवे एवं बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

22. वृषलग्न के द्वितीय एवं द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश शुक्र निर्बल हो, लग्न, द्वितीय एवं द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

23. वृषलग्न में मेष का बृहस्पति एवं मीन का मंगल परस्पर एक दूसरे के घर मे बैठने से बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

24. वृषलग्न में शनि+राहु+मंगल+चंद्रमा सातवें भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक ज्यादा नहीं जीता।

25. वृषलग्न में छठे स्थान में सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

26. वृषलग्न में द्वादशस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

27. वृषलग्न में तृतीयस्थ मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

28. वृषलग्न में लग्नेश शुक्र एवं लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पापग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन में निराश होकर आत्महत्या करता है।

29. वृषलग्न का षष्ठेश शुक्र सप्तम या दशम भाव मे हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक शुभकृत अभिचार से पीडित रहता है।

30. वृषलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, शनि सातवें हो तो जातक देवता के शाप अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

31. वृषलग्न मे निर्बल चंद्रमा अष्टम में शनि के साथ हो तो जातक पिशाच बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है एवं अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

वृषलग्न और रोग

1. वृषलग्न में षष्टेश शुक्र लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जल स्राव से अंधा होता है।
2. वृषलग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश सूर्य पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. वृषलग्न में चतुर्थेश सूर्य यदि अष्टमेश गुरु के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. वृषलग्न में चतुर्थेश सूर्य, तुला या मकर राशि का हो अथवा अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. वृषलग्न में सिंह का शनि चतुर्थ में हो, तथा सूर्य एवं षष्टेश शुक्र पाप ग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. वृष लग्न में चौथे एवं पांचवें भाव में पाप ग्रह हो, सूर्य नीच का हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. वृषलग्न में सिंह का शनि एवं कुंभ का सूर्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है पर जातक उपाय करने से बच जाता है।
8. वृषलग्न में चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश शुक्र निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
9. वृषलग्न में वृश्चिक का सूर्य पाप ग्रहों के मध्य हो, पाप दृष्ट हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. वृषलग्न में शुक्र+सूर्य+बुरु की युति दुःस्थान में हो तो वाहन दुर्घटना से मृत्यु होती है।
11. वृषलग्न में पाप ग्रह हो, लग्न का स्वामी शुक्र बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

12. वृषलग्न में क्षीण चंद्रमा स्थित हो, लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति सदैव रोगी रहता है।

13. वृषलग्न में अष्टमेश गुरु लग्न में एवं लग्नेश शुक्र अष्टम में हो, लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता। सदैव रोगी रहता है।

14. वृषलग्न में शुक्र चौथे या बारहवें भाव में मंगल+बुध के साथ हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

15. वृषलग्न मे शनि+चंद्रमा से युत बृहस्पति छठे हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

16. वृषलग्न में शनि मेष का बारहवें, मंगल कन्या का पांचवें एवं सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु प्राप्त करता है।

17. वृषलग्न में कुंभ का बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ केंद्र में हो ऐसा जातक ख्याति प्राप्त विद्वान होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

18. वृषलग्न में शुक्र हो, तथा बुध और शनि केंद्र में हो, तीसरे भाव में उच्च का गुरु तथा एकादश में कोई भी शुभ ग्रह हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

19. शनि यदि लग्न में, सिंह का चंद्रमा चौथे, मंगल वृश्चिक का सातवें, सूर्य दसवें स्थान में किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. वृषलग्न में अष्टमेश गुरु सातवें हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

21. वृषलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें या द्वादश भाव में हो तो जातक सैद्धांतिक विद्वान होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

22. वृषलग्न में लग्नेश शुक्र अष्टम भाव में पाप ग्रहों के साथ हो, अष्टमेश गुरु पाप ग्रहों के साथ छठे भाव में, शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा व्यक्ति मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

23. वृषलग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

24. वृषलग्न के द्वितीय एवं द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश शुक्र निर्बल हो,

लग्न द्वितीय एवं द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

25. वृषलग्न में मेष के बृहस्पति एवं मीन के मंगल के परस्पर एक-दूसरे के घर में बैठने से 'बालारिष्ठ योग' बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

26. वृषलग्न में शनि+राहु+मंगल+चंद्रमा सातवें भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक ज्यादा नहीं जीता।

27. वृषलग्न में छठे स्थान में सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है।

28. वृषलग्न में द्वादशस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है।

29. वृषलग्न में तृतीयस्थ मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है।

30. वृषलग्न में लग्नेश शुक्र एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन में निराश होकर 'आत्महत्या' करता है।

31. वृषलग्न का षष्ठेश शुक्र सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

32. वृषलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, शनि सातवें हो तो जातक देवता के शाप अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

33. वृषलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टमा में शनि के साथ हो तो जातक पिशाच बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है एवं अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

वृषलग्न और धनयोग

वृषलग्न में जन्म लेने वाले जातकों के लिए धन प्रदाता ग्रह बुध है। धनेश बुध की शुभाशुभ स्थिति में, धन स्थान में संबंध जोड़ने वाले ग्रहों की स्थिति एवं योगायोग, बुध एवं धन स्थान पर पड़ने वाले ग्रहों के दृष्टि संबंध से जातक की आर्थिक स्थिति आय के स्रोत्रों तथा चल, अचल सम्पत्ति का पता चलता है। लग्नेश शुक्र भाग्येश शनि एवं लाभेश बृहस्पति की अनुकूल स्थितियां वृषलग्न वालों के लिए धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को बढ़ाने में पूर्ण रुप से सहायक होती हैं।

वैसे वृषलग्न के लिए गुरु, शुक्र और चन्द्र अशुभ हैं। शनि और बुध अल्प अशुभ हैं। अकेला शनि राजयोग करता है। गुरु अष्टमेश होने से मारक का फल देता है। सूर्य शुभ फलदायक है। परमपापी चंद्रमा व गुरु हैं। योगकारक सूर्य, बुध व शनि ही हैं।

शुभ योग–बुध+शनि।

अशुभ योग–बुध+गुरु, शुक्र+मंगल।

सफल योग–शुक्र+शनि, सूर्य+बुध, सूर्य+शनि।

निष्फल योग–शुक्र+बुध, मंगल+बुध।

लक्ष्मी योग–शनि नवम में या सप्तम में, बुध द्वितीय या पंचम में।

विशेष योगायोग

1. वृषलग्न में बुध, मिथुन या कन्या राशि में हो तो व्यक्ति धनवान होता है।
2. वृषलग्न में शनि, मकर, कुम्भ का तुला राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से बहुत धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति धन के मामले में भाग्यशाली होता है।
3. वृषलग्न में शुक्र हो, शनि, बुध से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक शहर का प्रतिष्ठित धनवान होता है।

4. वृषलग्न में बुध एवं शनि परस्पर परिवर्तन योग करके बैठे हों अर्थात् बुध, मकर या कुम्भ राशि में हो तथा शनि, मिथुन या कन्या राशि में हो तो जातक अपने पुरुषार्थ एवं पराक्रम से धनवान बनता है तथा खूब धन कमाता है।
5. वृषलग्न में यदि बुध एवं बृहस्पति परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है तथा जीवन में अत्यधिक धन अर्जित करता है।
6. वृषलग्न में बुध पंचम भाव में हो, मीन का बृहस्पति लाभ स्थान में चंद्रमा या मंगल के साथ हो तो "महालक्ष्मी योग" बनता है। ऐसे जातक के पास अटूट लक्ष्मी होती है। जातक अपने भुजबल से शत्रुओं का नाश करता हुआ राज्यलक्ष्मी को भोगता है।
7. वृषलग्न में चंद्रमा हो, साथ में मंगल हो तो जातक का भाग्योदय 24 से 28 वर्ष की आयु के मध्य होता है। ऐसा जातक अपने पराक्रम, पुरुषार्थ से खूब धन कमाता है।
8. वृषलग्न में शनि केन्द्र-त्रिकोण में हो, बुध धन स्थान या पंचम भाव में स्वगृही हो तो जातक कीचड़ में कमल की तरह आगे बढ़ता है। अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर भी धीरे-धीरे अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करता हुआ, 32 वर्ष की आयु के बाद लक्षधिपति, कोट्याधिपति हो जाता है।
9. वृषलग्न में शुक्र, चंद्रमा और सूर्य की युति हो तो जातक महाधनी होता है।
10. वृषलग्न हो, पंचम भाव में बुध हो तथा लाभ स्थान मीन राशि में चन्द्र, मंगल हो तो व्यक्ति महालक्ष्मीवान होता है।
11. वृषलग्न में शुक्र लाभ स्थान में तथा लाभेश गुरु लग्न स्थान में हो तो जातक 33वें वर्ष में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्व अर्जित धन-लक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।
12. वृषलग्न हो, लग्नेश शुक्र, धनेश बुध, भाग्येश शनि एवं लाभेश गुरु अपनी-अपनी उच्च या स्वराशियों में हों तो जातक करोड़पति होता है।
13. वृषलग्न में पंचम भाव में राहु, शुक्र, मंगल और शनि इन चार ग्रहों की युति हो तो जातक अरबपति होता है।
14. वृषलग्न में धनेश बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो "धनहीन योग" की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे व्यक्ति के पास धन नहीं ठहर पाता। सदैव रुपयों की कमी बनी रहती है। इस दुर्योग की निवृत्ति हेतु गले में

"बुधयंत्र" धारण करना चाहिये। पाठक चाहे तो "बुधयंत्र" हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

15. वृषलग्न में धनेश बुध यदि आठवें स्थान में हो परन्तु सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि में गड़े हुये धन की प्राप्ति होती है अथवा लॉटरी से भी रुपया मिल सकता है। पर रुपया पास में टिकेगा नहीं।

16. बुध एवं शनि द्वितीय स्थान में हो तो धन प्राप्ति होती है।

17. सूर्य वृश्चिक का हो तथा शुक्र, सिंह का हो तो ससुराल से धन प्राप्त होता है।

18. शुक्र, मिथुन का हो, बुध मीन का हो, गुरु ध्रुव केन्द्र में हो तो जातक को यकायक अर्थ की प्राप्ति होती है।

19. वृषलग्न हो और मंगल, बुध, गुरु साथ हों तो बुध की महादशा में जातक पर कर्ज होता है।

20. लग्न में शुक्र व मंगल हो और नवम् में मकर का गुरु हो तो बुध व गुरु की दशा में भाग्योदय होगा।

21. वृषलग्न हो, उसमें पूर्ण का चंद्रमा स्थित हो, कुंभ में शनि, सिंह में सूर्य, वृश्चिक में गुरु हो तो अधिक सम्पत्ति, वाहन व प्रभुता की प्राप्ति होती है।

22. राहु लग्न या 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12 भाव में से कहीं भी स्थित हो एवं मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मीन में से किसी में स्थित हो तो जातक अवश्य ही धनी होता है।

23. वृषलग्न हो तथा सूर्य, बुध साथ हों तथा वृश्चिक के अतिरिक्त कहीं भी बैठे हों तो जातक बहुत बड़ा व्यापारी होता है।

24. लाभेश द्वादश स्थान में हो या भाग्येश, दशमेश व्यय स्थान में हों तो जातक दिवालिया होता है।

25. बुध (द्वितीयेश) 9, 10, 11 भावों में हो तो जातक दिवालिया होता है।

26. लग्नेश शुक्र वक्री होकर 6, 8, 12वें स्थान में हो तो जातक अवश्य ही दिवालिया होता है।

27. चंद्रमा वृश्चिक का हो तथा लग्नेश सुख भाव में स्थित हो तो जातक को ससुराल से धन प्राप्त होगा।

28. लग्नेश लग्न में ही हो तथा दशम पति व चतुर्थेश परस्पर स्थान परिवर्तन करते हों तो छाप होने से जातक धनवान होता है।

29. सूर्य-बुध सुख भवन में, शनि-चंद्र 10वें, मंगल वृष का हो तो जातक राजा के तुल्य ऐवश्र्य भोगता है।

30. वृषलग्न हो तथा नवमेश-दशमेश का संबंध भाग्य भाव में हो, चतुर्थेश-पंचमेश का संबंध चतुर्थ भाव में हो तो जातक लक्ष्याधिपति होता है।

31. शनि व मंगल 7वें भाव में हो तथा उन पर अन्य ग्रहों की दृष्टि न हो तो दतक जाने का योग बनता है।

32. वृषलग्न में मंगल यदि वृश्चिक या मकर राशि में हो तो "रुचक योग" बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

33. वृषलग्न में सुखेश सूर्य, लाभेश गुरु यदि नवम भाव में हो तथा नवम भाव मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति को अनायास धन प्राप्ति होती है।

34. वृषलग्न में गुरु+चंद्र की युति मिथुन, सिंह, कन्या या मकर राशि में हो तो इस प्रकार के गजकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत से अकल्पनीय धन मिलता है।

35. वृषलग्न में धनेश बुध अष्टम में एवं अष्टमेश गुरु धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

36. वृषलग्न में तृतीयेश चन्द्र लाभ स्थान में एवं लाभेश गुरु तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र एवं भागीदारों से धन की प्राप्ति होती है।

37. वृषलग्न में बलवान बुध के साथ यदि चतुर्थेश सूर्य की युति हो तो व्यक्ति को माता द्वारा, अनुचरों द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

38. वृषलग्न में यदि बलवान बुध की सूर्य से युति हो, पंचम भाव बृहस्पति से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

39. वृषलग्न में बलवान बुध की यदि षष्टेश शुक्र से युति हो तथा धनेश बुध शनि या मंगल से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

40. वृषलग्न में बलवान बुध की सप्तमेश मंगल की युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के पश्चात् होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

41. वृषलग्न में बलवान बुध की नवमेश शनि से युति हो तो ऐसा जातक राजा, राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियों एवं सरकारी ठेकों से काफी धन कमाता है।

42. वृषलग्न में बलवान बुध की दशमेश शनि से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा संरक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

43. वृषलग्न में दशम भवन का स्वामी शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता, जन्म स्थान में नहीं कमा पाता तथा उसके जीवन में सदैव धन की कमी बनी रहती है।

44. वृषलग्न में लग्नेश बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं तुला राशि का सूर्य छठे स्थान में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन क मामले में सदैव कमजोर होता है।

45. वृषलग्न में द्वितीय भाव में यदि पाप ग्रह हो तथा लाभेश गुरु यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्री होता है।

46. वृषलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा बृहस्पति से यदि छठे, आठवें एवं बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

47. वृषलग्न में धनेश बुध अस्त हो, नीच राशि (मीन) में हो तथा धन स्थान एवं अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है। उसके सिर से कर्जा नहीं उतरता।

48. वृषलग्न में लाभेश गुरु यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तंगत एवं पाप पीड़ित हो तो व्यक्ति महादरिद्री होता है।

49. वृषलग्न में अष्टमेश गुरु वक्री होकर कहीं बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धन हानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश भारी नुकसान हो सकता है, फलस्वरुप सावधान रहें।

50. वृषलग्न में अष्टमेश गुरु शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत या अस्तंगत हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

वृषलग्न और विवाहयोग

1. सूर्य वृश्चिक का हो तथा शुक्र सिंह का हो तो ससुराल से धन प्राप्त होता है।
2. गुरु सप्तम भाव में हो तो पत्नी को गर्भावस्था में अनिष्ट कर एवं जीवन-हानि होती है।
3. चंद्रमा वृश्चिक का हो तथा लग्नेश सुख भाव में स्थित हो तो ससुराल से धन प्राप्त होगा।
4. सप्तमेश बुध युक्त न होकर 6/8/12वें भाव का हो या नीच का या अस्तगत हो तो विवाह ही नहीं होता या विधुर होता है।
5. मंगल या शुक्र 3/6/10/11/7वें स्थान में हो तो विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है। भाग्येश शनि से 36वां वर्ष भाग्योदय का होता है।
6. मंगल वृश्चिक का हो तथा यदि शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो जातक दूसरा विवाह करता है तथा उससे भी मतभेद रहता है।
7. वृषलग्न में शनि सप्तमस्थ चंद्रमा के साथ हो तथा लग्न में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है पर अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
8. वृषलग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीय भाव में सूर्य हो तथा लग्नेश शुक्र निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
9. वृषलग्न में शनि छठे हो, सूर्य अष्टम में हो एवं सप्तमेश मंगल बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
10. वृषलग्न में सूर्य, शनि एवं शुक्र की युति कहीं भी हो तथा सप्तमेश मंगल बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
11. वृषलग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि में हो, सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

12. वृषलग्न में द्वितीयेश बुध अस्त हो द्वितीय भाव में कोई ग्रह वक्री हो तो विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

13. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अन्तर्जातीय विवाह करता है।

14. वृषलग्न में सप्तमेश मंगल वक्री हो, सप्तम भाव में कोई भी ग्रह वक्री हो या किसी वक्र ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अनेक अवरोध आते हैं। विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

15. वृषलग्न में राहु यदि सातवें हो तो स्त्री वैधव्य दु:ख को भोगती है।

16. वृषलग्न में चंद्रमा स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) में हो तो ऐसी कन्या अक्षत योनि होती है।

17. वृषलग्न में सूर्य आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री अपने सुख के खातिर, नित नये वस्त्र-अलंकार पहन कर पर पुरुषों का संग करती है।

18. वृषलग्न में सप्तम भावस्थ मंगल पर.शनि की दृष्टि हो तो जातक में प्रबल वासना देखी गई है। ऐसा जातक स्त्री के यौनांग का स्पर्श अपने मुंह से करता है। यदि ऐसे मंगल के साथ राहु हो तो जातक अपनी आश्रम में रहने वाली दासी तथा सेविका से यौन संबंध रखता है।

19. वृषलग्न में यदि कुम्भ का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री अन्य स्त्री की सहायता से अपनी कामपिपासा को शान्त करती है अर्थात् अपने साथ साथ रमण करने के लिये अन्य स्त्री से पुरुष का आचरण कराती है। यदि पुरुष की कुण्डली में यह योग हो तो वह समलैंगिक यौनाचार करता है।

20. वृषलग्न में मंगल आठवें हो तो स्त्री मृगनयनी एवं कुटिल स्वभाव की होती है तथा प्रेम विवाह में विश्वास रखती है।

21. वृषलग्न में शनि राहु सातवें एवं मंगल छठे हो तो विवाहित स्त्री को पति होते हुए भी पति का सुख नहीं मिलता। पति से शारीरिक सम्पर्क नहीं होता तथा दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण रहता है।

22. वृषलग्न में चंद्रमा यदि (2/4/6/8/10/12) राशियों में हो तो ऐसी स्त्री अत्यन्त कोमल व मृदु स्वभाव की होती है।

23. वृषलग्न में यदि बुध, गुरु, शुक्र व मंगल बलवान हो तो ऐसी स्त्री विख्यात, विदुषी एवं सच्चरित्र वाली होती है।

24. वृषलग्न में मगल का नवमांश हो अथवा सप्तम भाव पर शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री की योनि में रोग होता है।

25. जातक परिजात के अनुसार वृषलग्न में उत्पन्न कन्याएं सुन्दर होती हैं। यदि लग्न में चंद्रमा हो तो ऐसी स्त्री पति की प्यारी होती है।

26. वृषलग्न में सप्तमेश मंगल या शुक्र वृष, सिंह, वृश्चिक या कुम्भ राशि में हो तथा चंद्रमा चर राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में हो तो ऐसे जातक का विवाह बिलम्ब से होता है।

27. वृषलग्न में स्वगृही शुक्र लग्नस्थ हो तथा गुरु साथ में हो तो "द्विभार्यायोग" बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

28. वृषलग्न में सप्तमेश मंगल यदि द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो पूर्ण व्यभिचारी योग बनता है। ऐसा पुरुष जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ सम्भोग करता है।

29. वृषलग्न में राहु शनि, सातवें शुभ ग्रहों में दृष्ट न हो तथा मंगल मीन राशि में हो तो ऐसे पुरुष को पत्नी व संतान दोनों का सुख नहीं होता अर्थात् न पत्नी होती है न संतान। इनको प्रेम प्रसंग में धोखा मिलता है तथा गुप्त धंधे में विश्वासघात होता है।

30. वृषलग्न में मेष का राहु बारहवें हो तो स्त्री विधवा होती है।

31. वृषलग्न में तुला का शनि छठे हो एवं षड्वाशिद्ध सूर्य तृतीय में हो तो ऐसी स्त्री राजपत्नी, धर्म पर अखण्ड प्रेम रखने वाली पति की प्राणवल्लभा होती है।

❑❑❑

वृषलग्न एवं संतान योग

1. वैसे वृषलग्न अल्प सन्तति वाला है। वृषलग्न में पंचमेश बुध आठवें हो तो जातक के अल्प सन्तति होती है।
2. वृषलग्न में पंचमेश बुध अस्त हो या पापग्रस्त होकर छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति के पुत्र नहीं होता।
3. वृषलग्न में पंचमेश बुध लग्न (वृष राशि) में हो, तथा बृहस्पति से युत या दृष्ट हो तो जातक के प्रथम पुत्र होता है।
4. वृषलग्न मे मंगल हो, पंचमस्थ सूर्य हो तथा शनि आठवें हो तो जातक की जवानी बीत जाने पर, बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
5. वृषलग्न में शनि हो, बृहस्पति आठवें एवं मंगल बारहवें हो तो जातक की जवानी बीत जाने पर बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
6. वृषलग्न में पाप ग्रह हो, बृहस्पति से पांचवे भी पाप ग्रह हो, चंद्रमा ग्यारहवें मीन राशि का हो तो व्यक्ति की जवानी बीत जाने से बाद, बहुत प्रयत्न करने से पुत्र होता है।
7. वृषलग्न में बुध लग्न में हो तथा लग्नेश शुक्र पंचम भाव में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक दूसरे की संतान गोद लेता है तथा उसे अपने बच्चे की तरह पालता है।
8. वृषलग्न में बुध यदि पंचम भाव में हो तो जातक के तीन कन्याएं होती हैं। यदि साथ में चंद्रमा हो तो चार कन्याएं होती हैं।
9. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हों तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को "सिजेरियन चाइल्ड" कहते हैं।
10. वृषलग्न में पंचमेश बुध कमजोर हो तथा राहु एकादश में हो तो जातक को वृद्धावस्था में संतान की प्राप्ति होती है।

11. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।

12. वृषलग्न में लग्नेश शुक्र द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश बुध पाप ग्रह या पाप पीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के बाद नष्ट हो जाता है।

13. वृषलग्न में पंचमेश बुध बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु होती है। जिससे जातक को संसार से विरक्ति होकर वैराग्य की प्राप्ति होती है।

14. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम सन्तति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

15. वृषलग्न में पंचमेश बुध की सप्तमेश मंगल से युति हो तो जातक को प्रथम संतान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

16. वृषलग्न में पांच भाव में स्थित राशि के नवांश शनि, बुध, शुक्र या चंद्र से युक्त हों तो कन्याएं अधिक होती हैं।

17. राहु व मंगल एकादश भाव में हों, शनि सूर्य लग्न में हो, शुक्र मेषस्थ हो तो जातक की संतान गूंगी व बहरी होती है।

18. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या सन्तति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

19. पंचमेश बुध निर्बल हो, लग्नेश शुक्र भी निर्बल हो तथा पंचम भाव में राहु हो तो जातक को सर्प दोष के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

20. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्मनामक "कालसर्प योग" के कारण जातक के पुत्र संतान नहीं होती है। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एवं मानसिक तनाव रहता है।

21. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

22. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम से सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो "वंशविच्छेद योग" बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़िया नहीं चलतीं।

23. वृषलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा यहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पापग्रह हो तो वंशविच्छेद योग बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है, उसके आगे पीढ़िया नहीं चलतीं।

24. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को ''इलाख्य नामक'' सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शान्ति हो जाती है।

25. वृषलग्न में पंचमेश पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ''अनपत्य योग'' बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शान्त हो जाता है।

26. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

27. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है। ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

28. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है, ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

29. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो ''कुलवर्द्धन योग'' बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

30. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को ''केवल कन्या योग'' होता है। पुत्र संतान नहीं होती।

❑❑❑

वृषलग्न और राजयोग

1. पूर्ण वृषलग्न में जिसका जन्म हो और पूर्ण चंद्रमा लग्न में उच्च का बैठा हो और साथ ही चार, पांच, छः ग्रह उच्च के, या स्वगृही, या मित्रक्षेत्री, शुभ नवांश में, केन्द्र त्रिकोण में बली हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. उच्च का चंद्रमा लग्न में, सिंह का सूर्य चतुर्थ में, कुम्भ का शनि दशम में और वृश्चिक का बृहस्पति सप्तम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. वृष का चंद्रमा लग्न में हो, सिंह का सूर्य चतुर्थ भाव में हो, वृश्चिक का बृहस्पति सप्तम भाव में हो, कुम्भ का शनि राज्य में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. उच्च का चंद्रमा लग्न में, उच्च का गुरु भ्रातृ स्थान में, उच्च का बुध विद्या भवन में और उच्च का मंगल भाग्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. मिथुन, बुध, कर्क का चंद्रमा, सिंह का सूर्य, वृश्चिक का मंगल, कुम्भ का शनि, मीन का बृहस्पति और वृष का शुक्र हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. ये सभी सभी ग्रह स्वगृही है, इनमें से यदि चार भी ग्रह स्वगृही बलवान् बैठे हों तो राजयोग करते हैं।
7. यदि वृषलग्न में बृहस्पति, मिथुन में चंद्रमा, मकर में उच्च का मंगल, सिंह में शनि, कन्या में बुध सूर्य और तुला का शुक्र हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।
8. यदि वृषलग्न में स्वगृही शुक्र हो, मिथुन का चंद्रमा दूसरे स्थान में बलवान् हो और कर्क का गुरु अपने उच्चांश में तृतीय स्थान में हो तो मनुष्य बड़ा ही पराक्रमी, धनवान, यशस्वी तथा आदरणीय होता है।

9. यदि लग्न में, उच्च का चंद्रमा, चतुर्थ में स्वगृही सूर्य, सप्तम में वृश्चिक का गुरु और दशम में कुम्भ का शनि हो तो मनुष्य पुलिस या सेना, नेकी आदि में निज पराक्रम के लिए धन, यश पारितोषित पाता है।

10. यदि उच्च का चंद्रमा लग्न में, मिथुन का गुरु धन स्थान में, शनि या सूर्य छठे स्थान में, मीन का शुक्र एकादश स्थान में हो तो मनुष्य धनी होता है।

11. यदि शनि एवं बुध की युति अच्छे स्थान पर हो तो प्रबलतम राजयोग होता है।

12. यदि चार ग्रह उच्च के हों या मूल त्रिकोण में हों तो जातक मंत्री या राज्यपाल होता है।

13. शुक्र, गुरु, बुध केन्द्र में स्थित हों एवं मंगल 10वें हो तो जातक को उच्च पद प्राप्त होता है।

14. मूल त्रिकोण (5, 9) में मंगल व शुक्र हो तो उच्च पद की प्राप्ति होती है।

15. शुक्र छठे भावस्थ, द्वादश में मंगल एवं चतुर्थ गुरु हो तो वह शासकीय उच्च पद की प्राप्ति करता है।

16. मेष का चंद्रमा हो तथा शुक्र पूर्ण दृष्टि से अर्थात् छठे भाव से देखता हो तो जातक चुनाव में विजय प्राप्त कर नेता बनता है।

17. केन्द्र स्थानों पर पाप ग्रह तथा शुभ ग्रह स्वराशिस्थ हों तो जातक राजदूत का पद प्राप्त करता है।

18. लग्न में चंद्रमा हो तथा उस पर शुभ दृष्टि हो तो राज्य योग होता है।

19. शुक्र, सूर्य, चंद्रमा एक स्थान पर हों तथा गुरु उन्हें देखता हो तो विशिष्ट राजयोग होता है।

20. बुध सिंहस्थ, गुरु वृश्चिक का तथा शुक्र कुंभ का हो तो जातक एम.पी. का पद प्राप्त करता है।

21. मंगल कुंभ का हो तथा शनि अपनी उच्च राशि (मेष) में हो तो श्रीनाथ योग होता है। फलस्वरूप पारिवारिक जीवन सुखी, जातक धनवान होता है तथा उच्च पद की प्राप्ति करता है।

22. सूय-बुध, सुख भव में, शनि-चन्द्र 10वें, मंगल वृष का हो तो जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्य भोगता है।

23. वृषलग्न में जन्मकाल से लग्न से दशम स्थान में शनि हो तो धनवान्, विद्वान्, शूरवीर, मंत्री, दण्ड देने वाला (अर्थात् जज वगैरह) एक गांव या गावों के समूह का नेता होता है।

24. वृषलग्न में जन्म समय में सिंह, वृष, कन्या, कर्क इन चारों राशियों में से किसी में भी राहु हो तो जातक महाराजाधिराज और लक्ष्मी से सम्पन्न होता है। राहु उच्च में हो तो हाथी, घोड़ा, मनुष्य तथा नाव की सवारी वाला, जमीन वाला, पण्डित और अपने कुल का श्रेष्ठ होता है।

25. वृष में गुरु, मिथुन में चंद्रमा, मकर में मंगल, सिंह में शनि, कन्या में बुध सूर्य, तुला में शुक्र हो तो यह राजयोग होता है। इस योग में उत्पन्न महाराजा होता है।

26. वृषलग्न में वृष का (उच्च) चंद्रमा, कुंभ का शनि, सिंह का सूर्य, वृश्चिक का बृहस्पति हो, तो वैभव संपन्न राजयोग होता है।

27. वृषलग्न में चंद्रमा परम (3 अंश के अंदर) हो और शुक्र से दृष्ट हो तथा आपोक्लिम स्थान में (3/6/12) सब पाप ग्रह स्थित हो राजयोग होता है।

28. वृषलग्न में वृष राशि का चंद्रमा बृहस्पति से युत हो और लग्न का स्वामी बलवान त्रिकोण (9–5) में हो सूर्य शनि मंगल में युत अगर दृष्ट न हो तो राजयोग होता है।

❑❑❑

वृषलग्न में आशीर्वादात्मक कुण्डली का मंगल दर्शन

॥ श्री कृष्ण जन्म कुण्डली॥

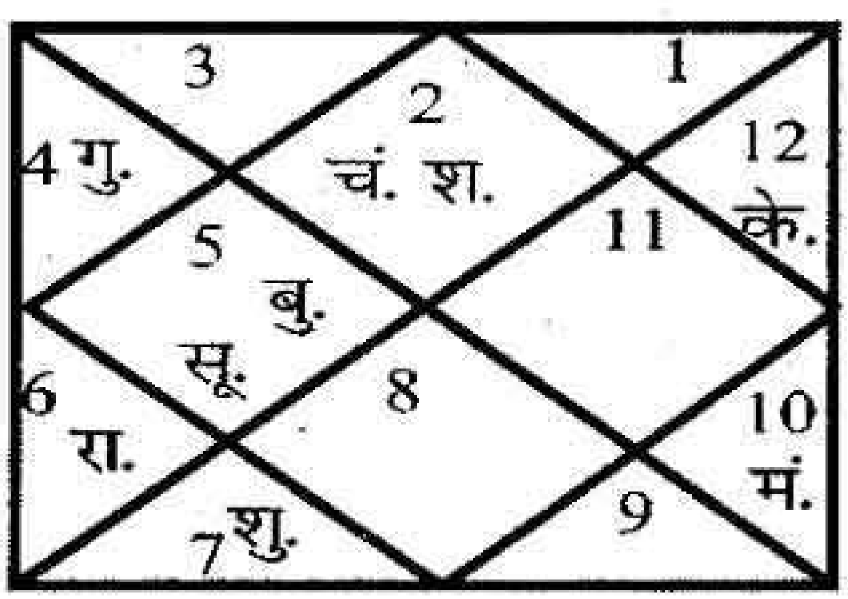

श्रीकृष्णो रोहिणी भे वृषतनु शशिनोः श्रावण स्यासितेऽभू
अष्टम्यां मध्यरात्रे हरिगरविविदो कर्किणीज्ये मृगारे।
जूकस्थे भार्गवयो जनुगरविसुते चान्द्रिंवारेऽगंनास्थे
राहौ यज्जन्मपत्री तम्भवतु सततं दीर्घकालं सुरेशः

—जातक सारदीप

श्रीकृष्ण भगवान शुक्लादिमान से श्रावण कृष्ण पक्ष व कृष्णादि मान से भाद्रपद कृष्ण अष्टमी बुधवार, रोहिणी नक्षत्र, वृषलग्न में अवतीर्ण हुए थे। उस समय मध्य रात्रि का समय था। सिंह में सूर्य-बुध, कर्क में गुरु, मकर में मंगल, तुला में शुक्र, वृष में शनि, कन्या में राहु था। ऐसे भगवान कृष्ण दीर्घकाल तक जातक की रक्षा करें।

❑❑❑

भगवान श्री कृष्ण एवं भगवान श्रीराम की कुण्डलियों का तुलनात्मक अध्ययन

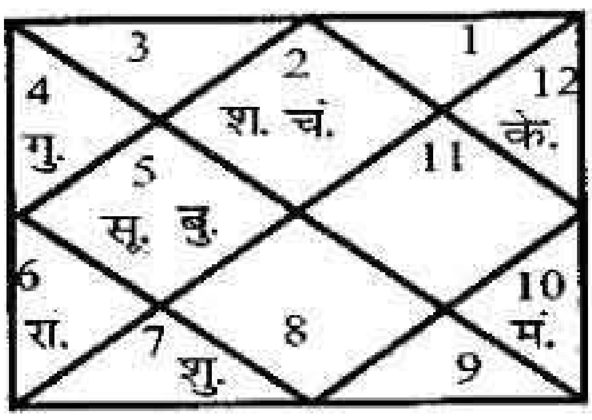

1. भगवान् श्रीकृष्ण यादवेन्द्र थे इनका जन्म वृन्दावन में हुआ वे द्वारकाधीश कहलाते थे और मथुरा के राजा थे।
2. श्रीकृष्ण चन्द्रवंशीय थे। इनका जन्म भाद्रकृष्ण अष्टमी की मध्य रात्रि को ठीक 12 बजे हुआ था।
3. भगवान् श्रीकृष्ण की कुण्डली में चंद्रमा उच्च का था।
4. चंद्रमा 16 कलाओं का स्वामी है फलतः श्रीकृष्ण सोलह कलाओं के अवतार कहे गये हैं। उनमें छल-कपट, चोरी, झूठ बोलकर न्याय-धर्म की रक्षा करना, प्रेम, प्रवचंना, ईर्ष्या इत्यादि सभी गुण थे। वे सर्वकला निष्णात थे।
5. श्रीकृष्ण अनेक पत्नीगामी थे।

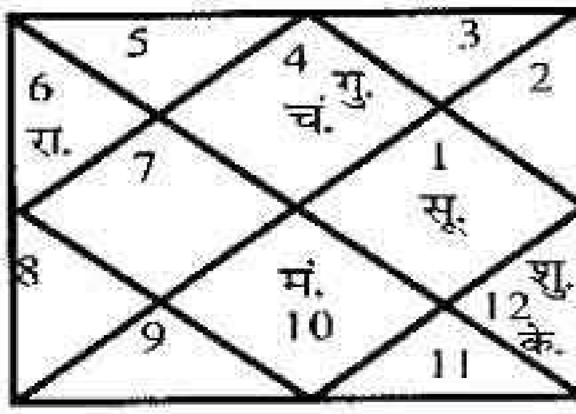

1. भगवान् श्रीराम राघवेन्द्र थे। इनका जन्म अयोध्या में हुआ। वे समस्त भारत भूमण्डल के चक्रवर्ती सम्राट कहलाते थे।
2. भगवान् श्रीराम सूर्यवंशीय थे। इनका जन्म चैत्र शुक्ल नवमी दिन को ठीक 12 बजे अभिजित मुहूर्त में हुआ।
3. भगवान् श्रीराम की कुण्डली में सूर्य उच्च का था।
4. सूर्य 12 कलाओं में मर्यादित हैं फलतः श्रीराम का चरित्र मर्यादित था। वे सत्य वक्ता थे। उनके मुख से जो वचन निकल गया वो सत्य होता था, परिपूर्ण होता था, अमोघ होता था।
5. भगवान् श्रीराम ने एक पत्नीव्रत धारण कर रखा था।

6. श्रीकृष्ण युद्ध में पलायन कर गये फलत: 'रणछोड़' कहलाये।

7. भगवान् श्रीकृष्ण के लग्न में शनि + चन्द्र की युति उनका जन्म निम्न स्थान, जेल में होना बताती है। यह युति एक प्रकार का ग्रहण योग व कष्टों को बताती है।

8. भगवान् श्रीकृष्ण के पंचम भाव में राहु सन्तान बाधा का संकेत देता है। फलत: श्रीकृष्ण को सन्तान प्राप्ति हेतु शिवजी की उपासना अनुष्ठान करना पड़ा तब प्रद्युम्न नामक पुत्र हुआ पर वह कायर निकला।

9. भगवान् श्रीकृष्ण का अन्त छल से हुआ। एक बहेलिये ने उन्हें हिरण समझ कर मार डाला।

10. भगवान् श्रीकृष्ण का चरित्र किसी भी दृष्टि से अनुकरणीय नहीं है।

6. भगवान् श्रीराम के मुंह से निकला हुआ शब्द और धनुष से निकला बाण कभी लौटकर वापस नहीं आया।

7. भगवान् श्रीराम के लग्न में उच्च का बृहस्पति व चंद्रमा उनका जन्म उच्च कुल में होना बताते हैं।

8. भगवान् श्रीराम का पंचमेश मंगल उच्च का होने से पराक्रमी पुत्रों का संकेत देता है। लव-कुश दोनों ही अति पराक्रमी थे और चक्रवती सम्राट कहलाये।

9. भगवान् श्रीराम जीवित ही स्वर्गलोक को पधारे।

10. भगवान् श्रीराम एक आदर्श महापुरुष थे। एक आज्ञाकारी पुत्र, एक पिता, एक जिम्मेदार पति, एक सहृदय भाई, एक आदर्श शत्रु, एक अन्तरंग सखा, एक अति प्रतापी राजा, जीवन के हर पहलू में उनका चरित्र अनुकरणीय था और अनुकरणीय रहेगा।

सृष्टि संचालक विराट महापुरुष की सूर्य व चंद्रमा के समान ये दोनों आंखें, सम्पूर्ण मानव सभ्यता को प्रेरणा देती रहेंगी। ये दोनों महापुरुष युग-युगाब्द तक याद किये जाते रहेंगे। श्रावण व भादों का महीना श्रीकृष्ण भगवान् के जन्मोत्सव का महीना है। इन पवित्र महीनों में हम इन दिव्य आत्माओं के आदर्श चरित्रों को याद करते हुए उनके श्रीचरणों में सादर श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं।

❑❑❑

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में

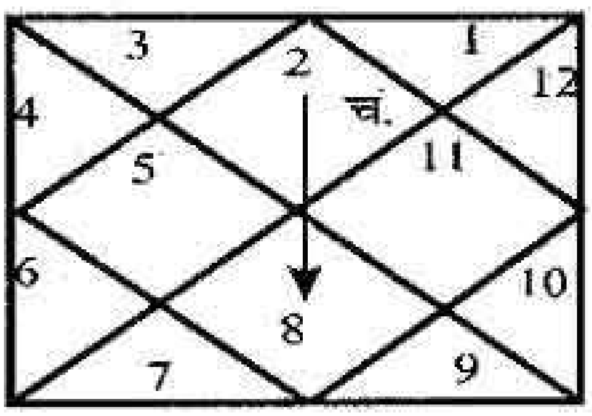

वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। तृतीयेश चंद्रमा वृष राशि में होकर लग्न में बैठने से उच्च का हो गया है। चंद्रमा केन्द्रस्थ होने से '**यामिनीनाथ योग**' बना। ऐसा जातक सुन्दर देह, सुन्दर नेत्र, मधुरवाणी, गौरवर्ण, कोमल स्वभाव, बुद्धिमान, सदैव युवा प्रतीत होने वाला, राजा के समान ऐश्वर्यशाली जातक होता है।

दृष्टि–बलवान चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) पर है। ऐसे जातक का जीवन साथी सुन्दर, आकर्षक, मोहक, शान्त, सौम्य व उदार मनोवृत्ति वाला होता है।

निशानी–जातक की आंखें सुन्दर, बड़ी, आकर्षक एवं उत्तेजित करने वाली होती हैं।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + शुक्र**–होने से 'किम्बहुना योग' बना क्योंकि शुक्र स्वग्रही होकर 'मालव्य योग' बनायेगा तथा चंद्रमा उच्च का रहेगा। इससे अधिक और क्या होगा? अर्थात् ऐसा जातक सुन्दर वाहन, नौकर-चाकर एवं सुन्दर भवन का स्वामी होगा। जातक महान् पराक्रमी होगा।
2. **चन्द्र + बृहस्पति**–यह युति यहां खिलेगी। **गजकेसरी योग** के कारण जातक को उत्तम सन्तति, सुन्दर-पतिव्रता स्त्री एवं भाग्योदय के उत्तम अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

3. **चन्द्र + शनि**—चन्द्र, शनि की युति जातक को परम सौभाग्यशाली बनायेगी। यहां **पद्मसिंहासन योग** बनेगा, जिसके कारण साधारण परिवार में जन्म लेकर भी जातक कीचड़ में कमल की तरह उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

4. **चन्द्र + बुध**—बलवान् तृतीयेश की धनेश के साथ युति जातक को स्वपराक्रम से अर्जित द्रव्य के कारण धनवान एवं लब्ध प्रतिष्ठित बनायेगी।

5. **चन्द्र + मंगल**—यह युति यहां **महालक्ष्मी योग** बनायेगी। मंगल मातृ सुख में वृद्धि करेगा अपने घर (वृश्चिक राशि) को पूर्ण दृष्टि में देखता हुआ सुन्दर पत्नी, पराक्रमी ससुराल देगा। ऐसा जातक अपने शत्रुओं को समूल नष्ट करने में सक्षम होता है।

6. **चन्द्र + सूर्य**—ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को प्रातः काल सूर्योदय के समय होगा। जातक **चन्द्रकृत राजयोग** के कारण समस्त सुखों को प्राप्त करेगा।

7. **चन्द्र + राहु**—चंद्रमा के साथ राहु भी यहां उच्च का होगा फलतः राजयोग देगा। ऐसा जातक हठी, अभिमानी एवं अहंकारी होगा तथा छल-बल से अपना कार्य सिद्ध करने में माहिर होगा।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में

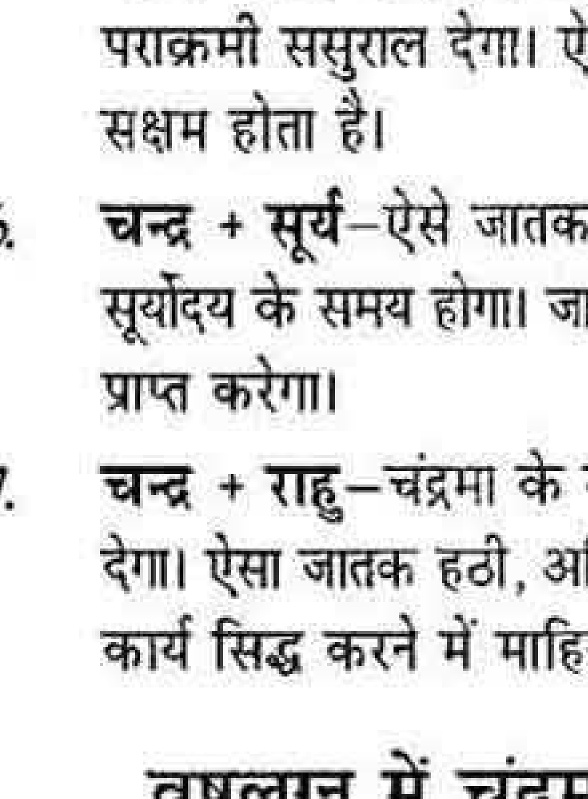

वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। चंद्रमा द्वितीय स्थान में अपने पुत्र बुध की मिथुन राशि का होने से शत्रुक्षेत्री है। क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्र को अपना शत्रु मानता है। ऐसा जातक विद्या, बुद्धि, लेखन और भाषण कला में प्रवीण होता है पर कई बार अपनी बात को खुद ही काट देता है। ज्यादा धन एकत्रित नहीं कर पाता। धनवान होने की सही स्थिति का पता तो बुध की स्थिति से चलेगा।

दृष्टि—चंद्रमा द्वितीय स्थान में बैठकर अष्टम स्थान धनु राशि को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। ऐसे जातक के गुप्त-शत्रु बहुत होते हैं। चंद्रमा अपने घर में बारहवें स्थान पर होने के कारण जातक का स्वभाव खर्चीला होगा। धन एकत्रित नहीं हो पाएगा।

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा खर्च कराएगी एवं मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + बुध**–जातक को पूर्व अर्जित धन-सम्पत्ति मिलती है। जातक पढ़ा-लिखा, शिक्षित, सभ्य एवं समाज का प्रतिष्ठित व धनी-मानी व्यक्ति होगा।
2. **चन्द्र + बृहस्पति**–यह युति यहां राजयोग कारक है। 'गजकेसरी योग' के कारण जातक धनवान, ऐश्वर्यवान होगा। ऋण, रोग और शत्रुओं का समूल नाश करने में सक्षम होगा।
3. **चन्द्र + शुक्र**–लग्नेश व पराक्रमेश की युति जातक को अपने द्वारा किए जा रहे प्रयासों में बराबर सफलता देगी। जातक धनवान होगा।
4. **चन्द्र + मंगल**–यह युति यहां 'लक्ष्मी योग' कारक है। जातक को पत्नी द्वारा, ससुराल द्वारा धन की प्राप्ति होती रहेगी। जातक पुत्रवान, भाग्यशाली होगा। 28 वर्ष की आयु में किस्मत का सितारा चमक उठेगा।
5. **चन्द्र + सूर्य**–ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रात: सूर्योदय के पहले 4-5 बजे के लगभग होगा। सुखेश व तृतीयेश की युति उत्तम भवन एवं वाहन सुख में सहायक है।
6. **चन्द्र + शनि**–भाग्येश, दशमेश का धन स्थान में होना शुभ संकेत है। जातक अपने पराक्रम से, पुरुषार्थ से स्वयं का भाग्योदय करेगा। भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा। जातक व्यापार, व्यवसाय में कमाएगा।
7. **चन्द्र + राहु**–यहां राहु स्वगृही होगा। फिर भी जातक चाहे जितना कमाए, धन की बरकत नहीं होगी। वाणी त्रुटिपूर्ण होने से शत्रु पैदा होते रहेंगे। सावधानी अनिवार्य है। वाणी पर नियंत्रण रखें।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में

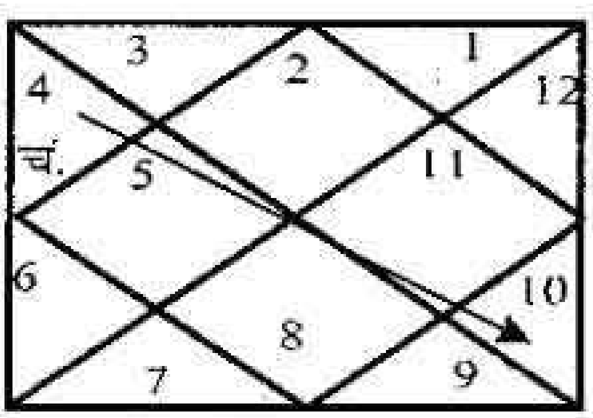

वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। तृतीयस्थ चंद्रमा कर्क राशि में होने से स्वगृही है। ऐसे जातक महत्वकांक्षी, पराक्रमी, धैर्यवान, उदार, हृदय, भाई-बहनों से सुखी एवं बहुमित्र वाले होते हैं। जातक जाति-समाज किंवा सरकार द्वारा सम्मानित भी होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि भाग्य भवन (मकर राशि) पर होने से जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा तथा जीवन में उन्नति का मार्ग निष्कंटक होगा।

निशानी–जातक बहुत बहनों वाला होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक की महत्वकांक्षाएं पूरी होंगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + मंगल**–जातक थोड़ा उत्साही व उग्र स्वभाव का होगा। धनवान होगा। समाज के धनी वर्ग में अच्छी मित्रता होगी। विवाह के बाद जातक का पराक्रम बढ़ेगा। यह योग सुखदायक है।
2. **चन्द्र + शनि**–जातक स्वार्थी होगा पर भाग्यशाली होगा। मित्रों की मदद से आगे बढ़ेगा।
3. **चन्द्र + राहु**–के कारण जातक सनकी, स्वार्थी एवं झगड़ालू स्वभाव का होगा। भाइयों व परिजनों से नहीं बनेगी।
4. **चन्द्र + सूर्य**–इस युति से चंद्रमा बलहीन हो जाएगा। चंद्रमा अपना फल न देकर सूर्य का फल देगा। जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या सूर्योदय के पूर्व प्रात: तीन बजे के लगभग होगा।
5. **चन्द्र + बुध**–जातक को तीव्र बुद्धिशाली बनाएगा।
6. **चन्द्र + शुक्र**–आध्यात्मिक शक्ति से युक्त बनाएगा।
7. **चन्द्र + केतु**–यह युति शुभ है। जातक को धार्मिक एवं आध्यात्मिक शक्ति देगा।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में

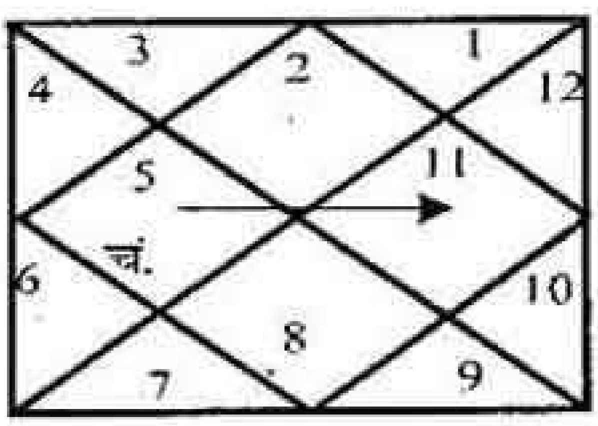

वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने में अशुभ फलकारी है। चंद्रमा यहां चतुर्थ स्थान में सिंह राशि (अग्नि तत्त्व) में होने से उद्विग्न है। चंद्रमा सूर्य का मित्र होने से जातक माता-पिता का भक्त होगा। जातक धनवान होगा। उसे उत्तम भवन, उत्तम वाहन, उत्तम पत्नी, भाई-बहनों का सुख मिलेगा। जातक विद्वान, साहित्यकार, लेखक, चिंतक, सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं दार्शनिक होकर, समाज को नई दिशा देने में सक्षम होगा।

दृष्टि–चतुर्थ स्थान में बैठकर चंद्रमा दशम भाव (कुम्भ राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक का पिता समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को शासकीय पदों पर सफलता मिलेगी एवं ऊंचे अफसरों से अच्छे सम्बन्ध होंगे।

निशानी—जातक को जलीय व्यवसाय लाभ होगा। दूध, दूध से निर्मित वस्तुएं, रत्न, दवाइयां, रेडिमेड गार्मेन्ट, फैशन के सामान वगैरह में फायदा रहेगा।

दशा—चंद्रमा की दशा शुभ फल देगी। चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में पदोन्नति, व्यापार व आय के स्रोत में बढ़ोत्तरी होगी। गृह-निर्माण होगा, उत्तम वाहन खरीदा जा सकता है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र + सूर्य**—यह युति जातक को तीन मंजिला भवन एवं एक से अधिक वाहनों का सुख, नौकर-चाकर का सुख दिलाएगी। जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या की मध्यरात्रि को पैतृक मकान में होगा। **'रविकृत राजयोग'** के कारण जातक उच्च पद को प्राप्त करेगा।
2. **चन्द्र + बुध**—की युति जातक को शिक्षित, वाकपटु एवं अति धनवान बनाएगी।
3. **चन्द्र + बृहस्पति**—यह युति जातक को महाधनी बनायेगी। राजकेसरी योग के कारण जातक एक सफल व्यक्ति के रूप में उभरेगा।
4. **चन्द्र + शुक्र**—तृतीयेश व लग्नेश की युति केन्द्र स्थान में जातक मातृ सुख, वाहन सुख देगी एवं जातक का राज्य सरकार में दबदबा भी रहेगा।
5. **चन्द्र + शनि**—तृतीयेश व भाग्येश की युति केन्द्र में लाभदायक है। यहां शनि अपने घर (कुम्भ राशि) एवं लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा फलत: जातक द्वारा किया गया परिश्रम सार्थक रहेगा। जातक अपने समाज में सौभाग्यशाली व्यक्ति होगा। कोर्ट (कचहरी) में सदैव विजय मिलगी।
6. **चन्द्र + मंगल**—यहां मंगल अपने घर (वृश्चिक राशि), दशम स्थान एवं एकादश स्थान के पूर्ण दृष्टि से 'लक्ष्मी योग' के साथ देखेगा। फलत: जातक को माता की सम्पत्ति, कृषि की भूमि मिलेगी। राजपक्ष में जातक का दबदबा रहेगा।
7. **चन्द्र + राहु**—चन्द्र राहु की युति माता के सुख में कमी, वाहन से दुर्घटना एवं नौकर से दगा दिलायेगी।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में

वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। पंचम भाव में चंद्रमा अपने पुत्र बुध की कन्या राशि में स्थित होगा। यह चंद्रमा की शत्रु राशि है क्योंकि बुध पुत्र होते हुए भी पिता का शत्रु है। परन्तु चंद्रमा बुध से शत्रुता नहीं रखता फलत: जातक अपनी सन्तति व भाई-बहनों से एकतरफा प्यार करेगा। जातक सुशील, सुन्दर, सभ्य, शिक्षित एवं नीति में निपुण होगा।

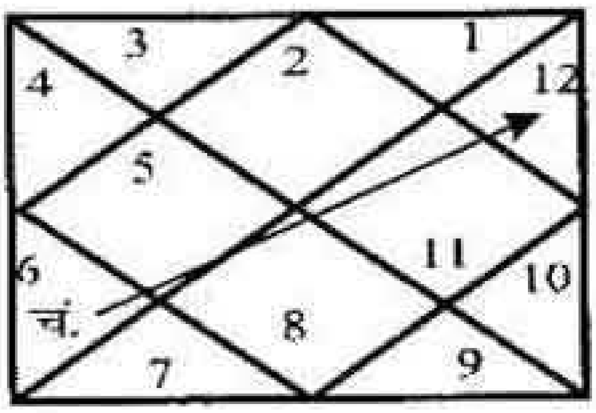

दृष्टि–पंचम भाव में कन्या राशिगत चंद्रमा की दृष्टि लाभ भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः यह दृष्टि व्यापार व्यवसाय में लाभकारक है। जातक प्रज्ञावन होगा। गूढ़ एवं रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा।

निशानी–जातक को कन्या सन्तति अधिक होगी।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + बुध**–यह युति जातक को महाधनी बनायेगी एवं जातक का भाग्योदय प्रथम कन्या सन्तति के बाद होगा। जातक राजा तुल्य होता है।
2. **चन्द्र + सूर्य**–यह युति जातक को संतान सुख में न्यूनता दिलायेगी। जातक का जन्म आश्विन् कृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 बजे के आसपास होगा।
3. **चन्द्र + मंगल**–इस युति कारण जातक क्रोधी व हठी स्वभाव का होगा। मन में अधीरता रहेगी फिर भी उच्च शैक्षणिक डिग्री प्राप्त करेगा।
4. **चन्द्र + बृहस्पति**–चन्द्र, बृहस्पति की युति यहां सार्थक है क्योंकि बृहस्पति भाग्य स्थान अपने घर (मीन राशि) एवं लग्न स्थान (जहां चंद्रमा की उच्च राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा फलतः जातक धनवान होगा। उसकी सन्तति भी धनवान होगी। गजेकसरी योग के कारण जातक को व्यापार-व्यवसाय में जबरदस्त लाभ होगा।
5. **चन्द्र + शनि**–तृतीयेश चन्द्र की भाग्येश के साथ त्रिकोण में युति केन्द्र+त्रिकोण संबंध करके जातक को उन्नति मार्ग की ओर बढ़ायेगी।
6. **चन्द्र + सूर्य**–यह युति जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को रात्रि के दस बजे के आस-पास होना बताती है। सुखेश सूर्य का त्रिकोण में होना शुभ है। जातक को सूर्य की कृपा में प्रेम की प्राप्ति भी होगी।
7. **चन्द्र + राहु**–यह युति सन्तान प्राप्ति व विद्या प्राप्ति में बाधक है तथा चंद्रमा का अशुभत्व बढ़ाने वाली है।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम् स्थान में

वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। चंद्रमा यहां तुला राशि में है। खड्डे (छठे स्थान) में होने से **'पराक्रमभंग योग'** की सृष्टि करता है। जातक

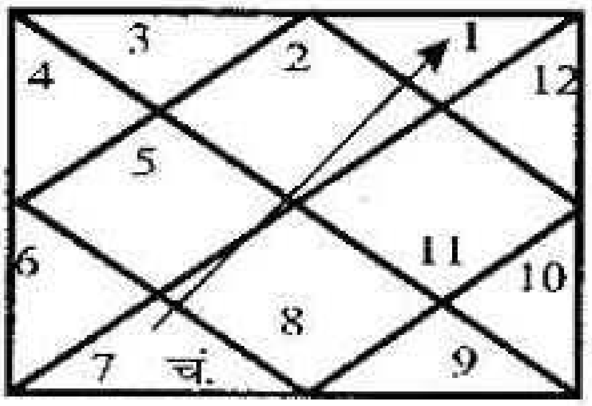

का पराक्रम रोग, ऋण और शत्रुओं द्वारा बाधित होता रहेगा। प्राय: पाचन क्रिया निर्बल, कफ और श्वास के रोगों की पीड़ा रहेगी।

दृष्टि—षष्टम् भावगत चंद्रमा की दृष्टि द्वादश स्थान (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा एवं अधिक यात्राओं में रुचि रखेगा।

निशानी—जातक कपटी होगा एवं षड्यंत्रकारी कार्यों में ज्यादा रुचि रखेगा।

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक को महामृत्युंजय का जाप करना चाहिए।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र + शुक्र**—की युति ज्यादा कष्टदायक है क्योंकि यह **''लग्नभंग योग''**, **''पराक्रमभंग योग''** की सृष्टि करती है परन्तु शुक्र स्वगृही होने से **हर्ष योग** बना जिसके कारण जातक ऋण, रोग व शत्रु पर विजय प्राप्त करने में सक्षम हो जाएगा।
2. **चन्द्र + सूर्य**—यह युति भी कष्टदायक है क्योंकि **'पराक्रमभंग योग'** के साथ-साथ **'सुखहीन योग'** की सृष्टि होती है। तुला का सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। फलत: जातक असावधान रहा तो जेल यात्रा हो सकती है। ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की रात्रि 8 बजे के लगभग होता है।
3. **चन्द्र + बृहस्पति**—बृहस्पति खड्डे में जाने से **'लाभभंग योग'** बनेगा। साथ ही अष्टमेश का छठे स्थान में जाने से **'सरल योग'** बना जिससे शुभ फलों की प्राप्ति में वृद्धि होगी। इस **'गजकेसरी योग'** के कारण चंद्रमा का शुभत्व बढ़ेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित, धनी व्यक्ति होगा।
4. **चन्द्र + शनि**—शनि यहां चंद्रमा के साथ छठे स्थान पर जाने से **'भाग्यभंग योग'** **'राज्यभंग योग'** बना परन्तु शनि उच्च का है। अत: चंद्रमा का अशुभत्व नष्ट हो गया है। जातक पराक्रमी होगा।
5. **चन्द्र + बुध**—बुध का चंद्रमा के साथ होने पर **'धनहीन योग'** एवं **'संतानहीन योग'** की सृष्टि होगी। फिर बुध, चन्द्र परस्पर शत्रु होने से यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है।

6. **चन्द्र + मंगल**–मंगल छठे जाने से **'विवाहभंग योग'** बनता है। परन्तु व्ययेश का छठे होने से **'विमल योग'** के कारण मंगल का अशुभत्व नष्ट हो गया है। चन्द्र मंगल **'लक्ष्मी योग'** के कारण जातक धनवान होगा।

7. **चन्द्र + राहु**–यह युति ज्यादा खराब नहीं है क्योंकि राहु छठे स्थान में राजयोग कारक होता है। दुष्ट ग्रहों का दु:स्थान में होना शुभ माना गया है।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम् स्थान में

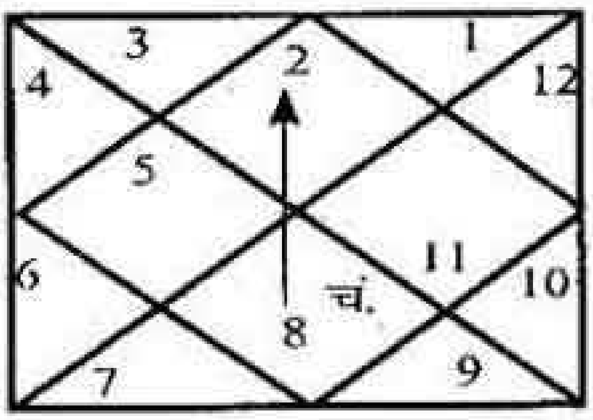

वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। चंद्रमा यहां वृश्चिक राशि में अपनी नीच राशि में है, जहां 3 अंशों में होने पर यह परम नीच हो जाएगा। फलत: ऐसा जातक ईर्ष्यालु, कामातुर, अधर्मी, हठी स्वभाव का होता है। जातक का मानसिक स्तर ज्यादा उदारवादी (उच्च) नहीं होता।

दृष्टि–सप्तम स्थान में वृश्चिक राशिगत यह चंद्रमा अपने घर से पंचम स्थान पर बैठकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेगा जहां चन्द्र की उच्च राशि अधिष्ठित है। फलत: जातक की उन्नति स्वप्रयत्नों से, स्वविचारों से होगी। जातक स्वयं सुंदर होगा एवं पत्नी भी सुंदर होगी।

निशानी–जातक की कल्पना शक्ति प्रखर होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + मंगल**–इस युति से **'नीचभंगराज योग'** की सृष्टि होकर चंद्रमा का नीचत्व भंग होकर। शुभ फलों की प्राप्ति में वृद्धि होगी। जातक महाधनी होगा, पर अनैतिक तरीकों से धन प्राप्ति करने में सफल रहेगा। **'रुचक योग'** के कारण जातक महान पराक्रमी होगा।

2. **चन्द्र + बुध**–इस युति में जातक के मानसिक स्तर में सुधार होगा। बुद्धि बल व नैतिकता में वृद्धि होगी। जातक महाधनी होगा।

3. **चन्द्र + शनि**–यह युति स्वभाव में चंचलता समाप्त करके, जातक को गंभीर स्वभाव का बनाएगी। जातक का नाम भाग्यशाली व्यक्तियों में होगा।

4. **चन्द्र + शुक्र**–यह युति जातक को मिलनसार बनाएगी। जातक सुंदर शरीर का स्वामी होगा पर कामी होगा। पर स्त्रियों से संसर्ग अवश्य करेगा। जीवन में उन्नति भी करेगा।

5. **चन्द्र + बृहस्पति**–यह युति जातक को ब्रह्मज्ञान से आलोकित करेगी। जातक की रुचि ज्योतिष-अध्यात्म में होगी। गजकेसरी योग के कारण जातक का गृहस्थ जीवन सुंदर होगा। 50 वर्ष की आयु के बाद व्यक्ति मोह-माया छोड़कर त्यागी हो जाएगा।
6. **चन्द्र + राहु**–चन्द्र के साथ राहु या केतु हो तो जातक चरित्रहीन होगा। उसका जीवन साथी भी लम्पट होगा।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में

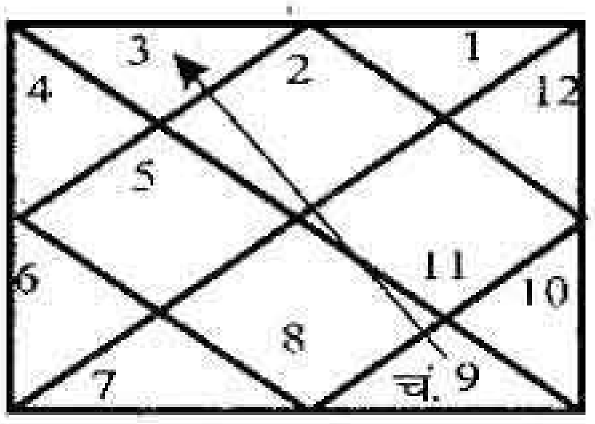

वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। यहां तृतीयेश चंद्रमा धनु राशि का होकर अष्टम भाव में स्थित होने से निर्बल हो गया है। तृतीयेश के अष्टम में जाने से '**पराक्रमभंग योग**' भी बना। ऐसे जातक कर्त्तव्यनिष्ठ, कठोर परिश्रमी व धार्मिक स्वभाव के होते हैं। धन व यश की प्राप्ति हेतु उन्हें बहुत परिश्रम करना पड़ता है।

दृष्टि–धनु राशिगत अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि धन स्थान (मिथुन राशि) पर रहेगी। फलत: धन व प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन में संघर्ष बना रहेगा। परिजनों द्वारा जातक को अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पाएगा।

निशानी–9 वर्ष एवं 19 वर्ष की आयु तक जल भय रहेगा।

उपाय–चांदी का चंद्रमा, मोती डालकर बालक के गले में पहनाएं।

दशा–चंद्रमा की दशा अशुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + गुरु**–यह युति शुभ फलदायक है। गुरु स्वगृही होकर चंद्रमा को बलवान करेगा। 'गजकेसरी योग' के कारण बिगड़े कार्य सुधरेंगे।
2. **चन्द्र + बुध**–संतान प्राप्ति में बाधा। शल्य चिकित्सा से सन्तति पर चंद्रमा निस्तेज न होगा।
3. **चन्द्र + शनि**–भाग्योदय में बाधा पर चंद्रमा निस्तेज न होगा। शनि की दृष्टि कुंभ राशि पर होने से जातक को राजा (सरकार) से मदद मिलती रहेगी। पिता भी मददगार होगा।
4. **चन्द्र + सूर्य**–सुख के लिए संघर्ष, पांव में तकलीफ, माता को कष्ट ऐसे

जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को सायंकाल 4 बजे के आस-पास होता है।

5. **चन्द्र + मंगल**–जीवन साथी से टकराव, अदालतों के चक्कर में धन हानि होगी।
6. **चन्द्र + राहु**–या केतु पुलिस केस व अदालतों में धन का अपव्यय, मानसिक व दैहिक रोग होते हैं।
7. **चन्द्र + शुक्र–'लग्नभंग योग'** के कारण परिश्रम पूर्वक किये गये प्रयासों में भी वांछित सफलता नहीं मिलती।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में

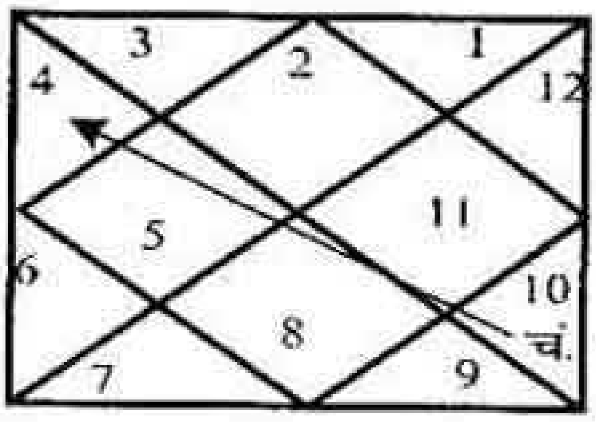

वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। यहां नवम भाव में स्थित चंद्रमा मकर राशि का होकर, अपने स्थान से सातवां होकर अपने घर (कर्क राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक पराक्रमी होगा। उसे भाई-बहनों , इष्ट-मित्रों का सुख मिलेगा। ऐसे व्यक्ति सुन्दर स्त्री, श्रेष्ठ सन्तान से युक्त, धर्म बुद्धि वाले, माता-पिता के सुख से युक्त होते हैं।

निशानी–जातक कलह या युद्ध प्रिय नहीं होता। जातक का भाग्योदय प्रायः मध्यम आयु में होता है। चंद्रमा यदि पूर्ण बली हो तो जातक विदेश यात्रा से धन कमायेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा भाग्योदय करायेगी पराक्रम बढ़ायेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + शनि**–यह युति 'पद्मसिहांसन योग' बनायेगी। जातक करोड़पति होगा।
2. **चन्द्र + मंगल**–जातक 'महालक्ष्मी योग' के कारण महाधनी होगा। भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक का ससुराल धनी होगा।
3. **चन्द्र + बुध**–जातक धनवान, पुत्रवान होगा। प्रथम संतान के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
4. **चन्द्र + सूर्य**–यह युति जातक को विवेकहीन बनायेगी। जातक की शिक्षा अधूरी रह जायेगी। जातक का जन्म माघकृष्ण अमावस्या को दोपहर बाद 3 बजे के आस-पास होगा। जातक को नेत्र दोष होगा। व्यापार में हानि सम्भव है।
5. **चन्द्र + शुक्र**–जातक अपने परिश्रम से यथेष्ट धन कमायेगा।

6. **चन्द्र + बृहस्पति**–जातक धार्मिक, परोपकारी एवं समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। 'गजकेसरी योग' के कारण कोई भी काम रुका हुआ नहीं रहेगा।

7. **चन्द्र + राहु**–या चन्द्र+केतु जातक की उन्नति में सहायक होंगे। जातक जन्म स्थान (घर) में दूर परदेश में कमायेगा।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में

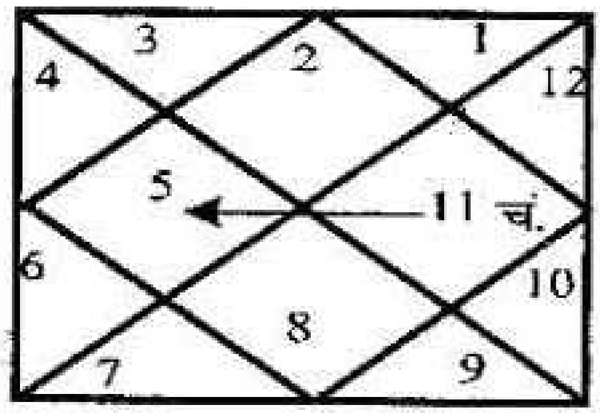

वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। तृतीय भाव का स्वामी होकर चंद्रमा दशम भाव कुम्भ राशि में होने में जातक को नृपतुल्य प्रसिद्धि व सम्मान दिलाता है। यद्यपि यह चंद्रमा अपनी राशि से अष्टम स्थान पर होने से दिग्बल शून्य है तथापि चंद्रमा यदि बलवान हो तो जातक माता-पिता का सुख, रोजी-रोजगार उत्तम नौकरी एवं व्यापार में लाभ होता है।

दृष्टि–कुम्भस्थ चंद्रमा की पूर्ण दृष्टि चतुर्थ (सिंह राशि) पर होने से घर, वाहन, जमीन,-जायदाद, कीर्ति, शौर्य एवं राज से मान्यता प्राप्त होती है।

निशानी–जातक भंवर में फंसी नाव को पार लगाने वाला, विपत्ति में फंसे व्यक्ति की मदद करने वाला, परोपकारी होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा अच्छी जायेगी। नवीन योजनाओं में सफलता मिलेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + शनि**–जातक महाधनी व उद्योगपति होगा। उसे पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।

2. **चन्द्र + बृहस्पति**–जातक सौभाग्यशाली, परोपकारी, एवं धर्मध्वज धारक व्यक्ति होगा। 'गजकेसरी योग' के कारण कोई काम रुकेगा नहीं। जातक धन कमायेगा एवं शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

3. **चन्द्र + बुध**–जातक समाज का धनवान एवं प्रतिष्ठि व्यक्ति होगा। जातक समाज का मुख्य व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। उसकी सन्तान भी सुशिक्षित होगी।

4. **चन्द्र + शुक्र**–जातक धनवान होगा पर गलत तरीकों में धन कमाने में उसकी रुचि होगी।

5. **चन्द्र + मंगल**–जातक धनवान होगा। पत्नी के माध्यम से रुपया कमायेगा। ससुराल से भी धन प्राप्ति संभव है।

6. **चन्द्र + सूर्य**–जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या की दोपहर 12 बजे के लगभग होगा। जातक उत्तम भवन एवं वाहन का स्वामी होगा। क्योंकि सूर्य की दृष्टि अपने घर (सिंह राशि) पर होगी।

7. **चन्द्र + राहु या कुत**–जातक वेश्यावृति अथवा गलत कार्यों से धन कमायेगा। भाईयों से कम बनेगी।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में

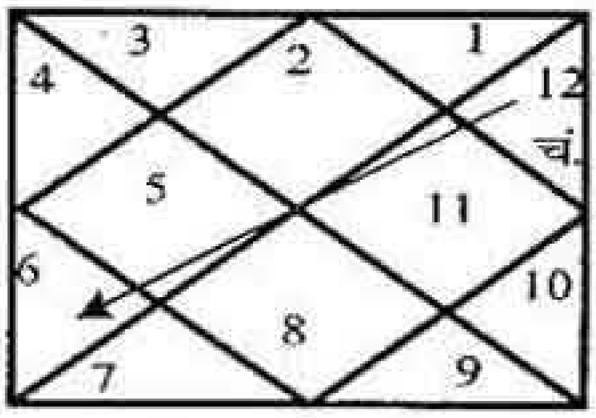

वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। एकादश स्थान में स्थित मीन राशिगत चंद्रमा अपनी कर्क राशि में नवम स्थान पर होने से शुभ फलदाई हो गया है। भृगुसूत्र के अनुसार, "बहुश्रुतवान् पुत्रवान गुणज्ञः" जातक बुद्धिमान, गुणवान, धनवान, माता-पिता, स्त्री, सन्तान सुख से युक्त तथा शास्त्र का ज्ञाता एवं विद्वान प्राणी होता है।

दृष्टि–मीनस्थ चंद्रमा की पूर्ण दृष्टि पंचम भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक 'बहुविद्यावान' होगा। अनेक प्रकार की विधाओं का जानकार होगा। जातक उच्च कोटि का लेखक, चिन्तक, समाज सुधारक व दार्शनिक होगा।

निशानी–ऐसा जातक प्रेमभाव के कारण अनेक मित्रों से युक्त होता है। जातक तंत्रविद्या व ज्योतिष का जानकार होगा। जातक जलयान में यात्रा अवश्य करेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक उत्तरोतर उन्नति को प्राप्त होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + बृहास्पति**–जातक पुत्रवान् जरुर होगा। यहां पर 'गजकेसरी योग' ज्यादा खिलेगा। जातक अति धनवान होगा। उसकी सन्तति सुयोग्य होगी। जातक का जीवन साथी जातक के प्रत्येक कार्य में उसका सहयोग करेगा। गृहस्थ सुख अच्छा होगा। जातक को अपने परिवार में उचित सम्मान मिलता रहेगा।

2. **चन्द्र + शुक्र**–"शुक्रयुतेन नरवाहनयोग-भृगुसत्र" ऐसा जातक उच्च राज्यधिकारी एवं श्रेष्ठ वाहन से युक्त होगा। क्योंकि शुक्र यहां उच्च का होगा।

3. **चन्द्र + बुध**–जातक धनी होगा। अपने पराक्रम, परिश्रम में बहुत धन कमायेगा। जीवन में सफल व्यक्ति होगा। प्रथम सन्तति के बाद किस्मत चमकेगी।

4. **चन्द्र + मंगल**—जातक महाधनी होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

5. **चन्द्र + सूर्य**—ऐसे जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को दिन के 10 बजे के बाद होता है। जातक को नेत्र विकार सम्भव है।

6. **चन्द्र + शनि**—जातक परम सौभाग्यशाली व्यक्ति होगा। उत्तम व्यापारी होगा।

7. **चन्द्र + राहु**—जातक को नेत्र-विकार सम्भव है। व्यापार में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में

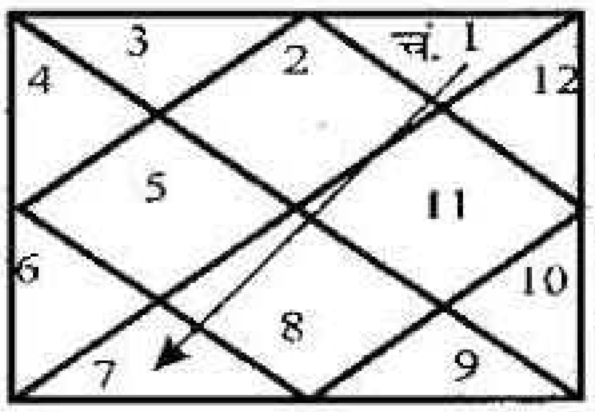

वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। यहां तृतीयेश चंद्रमा द्वादश भावगत 'मेष राशि' में होने में 'पराक्रमभंग योग' बना ऐसा जातक साधारणत: आलसी, द्वेषी व नेत्ररोगी होता है। खासकर बाई आंख कमजोर होगी। 'व्ययभाव गते चन्द्र वायचक्षु विनश्यति'। जातक क्रोधी होगा क्योंकि चंद्रमा अग्निसंज्ञक राशि में हैं। भृगुसूत्र के अनुसार "दुर्भेजन: दुष्पाभव्दय: कोपोद्‌भव व्यसन" जातक अयक्ष्यभोजी, व्यसनी, फालतू कार्य में रुपया खर्च करने वाला, क्रोध में अपना कार्य बिगाड़ने वाला होता है।

दृष्टि—मेष राशिगत द्वादशस्थ चन्द्र की दृष्टि षष्टम् भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक को जीवन में गुप्तरोग, गुप्तशत्रु एवं त्रृण का भय बना रहेगा।

निशानी—जातक की किस्मत परेदश में चमकेगी।

दशा—चंद्रमा की दशा, अन्तर्दशा थोड़ा प्रतिकूल फल देगी।

उपाय—शिवजी की उपासना में, महामृत्युंजय प्रयोग से जातक को शुभफलों की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र + मंगल**—इस युति में मंगल स्वगृही होने से 'महालक्ष्मी योग' बना। जातक समाज का धनी व्यक्ति होगा। जातक को भाग्योदय विवाह के बाद होगा। व्ययेश व्यय स्थान में होने में 'विमल योग' के कारण जातक पराक्रमी होगा।

2. **चन्द्र + बृहस्पति**—की युति चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को नष्ट कर देगी। भृगुसूत्र के अनुसार—शुभयुत विद्वान, दयावान: जातक विद्वान् दयावान एवं परोपकारी होगा। गजकेसरी योग के कारण जातक ऋण, रोग व शत्रुओं पर विजय प्राप्त

करने में समर्थ होगा। अष्टमेश बारहवें होने से 'सरल योग' के कारण जातक प्रतापी होगा।

3. **चन्द्र + शुक्र**–की युति में वेश्यावृति या गतल कार्य में धन कमाने में रुचि होगी। परन्तु षष्टेश बारहवें होने से हर्ष योग बनेगा। शुक्र का अशुभत्व नष्ट हो जायेगा।

4. **चन्द्र + बुध**–की युति से बृद्धि में धन हानि होगी क्योंकि बुद्ध द्वादश भाव में होने में 'धनहीन योग' एवं 'सन्तानहीन योग' की सृष्टि होगी।

5. **चन्द्र + शनि**–भाग्येश+दशमेश बारहवें होने से 'भाग्यभंग योग' बना जातक के भाग्योदय में व्यापार में काफी रुकावटें आयेंगी।

6. **चन्द्र + सूर्य**–की युति के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को प्रात: 8 बजे के लगभग होगा। जातक को जीवन में प्रगति एवं सुख प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

7. **चन्द्र + राहु**–चंद्रमा के साथ राहु या केतु होने से जातक चालाक, धोखेबाज एवं अविश्वसनीय स्वभाव का होगा।

❑❑❑

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में

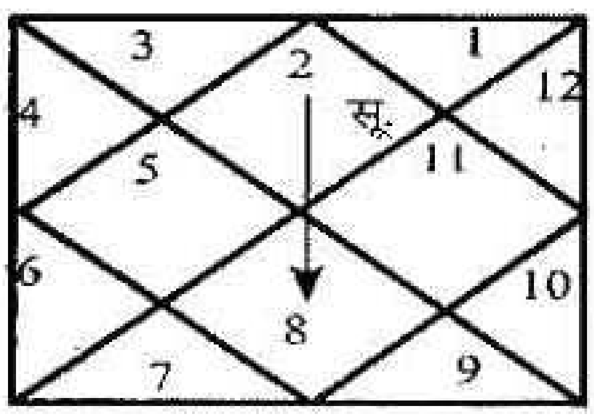

वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। वृष राशि में सूर्य लग्नेश शुक्र के घर में शत्रु क्षेत्री होगा। सूर्य की दृष्टि यहां सप्तम भाव में वृश्चिक राशि पर होगी। यहां सूर्य अपनी राशि में दशम स्थान पर होने के कारण दिग्बली है। ऐसे जातक की मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और राजनैतिक प्रतिभा विलक्षण होती है। जातक भाग्यवान एवं धनवान होगा।

निशानी–राजा या ऊंचे अफसर की तरह जीवन जीना पसन्द करेगा। जातक का जन्म सूर्योदय के समय होगा।

दशा–सूर्य की दशा सुख एवं ऐश्वर्य में वृद्धि करेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। प्रथम स्थान पर वृष राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। लग्न में बुध स्वगृहाभिलाषी होगा तथा दोनों ग्रहों की दृष्टि सप्तम भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। जातक की पत्नी पढ़ी लिखी एवं धनवान होगी। जातक को जीवन में सभी प्रकार के सुख-संसाधनों की प्राप्ति स्वयं के पुरुषार्थ से होगी।
2. **सूर्य + शुक्र**–लग्नेश व सुखेश की युति जातक के जीवन में सुख और वैभव की वर्षा करेगी।
3. **सूर्य + मंगल**–की युति से चोट, दुर्घटना, रक्तसुख का भय बना रहेगा।

4. **सूर्य + बृहस्पति**–यहां वस्तुत सुखेश सूर्य की अष्टमेश व लाभेश बृहस्पति के साथ लग्न स्थान में युति जातक को मिश्रित फल देगी। जातक पुत्रवान होगा। गृहस्थ सुख में बढ़ोत्तरी होगी। जातक का भाग्योदय धार्मिक कार्य के माध्यम से होगा।
5. **सूर्य + शनि**–की युति सफलतादायक है पर बौद्धिक विकास में बाधक है।
6. **सूर्य + चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठाकृष्ण अमावस्या को प्रात: काल सूर्योदय के समय होगा। जातक चन्द्रकृत राजयोग के कारण समस्त सुखों को प्राप्त करेगा।
7. **सूर्य + राहु**–सूर्य राहु की युति शुभ नहीं है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में

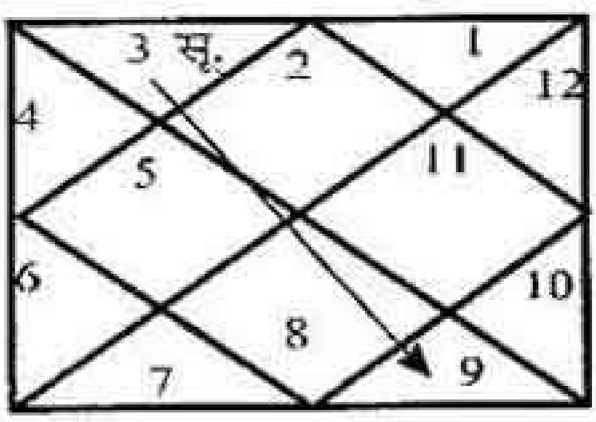

वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। सूर्य यहां मिथुन राशि में बैठकर अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। सूर्य यहां अपनी राशि से एकादश स्थान में होकर मित्र के घर का है। सूर्य की यह स्थिति, धन, पद, प्रतिष्ठा अच्छी शिक्षा, अच्छे स्वास्थ्य, व अच्छे व्यवसाय की प्रतीक है।

निशानी–ऐसा जातक अपने भुजा बल पर भरोसा करने वाला, स्वयं के हाथों से काम करने वाला, हुनर का जानकार एवं सारे परिवार को पालने वाला होता है। जन्म सूर्योदय के पूर्व ब्रह्ममुहूर्त 5.00 बजे के लगभग होगा।

दशा–सूर्य की दशा शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बंन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। द्वितीय स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ सार्थक युति है। यह युति यहां खिलती है बुध यहां स्वगृही होगा। फलत: जातक धनवान होगा। बलवान धनेश की चतुर्थेश से युति होने के कारण जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक को विद्याबल में रुपया मिलेगा। अष्टम भाव पर दोनों ग्रहों की दृष्टि होने से आयु लम्बी होगी। जातक को सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य व संसाधनों की प्राप्ति होती रहेगी।
2. **सूर्य + चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रात: सूर्योदय के पहले 4-5 बजे के लगभग होगा। सुखेश व तृतीयेश की युति उत्तम वाहन,

उत्तम भवन सुख में सहायक है।

3. **सूर्य + मंगल**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, खर्चेश मंगल की युति धन स्थान में ज्यादा ठीक नहीं। जातक का धन कपूर की तरह उड़ता रहेगा।
4. **सूर्य + बृहस्पति**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश लाभेश बृहस्पति की युति धन स्थान में ज्यादा शुभ नहीं है। जातक अटक-अटक कर बोलेगा व उसकी वाणी धार्मिक होगी।
5. **सूर्य + शुक्र**–सुखेश सूर्य की लग्नेश शुक्र के स्थान धन स्थान में युति शुभ है। जातक अपने पुरुषार्थ मे यथेष्ट धन कमायेगा परन्तु परस्पर शत्रु ग्रहों की युति के कारण धन प्राप्ति को लेकर संघर्ष की स्थिति रहेगी।
6. **सूर्य + शनि**–सुखेश सूर्य के साथ भाग्येश, दशमेश शनि का धन स्थान में बैठना शुभ है। भाग्य प्रबल रहेगा परन्तु शनि सूर्य की परस्पर शत्रुता के कारण पिता के गुजरने के बाद ही जातक भाग्यशाली होगा।
7. **सूर्य + राहु**–राहु सूर्य के तेज को समाप्त कर देगा परन्तु मिथुन राशि में राहु स्वगृही होने से इतना नुकसान दायक नहीं है। धन के मामले को लेकर जातक को काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में

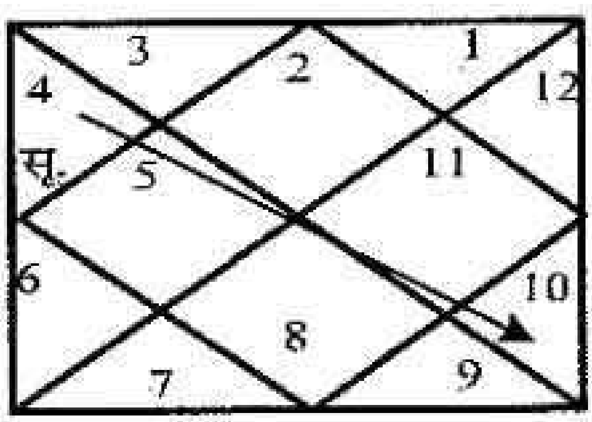

वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। सूर्य यहां कर्क राशि में बैठकर नवम स्थान (भाग्य भावन) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। इस भाव में सूर्य अपनी राशि से द्वादश स्थान कर्क राशि में है। चतुर्थेश की यह स्थिति मिश्रित फलदायक है। ऐसा जातक आप कमाकर खाने वाला, धन का राजा एवं खूबसूरती का मालिक होगा।

निशानी–मानसागरी के अनुसार तृतीयस्थ सूर्य बड़े भाई का नाश करता है। जातक का जन्म सूर्योदय के पूर्व तीन बजे के लगभग होगा।

दशा–सूर्य की दशा पराक्रम बढ़ायेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। तृतीय स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध

के साथ युति है। बुध यहां शत्रु क्षेत्री होगा। यहां दोनों ग्रह भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगा। उसे इष्ट+मित्रों एवं कुटुंबी जनों से सहायता मिलती रहेगी। जातक भाग्यशाली होगा। जीवन में सभी प्रकार की सफलताएं इस योग के कारण प्राप्त होंगी। योग घटित होने का समय: यह योग सूर्य व बुध की दशा में घटित होगा। सूर्य की दशा अच्छी जायेगी।

2. **सूर्य + चन्द्र**–इस युति के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व तीन बजे के लगभग होता है। चंद्रमा बलहीन हो जायेगा तथा अपना फल न देकर सूर्य का फल देगा।
3. **सूर्य + बृहस्पति**–यहां वस्तुतः सुखेश सूर्य की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति के साथ युति तृतीय स्थान में होगी। बृहस्पति यहां उच्च का होकर मातृ-सुख एवं मित्रों की संख्या बढ़ायेगा।
4. **सूर्य + शुक्र**–लग्नेश शुक्र की युति सुखेश सूर्य के साथ तृतीय भाव में होने से जातक परिजनों का सहायक होगा। मित्रों का सच्चा मित्र होगा। उसे भाई-बहन दोनों का सुख प्राप्त होगा। जातक पराक्रमी होगा।
5. **सूर्य + शनि**–सुखेश सूर्य की भाग्येश, दशमेश के साथ तृतीय स्थान में युति शुभ है परन्तु दोनों परस्पर शत्रु ग्रह होने के कारण परिजनों से प्रेम नहीं रहेगा। जातक को बड़े भाई व छोटे भाई का सुख नहीं रहेगा।
6. **सूर्य + मंगल**–यहां सुखेश सूर्य की युति सप्तमेश, खर्चेश मंगल के साथ कष्ट कारक है। जातक को चोट, दुर्घटना, रक्त स्राव का भय रहेगा। जातक आप अकेला भाई न होगा। तीन भाईयों का योग बनता है।
7. सूर्य + राहु–राहु सूर्य का तेज़ समाप्त करता है उसके शुभ फलों को तोड़ता है। फलतः जातक के परिजन, मित्र ही जातक के शत्रु होंगे।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में

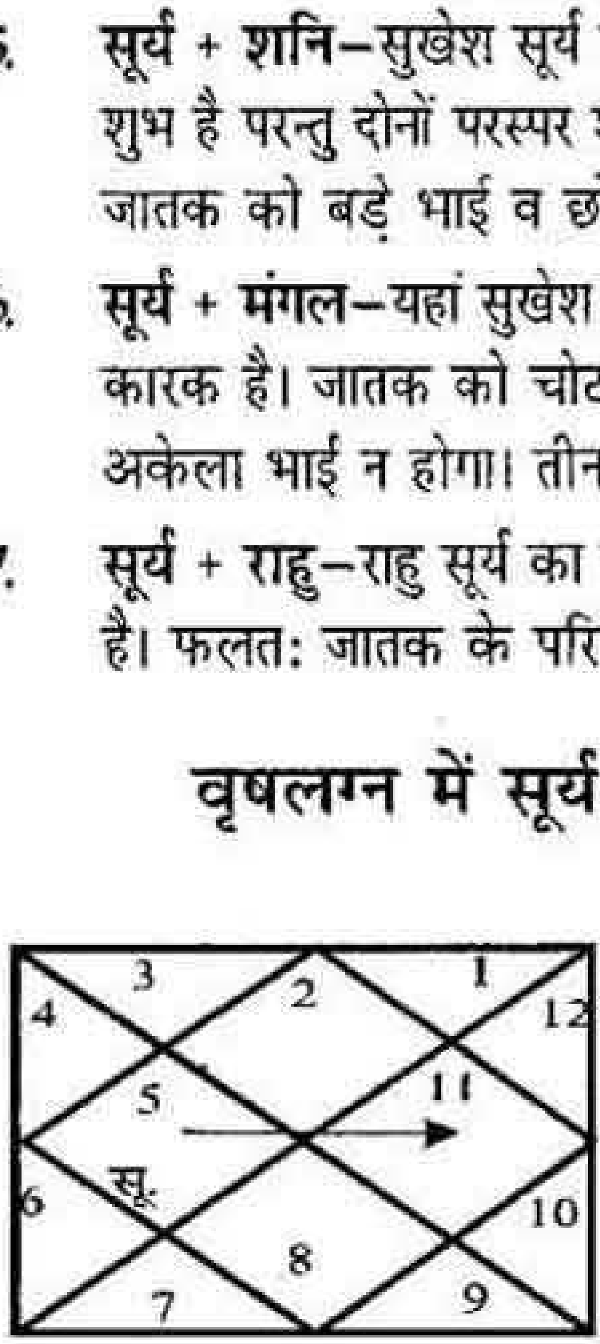

वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। यद्यपि सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है तथापि यहां स्वगृही एवं केन्द्रस्थ होकर सम्पूर्ण रुप से शक्तिशाली है। सूर्य यहां 'रविकृत राजयोग' बनाता हुआ दशम भाव (कुम्भ राशि) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

ऐसा जातक रिपुहन्ता, परम उत्साही, तेजस्वी, गम्भीर स्वभाव वाला, धन व ऐश्वर्य से परिपूर्ण जातक होता है। जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलती है एवं वह उच्च राज्यधिकारी होता है अथवा उच्च राज्याधिकारी में मेल रखता है।

निशानी–सरकारी काम व ठेकों में लाभ, राजदरबार में सिक्का रहेगा। यात्रा में मोती निपजेंगे। स्वर्ण (ज्वेलरी शो-रूम), धातु के कार्यों में लाभ होगा।

दशा–सूर्य की महादशा, अन्तर्दशा में जातक के बिगड़े कार्य सुधरेंगे। जातक के सुख व ऐश्वर्य में वृद्धि होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। चतुर्थ स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुत: सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां स्वगृही होगा। यहां दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होने से बलवान होकर 'कुलदीपक योग' एवं रविकृत राजयोग बनायेंगे। यहां बैठे दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव पर होगी। फलत: जातक बुद्धिमान, धनवान होगा। जातक माता-पिता की सम्पत्ति का वारिस होगा व कुल का नाम रोशन करेगा। नौकरी या व्यापार जो भी होगा, उत्तम श्रेणी का होगा।
2. **सूर्य + चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को ठीक मध्यरात्रि में होता है। जातक का जन्म माता-पिता के लिए कष्ट दायक होता है। जातक के परिजन ही जातक से द्वेष रखेंगे।
3. **सूर्य + मंगल**–सुखेश सूर्य की सप्तमेश व खर्चेश मंगल के साथ युति ज्यादा दु:खद नहीं है। क्योंकि यह वाहन दुर्घटना का संकेत देता हैं फिर भी रविकृत राजयोग के कारण जातक अति साहसी व पराक्रमी होगा तथा शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा।
4. **सूर्य + बृहस्पति**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति की युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक ऋण, रोग एवं शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–लग्नेश शुक्र की युति सुखेश सूर्य के साथ होने से जातक को उत्तम वाहन सुख मिलेगा। जातक कुल का नाम रोशन करेगा परन्तु दोनों परस्पर शत्रु ग्रह की युति माता को बीमार करेगी। वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा।
6. **सूर्य + शनि**–सुखेश सूर्य की भाग्येश, दशमेश शनि के साथ युति वैसे तो सौभाग्यर्धक है क्योंकि शनि यहां परमराजयोग कारक है परन्तु शनि सूर्य का

कट्टर शत्रु है। सूर्य में अस्त है अत यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। पिता की मृत्यु के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

7. **सूर्य + राहु**–राहु सूर्य के तेज को नष्ट करने वाला ग्रह है। सूर्य के साथ इसकी युति माता-पिता के सुख में न्यूनता लाती है। ऐसा जातक उद्दण्ड होता है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में

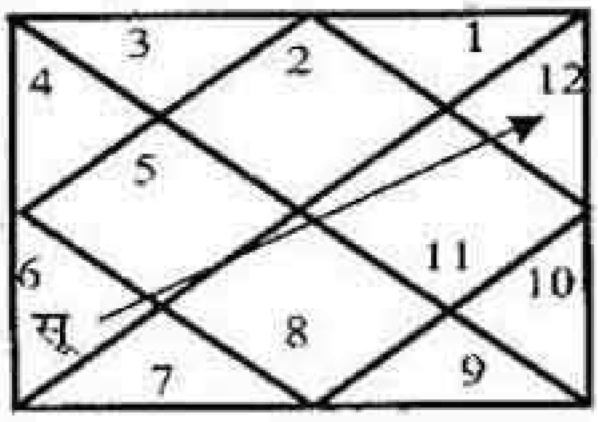

वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहां कन्या राशि में स्थित होकर लाभ भवन (मीन राशि) को सम्पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। इस भाव में सूर्य अपनी राशि में द्वितीय स्थान (त्रिकोण) में है। केन्द्र व त्रिकोण का लाभदायक संगम है।

ऐसा जातक विद्वान, दार्शनिक, श्रेष्ठ लेखक, श्रेष्ठ वक्ता, ज्योतिष व अध्यात्म शास्त्र का जानकार होगा।

निशानी–औलाद के पैदा होने के दिन से जातक की तरक्की होगी।

उपाय–यदि जातक अपने मकान की पूर्वी दीवार में रसोई बनाए तो सूर्य तत्काल उत्तम फल देगा।

दशा–सूर्य की दशा बहुत अच्छा फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। पंचम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। बुध यहां उच्च का होगा। बलवान धनेश व चतुर्थेश की युति-'मातृमूल धनयोग' की सृष्टि करती है। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक की सन्तति उत्तम होगी तथा जातक की आज्ञा में रहेगी। जातक को जीवन में सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य व संसाधनों की प्राप्ति होती रहेगी। यह युति जातक को आगे बढ़ाने में बड़ी सहायक होगी।

2. **सूर्य + चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म आश्विन कृष्ण को रात्रि दस बजे के आस पास होता है। जातक की सन्तति या भाई का विकलांग होने को खतरा बना रहता है।

3. **सूर्य + शुक्र**–सुखेश सूर्य की लग्नेश से युति त्रिकोण में शुभ है परन्तु शुक्र

नीच का है। शत्रु ग्रह के साथ है, षष्टेश है तथा जातक के सन्तान सुख में बाधक है। जातक की सन्तति की विद्या में रुकावट आयेगी।

4. **सूर्य + शनि**–सुखेश सूर्य की नवमेश, दशमेश शनि के साथ त्रिकोण स्थान में युति शुभ है परन्तु सूर्य नीचाभिलाषी है एवं शत्रु ग्रह के साथ होने से क्षुब्ध है। फलत: जातक विद्याध्ययन में संघर्ष रहेगा।

5. **सुर्य + मंगल**–सुखेश सूर्य की सप्तमेश, खर्चेश मंगल के साथ युति ठीक नहीं। जातक के गर्भपात होगा। परन्तु पुत्र सन्तति अवश्य होगी।

6. **सूर्य + बृहस्पति**–सुखेश सूर्य की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति के साथ युति ज्यादा सार्थक नहीं है। क्योंकि बृहस्पति मुख्य मारकेश है। जातक सन्तति का गर्भपात होगा। एकाध की अकाल मृत्यु होगी।

7. **सूर्य** + राहु–राहु सूर्य के तेज को नष्ट करता है पर कन्या का राहु मित्र के घर में है कन्या सन्तति तो देगी परन्तु पुत्र सन्तति में बाधक है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति षष्ट्म स्थान में

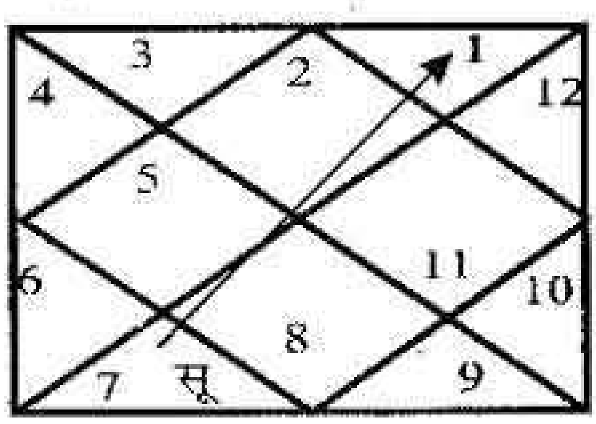

वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहां सूर्य तुला राशिगत नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट कर रहा है। सूर्य की दृष्टि द्वादश भाव मेष राशि पर है। इस भाव पर सूर्य अपनी राशि से तृतीय स्थान पर नीच राशि तुला पर सवार है। जिसके दस अंशों तक यह परम नीच का होकर भूमि-घर, जमीन-जायदाद, व पैतृक सम्पत्ति विषय में परेशानी पैदा करेगा एवं माता-पिता का अल्प सुख देता है।

सुखभंग योग–सुखेश सूर्य के छठे स्थान पर जाने से यह योग बना है। फलत: यह स्थिति परम्परागत सुखों में न्यूनता लाती है तथा जातक के आत्मविश्वास में कमी आती है। यह योग सरकारी नौकरी में बाधक है।

निशानी–जातक का जन्म ननिहाल या पैतृक घर से बाहर होगा। प्रारम्भिक कष्ट सहने के बाद अन्तत: रोग, ऋण, और शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। जातक बेफ्रिक पर आग की तरह जल्दी गर्म हो जाने वाले स्वभाव का होता है।

उपाय–1. जातक को प्रतिदिन आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। 2. 01सूर्य को अर्घ्य देते रहना चाहिए। 3. प्रात: काल सूर्योदय के समय उठने की आदत डालनी चाहिए।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। षष्ट्म स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुत: सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां नीच राशिगत है। यहां छठे जाने से 'सुखभंग योग' एवं बुध छठे से 'धनहीन योग' व 'सन्तति हीन योग' की सृष्टि होती है। फलत: यहां इस स्थान में यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है। यहां बैठे दोनों ग्रहों की दृष्टि व्यय भाव पर रहेगी। फलत: जातक बुद्धिमान होगा। रोग व शत्रुओं का शमन करने में सक्षम होगा परन्तु संघर्ष होगा। इस योग के कारण अन्तिम सफलता संघर्ष के बाद, सुख-सफलता जातक को अवश्य मिलेगी।
2. **सूर्य + शुक्र**–सूर्य नीच का एवं शुक्र स्वग्रही होने मे **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि हुई। षष्टेश के छठे स्थान में होने से **'हर्ष योग'** भी बना। यह युति रोग व शत्रुओं का नाश करने के लिए शुभ है।
3. **सूर्य + शनि**–सूर्य नीच का एवं शनि उच्च का होने में **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि हुई। यह योग सरकारी नौकरी में बाधक है। पिता की मृत्यु के बाद जातक का भाग्योदय होगा क्योंकि भाग्येश शनि सूर्य से अस्त है।
4. **सूर्य + चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की रात्रि को आठ बजे के आस पास होता है। जातक के माता-पिता को लकवा (स्थाई) बीमारी होने का भय रहता है।
5. **सूर्य + बृहस्पति**–अष्टमेश व लाभेश बृहस्पति का सूर्य के साथ छठे जाना शुभ नहीं परन्तु अष्टमेश के छठे जाने से 'सरल योग' बना फलत: बृहस्पति का अशुभत्व नष्ट हो गया। जातक के पैर में चोट पहुंचेगी पर जातक बच जायेगा।
6. **सूर्य + मंगल**–खर्चेश, सप्तमेश मंगल का छठे जाने से 'विमल योग' बना। जातक का ससुराल या पत्नी से विवाद हो सकता है, कहीं दुर्घटना भी हो सकती है पर 'विमल योग' के कारण अप्रिय घटना घटित नहीं होगी।
7. **सूर्य + राहु**–राहु सूर्य के तेज को नष्ट करता है। परन्तु शास्त्रकारों ने छठे राहु को योगकारक माना है राहु मित्र राशि में भी है अत: जातक पराक्रमी होगा पर सोच में नकारात्मक रहेगा।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में

वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहां सूर्य केन्द्रवर्ती है। मंगल की राशि वृश्चिक में बैठकर लग्न स्थान

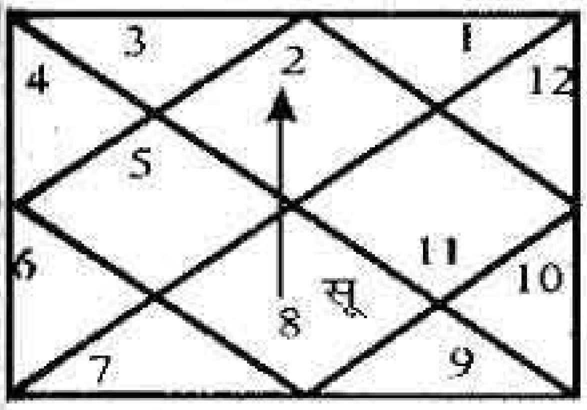

(प्रथम भाव) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। सूर्य यहां तुला राशि से बाहर निकलने के कारण आरोही (चढ़ने वाली) अवस्था में है। सूर्य यहां जल राशि में है। फलतः जातक उग्र व उष्ण स्वभाव का न होकर शांत व सौम्य स्वभाव का होगा। जातक गंभीर, दार्शनिक, जिज्ञासु एवं अन्वेषाणात्मक स्वभाव का होता है तथा जातक अपने स्वयं के विचारों, सोच व परिश्रम से आगे बढ़ता है।

दशा–सूर्य की दशा में जातक की तरक्की होगी।

निशानी–ऐसा जातक सुनता सबकी है, पर करता अपने मन की है।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। सातवें भाव में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहां दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होकर लग्न को देखेंगे। फलतः कुलदीपक बनेगा। ऐसे जातक बुद्धिमान होगा। बुद्धि के चातुर्य व वाकचातुर्य से शीघ्र उन्नति को प्राप्त करेगा। विवाह जीवन में उन्नति के मार्ग खोलेगा। जातक को सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य संसाधनों की प्राप्ति सहज में होगी।
2. **सूर्य + मंगल**–पत्नी से विचार धारा न मिले। पत्नी उग्र स्वभाव की होगी। यदि राहु साथ में हो तो पत्नी से तलाक हो सकता है।
3. **सूर्य + शुक्र**–लग्नेश शुक्र के लग्न को देखने से '**लग्नाधिपति योग**' बनेगा। जातक को मेहनत का फल मिलेगा। सुखेश+लग्नेश की युति पिता एवं वाहन के लिए ठीक है।
4. **सूर्य + चन्द्र**–पत्नी से विचार धारा न मिले। जीवन साथी षड्यन्त्रकारी होगा। यदि सप्तम भाव राहु या शनि के प्रभाव में हो तो जीवन साथी की मृत्यु होगी। ऐसे जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को सायं काल सूर्यास्त के समय होगा। जातक स्वयं विकलांग हो सकता है।
5. **सूर्य + शनि**–सुखेश एवं भाग्येश, दशमेश शनि की युति केन्द्र में होना सौभाग्यवर्धक है। जातक का भाग्योदय 32 वें वर्ष में होगा। परस्पर शुभ ग्रहों की युति के कारण जातक का सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
6. **सूर्य + बृहस्पति**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति केन्द्रवर्ती अपने घर (मीन राशि) एवं उच्च राशि (कर्क) को देखेगा। बृहस्पति यहां